

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अस्तित्व भारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत प्राकृत अपभ्रंश राजस्थानी हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविध साहित्यप्रकाशनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

प्रकाश सम्पादक

पद्मश्री कितविक्रम मुनि पुरातनशास्त्रार्थ

[फ्रान्सेरि भेम्बर फॉन्ट जर्मन ओरिएण्टल सोसाइटी जर्मनी]

सम्पाद्य सचिव

भाण्डारकर प्राच्यविद्या संशोधन मन्दिर, पूणा, गुजरात साहित्य-सभा अहमदाबाद
विश्वेश्वररामन्त्र वैदिक सोम-संस्थान होशियारपुर निवृत्त सम्पाद्य निर्यामक-
(फ्रान्सेरि डायरेक्टर) भारतीय विद्यामन्त्र बम्बई ।

ग्रन्थाङ्क ५५

स्वर्गीय पुरोहित हरिमारायणजी, बी ए -

विद्याभूषण-ग्रन्थ-संग्रह-सूची

६

प्रकाशक

राजस्थान राज्यशास्त्रालय

संस्कारक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

स्वर्गोप पुरोहित हरिनारायणजी, बी ए -

विद्याभूषण - ग्रन्थ - संग्रह - सूची

सम्पादक

श्री गोपालनारायण धट्टरा एम ए

श्रीर

श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी बी.लिट

प्रकाशनकर्ता

राजस्थान राज्याङ्गलुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

बोधपुर (राजस्थान)

विद्यमान २ १८
प्रथमावृत्ति १००

भारतराष्ट्रीय दशकाब्द १८८३

ख्रिस्ताब्द १९६१
मूल्य ६२२

मुद्रक-इन्द्रिप्रसाद पारीक छापना प्रेस बोधपुर.

RAJASTHAN PURATANA GRANTHAMALA

PUBLISHED BY THE GOVERNMENT OF RAJASTHAN

A series devoted to the Publication of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa,
Old Rajasthani-Gujarati and Old Hindi works pertaining to
India in general and Rajasthan in particular

★

GENERAL EDITOR

PADMASHREE JINA VIJAYA MUNI PURATATTVACHARYA

Honorary Member of the German Oriental Society Germany Bhandarkar
Oriental Research Institute, Poona, Vishveshvarananda Vaidic
Research Institute, Hoshiarpur Punjab Gujrat Sahitya
Sabha, Ahmedabad, Retired Honorary Director
Bharatiya Vidya Bhawan, Bombay General
Editor Gujrat Puratattva Mandira
Granthavali Bharatiya Vidya
Series; Singhji Jala Series
etc. etc.

★ ★

No 55

A CATALOGUE OF

LATE PUROHIT HARINARAYAN B. A. -

VIDYABHOOSHAN MANUSCRIPTS COLLECTION

★ ★ ★

Published

Under the Order of the Government of Rajasthan

By

The Director Rajasthan Prachya Vidya Pratisthann
(Rajasthan Oriental Research Institute)
JODHPUR (RAJASTHAN)

A CATALOGUE OF
LATE PUROHIT HARINARAYAN B.A. -
VIDYABHOOSHAN MANUSCRIPTS
COLLECTION

*

Edited By
Shri Gopal Narayan Bahure, M. A.
‡
Shri Lakshmi Narayan Goswami Dikshit

*

Published under the orders of the Government of Rajasthan

By
RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE
JODHPUR (Rajasthan)

V.S 2018]

[1961 A.D

विषय तासिका

विषय	पृष्ठ संख्या
साम्प्रदायिकीय वस्तुस्थिति	
एक पुरोहित श्री हरिनारायणजी विद्याभूषण का जीवन-वृत्त	१-८
विद्याभूषण-कव्य-संग्रह-बुकी	१-११२
परिशिष्ट १-हरीनारायणजीकृतिका	१-२६
२-कवि नामाभूषणिका	२६-३३

जयपुरनिवासी विभूतकीर्ति शोधविद्वान् स्वर्गीय पुरोहित श्रीहरि नारायणजी विद्याभूषण द्वारा सगृहीत विद्याभूषण ग्रन्थ-संग्रह की सूचीको इस विभागके द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है। श्रीविद्याभूषणजीने अपने जीवनकालमें अदम्य उत्साह एवं सलग्नतासे अमूल्य ग्रन्थरत्नोंका संग्रह किया था जो पुरातत्त्वविज्ञानियोंके लिए उपादेय है। इस संग्रहको श्रीविद्याभूषणजीके दिवंगत होने पर उनकी अक्षय कीर्तिकामना रखते हुए श्रियुक्त रामगोपालजी पुराहित बी ए, एल-एल बी (श्रीविद्याभूषणजीके आत्मज)ने किसी ऐसी संस्थाको दाना संकल्पित किया जहाँ निरन्तर इसका उपयोग भावी शोधकारा द्वारा किया जा सके। इसी उद्देश्यसे प्रेरित वह एक दिन हमारे कार्यालय (पुरातत्त्व मन्दिर जयपुर)में उपस्थित हुए। यहाँकी प्राचीन ग्रन्थोंकी सुरक्षा सम्पादन एवं प्रकाशन सम्बन्धिनी व्यवस्थासे प्रभावित हो कर उन्होंने अनुभव किया कि विद्याभूषण-ग्रन्थ-संग्रहका सही उपयोग इसी प्रतिष्ठान द्वारा भसी प्रकार किया जा सकेगा। इसके तुरन्त बाद ही 'धुमस्य दीध्रम' को चरितार्थ करते हुए उन्होंने उक्त संग्रह इस कार्यालयमें भिजवा दिया और दिनांक २१ २ १९५७को एक पत्र मुझे लिख कर सूचित किया कि मेरे स्वर्गीय पितृचरणका कायक्षेत्र जयपुर ही रहा है और सौभाग्यसे अब यहीं पर पुरातत्त्व मन्दिर जैसी शोधसंस्था कार्य कर रही है अतएव मेरी उत्कट अभिभाषा है कि आप उनके विद्याभूषण ग्रन्थ-संग्रहको एक उप संग्रहक समान अपने ही विभागमें सुरक्षित रख लें ताकि स्वर्गीय विद्याभूषणजीका यश शरीर शोधविद्वानोंके अधिकाधिक काम आ सके।

इस सम्बन्धमें राजस्थान सरकारको विधिवत् स्वीकृतिक लिए लिखा गया और आदेश नं० डी १००६७ एफ ६ (२) एण्यू बी ५१ दिनांक १६ जुलाई १९६० द्वारा सरकारने उक्त संग्रहको इस विभागके अधिकारमें लेना स्वीकृत कर लिया। यह भी निश्चय किया गया कि

प्रस्तुत विद्याभूषण-ग्रन्थ-संग्रह जयपुरमें ही प्रतिष्ठानके शाखा कार्यालयमें सुरक्षित रखा जायगा एवं भविष्यमें इस प्रकार मॅटस्वरूप प्राप्त होने वाले अन्य उपादेय संग्रहोंको भी मधयवाद स्वीकार किया जायेगा ।

इस प्रकार उक्त संग्रह प्रतिष्ठानके अधिकारमें ले लिया गया ।

स्वर्गीय पुरोहितजीने विद्याभूषणग्रन्थसंग्रहके नामसे प्रस्तुत संग्रहकी प्रायः दो सहस्रनामान्वित सूची तैयारकी थी जिसे हमने उसी रूपमें प्रकाशित किया है । आवश्यक स्थानों पर टिप्पणी एवं परिशिष्टमें कृति और बतू नामानुक्रमणिका तथा स्वर्गीय विद्याभूषणजीका संक्षिप्त जीवनवृत्त दे कर सम्पादकोंने इसे अधिक उपान्य बना दिया है । स्वर्गीय विद्याभूषणजीने प्रस्तुत संग्रहके अनेक ग्रन्थोंमें यथास्थान स्वहस्ताक्षरोंसे आवश्यक फुट नोट लिखे हैं जिससे वे प्रकरण अधिक प्राञ्जल हो उठे हैं ।

प्रस्तुत सूचीके प्रकाशन-व्यय का अर्द्धांश भारत सरकारके दानानिक और सांस्कृतिक मन्त्रालय द्वारा आधुनिक भारतीय भाषा विकास योजनाक अन्तर्गत प्रदान किया गया है । एतद्वय प्रतिष्ठानकी ओरसे हम आभार प्रदर्शित करते हैं ।

इस प्रकार स्वर्गीय विद्याभूषणजीके ग्रन्थसंग्रहकी यह सूची सम्पादित की जा कर पाठकोंके समक्ष उपस्थित की जा रही है । आशा है यह सूची विषयके शाता और अध्येताओंके लिये बहुत उपयोगी सिद्ध होगी ।

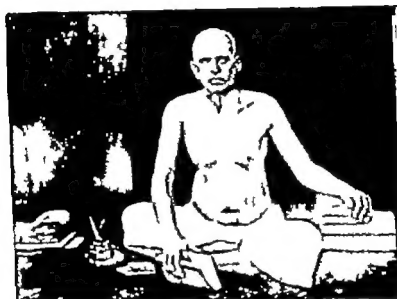
मुनि जिनविजय

द्वितीयांश नं २ १०

अनेकान्त बिहार ग्रन्थालय

सम्पादक सम्पादक

राजस्थान प्राध्यापिका प्रतिष्ठान जोधपुर



वसुदेव पुरोहित श्री हरिहरदासजी बट्टाभूषण

जन्म-माघ कृ ४ १९३१ वि ।। निधन-माघ २ (श्रावण) १९८० २ २ वि

स्वर्गीय विद्याभूषण पुरोहित श्रीहरिनारायणजीका सक्षिप्त जीवन-वृत्त'

शुभ मिति माघ कृष्णा चतुर्थी रविवार विक्रम संवत् १९२१ के पवित्र प्रभातमें उषाकी साधप्यप्रभाके अष्टमसे जयपुरके राज्यप्रतिष्ठित पारीककुल पूजन विद्याभूषण श्रीहरिनारायणजी पुरोहितका अवतरण हुआ। राजस्थानके साहित्याकाशमें यह सूर्य निरन्तर एकाशीतिवर्षपर्यन्त प्रभा विकीर्ण कर साहित्य साधनाके सत्सङ्गी वाक्चाप घनाता रहा। स्वर्गीय विद्याभूषणजीके कम जीवन और मृत्यु तीनों ही अपनी उज्ज्वल भूमिकामें अप्रतिम रहे। उनकी ज्ञानप्रमाने इतिहास और मन्त-साहित्यकी प्रतिनिधाके गहन आवरणोंको चीर कर प्रामाणिकताका अक्षय भालोक प्रदान किया। वे व्यक्ति जिन्हें उनको देखनेका सौभाग्यलाभ हुआ है सदैव उन्हें स्मरण करते रहेंगे और वे भी जो उनकी अक्षरसम्बद्धकीर्तिके अवगाहक हैं उनके पार्श्व प्रमायकी क्वाट नहीं मिटा पाएंगे।

स्वर्गीय विद्याभूषणजीके शिक्षाकाशमें अग्रजीविशेषज्ञ अगुलिपरिमेय ही थे और उनमें भी इनका नाम सम्मानके साथ लिया जाता था। एफ ए० और बी ए परीक्षाओंमें उन्होंने सर्वाधिक योग्यताके परिणामस्वरूप 'सार्ज नार्ज बक' पदक एवं कासेजके सर्वोत्तम चरित्रवान् तथा मेधावी छात्र होनेके फल स्वरूप 'सार्ज सेंट डाउन' पदक प्राप्त किये। शिक्षा-समाप्तिके पश्चात् वि० संवत् १९४८से जयपुरराज्यकी सेवा अगोकार कर उन्होंने निरन्तर बीसोस वर्ष पर्यन्त विभिन्न प्रशासनिक उच्च पदों पर कार्य किया। इस अन्तरमें यह नाजिम सी आई डी इंस्पेक्टर मोहतामिम जनानी डायोड़ी एवं चैरिटी सुपरिटेण्डेंटके पदों पर कुशलतापूर्वक प्रतिष्ठित रहे। राजकीय कार्यरत रहते हुए उन्हें घोसा वाटी और तोरावाटीमें (सत्कामीन जयपुरराज्यके अधीनस्थ सीकर एवम् सडेला प्रभृति ठिकानोंके प्रदेश) रहनेका अवसर प्राप्त हुआ जहां उन्होंने अनेक गो-शाभाओं और पाठशालाओंकी स्थापना की।

१ जयपुरसे प्रकाशित दिसम्बर जनवरी सन् १९४१ ४६के पारीक मासिक पत्रके 'विद्या भूषण विरोधात्' एक स्वर्गीय विद्याभूषणजीके आत्मक धीयुक्त रामगोपालजी पुरोहित की ए एन-एन.बी के मौखिक वक्तव्योंके आधार पर लिखित।—(स')

शिक्षाकी ओर उनका अगाध अनुराग था। स्वयं तो वह बाजी-मन्दिरकी देहली पर यादगजीवन साधनामें प्रसून समर्पित करते ही रहे औरोंको भी इसके लिए प्रेरणा और उत्साह प्रदान करते रहना उनका सहज स्वभाव था। पारीक हार्नूम (वर्तमान कालेज) को एक साथ सात सहस्र रुपयोंका दान देकर उनकी आधार शिक्षाको सुदृढ़ बनानेमें विद्याभूषणजीका सहयोग भ्रमणी रहा है।

साहित्यसेवाकी ओर उनका प्रबल आकर्षण छात्रावस्थासे ही था जो स्नातकोत्तर अवस्थामें पहुँच कर इतना उत्कण्ठ हो उठा कि उनके सम्पर्कमें जन साहित्य और विद्याभूषणजीमें तादात्म्यदर्शन करने लगे थे। इस प्रकारके साहित्याकर्षणके मूल स्रोतका परिचय देते हुए स्वयं विद्याभूषणजीने सुन्दरप्रभावश्रीकी सम्पादकीय भूमिकामें व्यक्त किया है कि हमारे स्वर्गीय पूज्य पिताजी जो मापासाहित्यके प्रेमी और मर्मज्ञ थे और भिन्नकी धर्म और ज्ञानमें बड़ी थोड़ा भी सुन्दरविश्वस सुन्दरवासकृत सर्वथा संवत् १२३३का सीधो प्रस का छपा बड़े आनन्दसे पढ़ा करते। स्वामी गोपालदासजी भी जो हमारे पिताजी के सत्संगी थे हमको सुन्दरस्वामीकी रचनाओं में से यथा मुसा इत उत फिर ताक रही भिन्नकी। बचन बपस माया भई किम की। 'राम हरि राम हरि बोल भूवा' इत्यादि बड़े प्रेम रस और स्वरसे पढ़ कर सुनाते। सब जो भाव हमारे चित्तका होठा वह अकथनीय है। फिर तो हम उक्त ग्रन्थको बड़ी उत्त्थीनतासे पढ़ने लग गये। हमें ऐसा ज्ञान पढ़ता माना हम आनन्दक सरोवरमें गोता लगा रहे हैं। निदान हमारी शक्ति और भक्ति सुन्दरस्वामीके बचनानामृतमें तबसे ही हो गई थी। (सुन्दरग्रन्थावली भूमिका पृष्ठ ३)

स्पष्ट है कि विद्याभूषणजीकी साहित्यप्रविष्टिका सिद्धार उनका सुन्दर दासजीकी रचनाओंके प्रति प्रबल आकर्षण ही था। यह आकर्षण बढ़ता ही गया और सुन्दरदासजीके साथ-साथ सम्पूर्ण सन्तसाहित्यके बहुमूल्य रत्नों पर उनकी वृष्टि निबर हो गई। अधिकसे अधिक समय सन्तसाहित्यमें लगने लगा। जिस प्रकार निमल वर्षणमें प्रतिबिम्ब सक्रान्त होता है उसी प्रकार विद्याभूषणजीकी आत्मा पर सन्तबाणीका वर्णन आनोदित हो उठा। इस आत्मयोगकी स्थितिने स्वयं उस शोधकर्ताको भी सन्तके प्रातिस्विक रूपमें तदाकार बना दिया। उन्हें घुन हुई कि यह साहित्य जो दीमकों उपेक्षाओं अज्ञता और झूझनोंमें प्रवृत्त होता जा रहा है रक्षित होना ही चाहिए। वस्तुतः राजस्थानकी भूमि पर हस्तक्षिप्त प्रज्ञात-ज्ञात ग्रन्थोंके प्रथम उद्धारकके रूपमें विद्याभूषणजीने जो प्रबल प्रयत्न प्रारंभ किया उससे बहुत सा जीर्णोद्धार साहित्य कालकक्षित होते-होते बच गया।

उस समय तक नागरीप्रचारिणी सभा काशी अक्षिप्त भारतीय स्तर पर कार्य करनेका उपक्रम कर रही थी किन्तु व्यापक क्षमता और साधनोंकी वहु

सताने अभावमें वह कार्य संयुक्तप्रान्त तक ही कर पा रही थी। कलकत्ता की रॉयस एशियाटिक सोसायटी कबल संस्कृतग्रंथों पर अपना ध्यान केन्द्रित किये हुए थी। अवधी और ब्रजभाषा में महत्वपूर्ण ग्रन्थोंकी खोजका काम उसर भारत यथासक्य कर रहा था और परिणामस्वरूप इन दोनों भाषाओंका बहुतसा साहित्य प्रकाशमें आता आ रहा था। प्रयत्न नहीं हो रहा था तो वह राजस्थानमें। विद्याभूषणजी इस स्थितिसे चिन्तित हो उठे। उनका हृदय क्रमन् क्रम उठा। परन्तु अकेल किसना करते? तब उन्होंने अपने साहित्यिक मित्र बाला-बन्दाजी वारहठको प्रेरित कर चारणों भाटों राजमहाशयों और जनसामान्यके समीप अस्तव्यस्त रखे हुए उपेक्षाग्रस्त ढिगल और पिगल साहित्यके उद्धार का पुन शक्तिमर प्रयत्न किया। प्रकाशन निमित्त सात सहस्र रुपयोंकी स्थायी निधि नागरीप्रचारिणी सभा काधोमें स्थापित करवायी। राजस्थानी भाषाकी उपलब्धताको साहित्यिकजगतके समक्ष सामनेके लिए वह सदैव उत्कण्ठित रहते थे। इस दिशामें उन्होंने एक बृहद् राजस्थानी कोषके निर्माणको परमावश्यक समझते हुए जोधपुरके श्रीयुत् मीतारामजी लाडसको सन १९३२में उत्प्रेरित किया तथा बहुतसी सदन सामग्री भी प्रदान की। वह कोष अब थो लाडसजीक कृतृत्वमें संपादित होकर प्रकाशित हो रहा है। इसी प्रकार सन्त साहित्यके असम भंडारका प्रकाशन भी उनकी बनावाञ्छित था जिसके लिए उन्होंने उदानीन्तन उदीयमान साहित्यिकोंकी एक समिति बना कर सन्त प्रथमासा की योजना—सस्ता साहित्य मण्डल नई दिल्लीक उत्थावधानमें धामू की थी।

हस्तनिर्मित ग्रंथोंकी प्रत्येकपणा करते रहना उनकी स्विकर कार्य था। किसी प्रयोजनसे कही गये हों वही समय निकाल कर ग्रन्थोंकी खोज वह करते रहते थे। रोमावाटी और तारावाटी जहाँ वह दीपकाल तक राजकीय अधिकारीके रूपमें रहे थे से निरन्तर प्रत्येकपण करने रहत थे। जहाँ कहीं नूतन ग्रंथ मिला उसे मुहमांग दामों पर खरीद कर अपने संग्रहालयकी शोभा बढ़ाते एक शोधकार्यके लिए नवीन उत्साहसे जुट जाते थे। उनकी इस विभूद साहित्यिक अभिरुचिसे उत्प्रेरित होकर बहुतसे विश्वकीन सन्त महान् और सद्युहस्य भी उन्हें अनुपयागार्थ अपनी पनियाँ और गुन्हे दे दिया करते थे। विद्याभूषणजीन ऐसे कृपासू समर्थकोंका उत्सव यथास्थान अपनी सुधीमें किया है। कल्पित ऐसे ग्रंथ जो उन्हें स्थायी संग्रहके लिए नहीं मिल पाते थे उनकी प्रतिनिधिमता वह अपने व्यय से निरन्तर करवात रहत थे। ग्रंथ-सूची में नम प्रकारके अनेक प्रतिनिधिकाओंका उत्सव भूय प्रथम भूय यातक माय प्रकीर्ण है।

ग्रंथप्राप्तिविषयक उनके उत्प्रेरक अनुरागा। वणन करने हुए श्रीयुत् राम गोपासजी पुराहितने एक मममयी भणना सुनाई जो नम प्रकार है —

जयपुरमें जहाँ राजकस “मानसिद्ध हार्दिक” है वहाँ वह एक प्रदत्त बाजार

संगता या जो अब गणगौरी बाजारके जलुष्य पर देखा जा सकता है। इसमें विविध प्रकीर्ण वस्तुएँ विक्रयार्थ आती हैं। पुरोहितजी साहबके दृष्टिपथमें एक हस्तलिखित पुस्तक आई। जितना मूल्य उस विक्रयार्थ सगाया विद्या भूषणजीके पास तत्काल नहीं था। अपरिचित होनेसे विशेषतः सबद नामों पर ही पुस्तक देना स्वीकार किया। विद्याभूषणजीने यहाँ जो परिचय ग्रन्थानुरागका दिया वह अत्यन्त पुर्ण है। उन्होंने अपना धनग्रन्थ उत्तार कर विशेषतः पास न्यासके रूपमें रख दिया और यह कहते हुए ग्रन्थ जारी किया कि अभी धनुष लक्षण वाला व्यक्ति मूल्य लेकर तुम्हारे पास आएगा उसे यह धनग्रन्थ सौदा देना। क्या किसी साहित्य प्रेमीका हृदय साहित्यके लिए इस प्रकार तड़पा है ? यह केवल एक मन्त्रक है उनके उत्कट विद्यानुरागकी।

विद्याभूषणजी द्वारा सम्पादित ग्रन्थोंकी सम्भी सूचीमें^१ धामुर्बंद ज्योतिष इतिहास तथा भगुसन्धान काव्य और सन्तसाहित्य आदि विविध प्रकीर्णक हैं जिन्हें देख कर उनका बहुमुखी पांडित्य सुव्यक्त होता है। जितना उनकी तीक्ष्ण दृष्टि और समर्थ मेखनीकी अकुठ धारासे देखा मिटा गया है वह धागोल्सीड मणिके समान है जिस पर आलोचनाका बध्नीकण्ठप्रहार भी मोघ है।

सन्त-साहित्य और इतिहास विद्याभूषणजीके विशेष प्रिय विषय रहे। इनके लिए उन्होंने आच्छाद भगवद्गीताका अध्ययन किया। विशेषतः सन्तसाहित्यके ग्रन्थोंमें उन्होंने जो आत्मामन्द भगुमव किया उससे यह छके रहते थे। यह लिखते हैं—

जितने ग्रन्थ हमें उपलब्ध हुए हैं उनके अवसाकमसे ज्ञात होता है कि समग्र रचनामसूह एक अटल भगवद्भक्त प्रभुप्रेम और सच्चे गहरे हृदिरसका तरंगमय समुद्र है। उसमें आचोपान्त आस्तरसका समुद्र है जिसकी गम्भीर घीमी अनुद्विग्न लीला-सोत्तरगमालाएँ ममरूपी अहाजकी सुमधुर भक्तिसे भगवद्भक्तपारविन्दोंमें बहाये हुए ले जा रही हैं और यही कारण है कि दादू मीरा मीरा जनगोपाल प्रजनिधि और गरीबनास आदिके कुलम साहित्यपात्रों

१-विश्वविद्यालय २-सतसही ३-गुह्यराम ४-सारासङ्ग सूर्य ५-महाराज मिर्जा राजा बघसिंह ६-महाराज मिर्जा राजा मानसिंह ७-महामति पि सीहरतन - ब्रजनिधिप्रकाशनी ८-गुह्यरामप्रकाशनी ९-गुह्य गोविन्दसिंहके पुत्रीकी बसंभव ११-मीरा कृतप्रकाशनी १२-बघपुरकी बघावसी १३-होलीद्वारा १४-महाराजा सवाई जयसिंह १५-धीनवतशिरोमणीजी १६-बागद्वारा सप्त १७-बावलीसप्त १८-भोगनि-का १९-विजयादित्य और उनके मकरल २०-रायजीय जलपाम २१-गुह्यरीय २२-गुह्यरामप्रकाशनी २३-बाजीरामप्रकाशनी २४-बग गोपामप्रकाशनी २५-मध्यामकामप्रकाशनी २६-भीमबावली सटीक २७-दादूचरित्र संघ २८-पिण्डरसंघोत्पत्ति २९-जीनरवि प्रकाशनी ३०-गिरिजीतसंहिता सटीक ३१-गरीबनासप्रकाशनी ३२-टाकुर पिण्डसिंहजी ३३-महाराज धीरंजके कविता इत्यादि।

निधिका रत्नरश्मियाँ सम्माने हुए वह कौस्तुभमणिसमुत्समित विष्णुके समान विद्युत्के मध्यमें प्रोभायमान रहूँ है। उन्होंने ऐसी धनेक छान्तियोंको निमू स किया जो सन्तसाहित्य और साहित्यकारोंके रचना स्थान वेश बाल एवं प्रदिप्ताक्ष आदिसे सम्बन्ध रखती थीं। मुन्दरग्रन्थावली और व्रजनिधिग्रन्थावलीकी बृहत् साधपूर्ण भूमिकाओंको पढ़ कर विद्याभूषणजीके गम्भीर अनुपासन प्रौढ़ पाण्डित्य और बिलक्षण सामर्थ्यका दुर्गाङ्ग परिचय प्राप्त किया जा सकता है। 'मीरा बहत् पदावली' एवं 'पत्रावली' को राजस्थान प्राच्यविद्या प्रविष्टान जोधपुर द्वारा प्रकाशित करनेका उपक्रम धातू है।

विद्याभूषणजीका इतिहास प्रम प्रसिद्ध था। वह कहा करते थे कि इतिहासमें मिथ्याको स्थान नहीं। ऐसे साहित्यकारके लिए जो मत्स्यसेवाको ही लक्ष्य मानता है इतिहाससे उत्तम वस्तु प्राप्त करना बटिन है। स्वभावतः सत्यसंकी होनेके नाते वह ऐतिहासिक दृष्टिकोणोंको प्रामाणिकताकी दृष्टादृष्ट बमौटी पर कस कर ही मत्स्यके रूपमें स्थिर करते थे। इनके द्वारा लिखित 'कन्नू देवत महाराजा श्रीमिर्जाराजा मानसिंहजी प्रथम' 'मिर्जागंगा अयसिंह' एवं अन्य ऐतिहासिक प्रसंग स्थायी सन्दर्भके रूपमें विद्वानोंके द्वारा मान्य किये गये हैं। इतिहासके विषयमें इनको अधिकारी विद्वान् मान कर ही देशके अन्धाय इतिहासज्ञ उनसे निष्ठापदी करके अपना मार्गदर्शन प्राप्त किया करते थे। जयपुरराज्यकी ओर से देशके प्रसिद्ध इतिहासकार सर मनुनाथ सरकारको राजकीय ऐतिहासिक पुरासत्रोंके सङ्ग्रहके आधार पर जयपुरराज्यका इतिहास सिलसिले लिए आमन्त्रित किया गया था। श्रीमन्कारने किमन ही क्यों तब सकल पुरासत्रोंका अनुशीलन और मनन करनेके पश्चात् मध्यस्थ इतिहासके बहुतसे अध्याय लिखे भी थे। किन्तु किन्हीं कारणोंसे वह अन्तिम रूप नहीं प्राप्त कर सका। जयपुरके वर्तमान महाराजा साहब श्रीमवाई मानसिंहजी पुरोहितजी महाराजका आमन्त्रित कर उक्त अग्रमाप्त कार्यको पूर्ण करनेका अनुरोध किया। स्वर्गीय विद्याभूषणजी उस समय 'मीराबृहत्पदावली' कार्यमें एतन्त भावसे सन्तप्त थे। इसलिए उन्होंने निश्चय किया कि मीरासम्बन्धी कार्यको पूरा करके वह इतिहासके कार्यमें हाथ लगा सकय। परन्तु महाराजा साहबका आग्रह अनुरोध बनता रहा कि मीराके कार्यका स्थगित करके भी इतिहासका पत्र पुरा करें। अन्ततः गत्वा राजसम पुरोहितजीको यह स्वीकार करना पड़ा। मीरासाहित्यसम्बन्धी मामलों को दृष्टादृष्ट बाध कर रग दिया गया और वह इस इतिहासशोधन-सम्पादनके कार्यमें लग गये। उन्होंने सर मनुनाथ सरकार द्वारा निमित्त अध्यायोंको पढ़ा और उनमें आक्षेपक तथ्योंका समावेश प्रामाणिक भूय आगन्तकके आधार पर

सही म्यास्या व बिदलेपण करते हुए किया। परन्तु, इतिहासका यह कार्य भी वह अपने जीवनकालमें पूरा नहीं कर सके और बीच में ही बांसने मध्य व्यवधान डाल दिया।

इससे मीरासम्बन्धी शोधमें जो अपेक्षित पूर्णता उनके हृदयंगम थी एवं जिसको वह सम्भव कर रहे थे वह भी क्षय रह गयी और इतिहासके वे बेष्टन भी विद्याभूषणजीके सुपुत्र श्रीरामगोपालजी पुराहितके कथनानुसार पुनः महाराजा साहित्यको यथावत् प्रस्थापित कर दिये गये।

प्रसिद्ध इतिहासज्ञ महामहोपाध्याय पं० गौरीशंकर हीराचन्द धोत्राने अपने स्मरणमें लिखा है कि विद्याभूषणजी इतिहासके अन्वेषक तार्किक एवं मननशील व्यक्ति थे। इसीलिए मेरा उनका पत्रसम्बन्ध प्रायः होता रहता था। मुगल सम्राटोंकी ओरसे जयपुरनरेशोंकी सवारीके लिए प्रदत्त 'माहीमगतिब'के क्रमोत्सङ्गकी जानकारी प्राप्त करनेके लिए स्व० विद्याभूषणजीसे श्रीधोत्राजीने जो पत्रव्यवहार किया था वह बहुतेसे सम्पुष्ट प्रमाणों और ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित है।

विद्याभूषणजीके महत्त्वपूर्ण पत्रोंका सङ्कलन जिनकी संख्या साढ़े छह सहस्र प्रायः है उनके धारमज श्रीयुगल पं० रामगोपालजी बी ए एस-एस बी के पास है। ये पत्र हिन्दी अंग्रेजी और उर्दू में हैं। हिन्दी पत्रोंकी छत्ती राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर द्वारा करवादी गयी है तथा अन्य पत्रोंका विमर्श करके श्रीरामगोपालजी साहब अपनी रणनावस्थामें भी पूर्ण मनोयोगसे करवा रहे हैं। मीराबृहत्पत्रावलीका विद्याभूषणजीकी अमर देन है। इसमें अद्यावधि अज्ञात मीराके छह सौ पदों का अद्भुत सङ्कलन किया गया है जिनकी ज्ञात साढ़े सौ सौ पदोंके साथ पूर्ण संख्या नौ सौ पचासके लगभग है। मीरासम्बन्धी अज्ञात पदोंका यह उद्धार विष्णुके गजेन्द्रमोलकी अथवा बराहके धरा-उद्धारकी स्मृति दिलाता है। विद्याभूषणजीने देशके कोते कोतेसे पत्रव्यवहार कर मीराके सम्बन्धमें अभूतपूर्व जानकारी प्राप्त की थी। मीराके जितने पद उन्होंने प्राप्त किये उनको माया भाव वाली भोक्तृभूति और परम्परा आदिकी प्रामाणिक कसौटियों पर उन्होंने परखा है और सौ टंघ मुषणको ही मीराबृहत्पत्रावलीमें स्थान दिया है। यद्यपि विद्याभूषणजीके पास समय-समय पर आने वाले विद्वानों और उनके बाद भी पुरोहित श्रीरामगोपालजी से सम्पर्क साधन वाले कतिपय आधुनिक शोधकर्त्ताओंने इस सङ्कलनसे आघातीत साम उठाया है और स्वतन्त्र निबन्धोंकी रचनाके रूपमें प्रकाशित भी करवा दिया है फिर भी स्वर्गीय विद्याभूषणजीके पत्रव्यवहारसे ऐसी अनेक बातें सम्मुख

आएगी जो मीरांक जीवन काव्यसाधना और भक्तिपक्ष पर अमिनव प्रकाश निलेप करत हुए जितनी ही गवेषणाग्रनिर्योको सुषम्नानेमें परम सहायक सिद्ध होंगी ।

विद्याभूषणजी एक समर्थ भूमिकालेखक भी थे । अनेक ग्रन्थकार ग्रन्थवा सम्पादक उनसे भूमिका लिखवाने उपस्थित हुआ करते थे । जिस पुस्तक पर वह भूमिका लिखना स्वीकार कर लेते थे उसमें केवल उपचार निभानेके लिए ही कसम नहीं उठाते थे । अपितु वह उस ग्रन्थको सम्माननको विषयवस्तु और उसके प्राप्त अप्राप्त तथ्योंको प्रचुर मात्रामें सगृहीत कर पूर्ण सूक्ष्मेक्षिकाके पश्चात् कर्तव्य साधने बैठते थे । यही कारण है कि ये भूमिकाएँ इतनी उत्कृष्ट होती थीं कि सम्पादक ग्रन्थवा ससकका परिग्रम निखर उठता था । काशी नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित व्रजनिधिग्रन्थावली और दादू कविमा मोपास सुन्दरदास और रघुनाथरूपक गीतारो तथा बाकीदास पर इस प्रकारके सम्पादन और लेखनकी पुष्प प्रौढ छाप देखी जा सकती है ।

नागरीप्रचारिणी सभा काशीके वह भाजीवन सदस्य और प्रमुख स्तम्भोंमेंसे अग्र्यतम थे । विद्याभूषण तो वह थे ही विनयभूषण भी प्रथम कोटि के थे । उनका प्रकृतित्रम सारत्थ्य वाचकके समान निष्कम्प एवं निरुपचार था । धर्म और सत्यके प्रति अटल निष्ठा सत्प्रचारका पालन स्वाध्याय सहिष्णुता एवं विचारस्पर्धे आदि गुणसमूहोंने उन्हें अपना एकमात्र आश्रय मान लिया था और वह स्वयं भी इन गुणपुंजोंमें इसने तदाकार हो गये थे कि गुण और गुणिका पार्यव्य देख पाना बन्धनपाटोंकी सन्धिकीस उखाड़ना था ।

इतने दिव्य मध्य और विद्वान् होते हुए भी वह मानासक्ति और आत्मविज्ञापनके पक्षसे कबीरजी चादरके समान अस्पृष्ट थे । 'दास कबीर जतन से छोड़ी क्यों की त्यों धर दीनी बदरियाकि वह उपमान थे । एक उदाहरण इस प्रसंग में उपायेय होगा ।

काशी नागरीप्रचारिणी सभाने विद्याभूषणजीको उनके ७५वें जयं पर्व पर सम्मानित करना निश्चित किया । सभाके लिए ऐसा आयोजन करना उचित ही था । मित्र परिचितोंको भी यह जान कर हुए होना स्वाभाविक कहा जाना चाहिए । उमंग मरे डाक्टर पीताम्बरवत्स बङ्गवालेने समयसे कुछ पूछ ही विद्याभूषणजीको पत्र द्वारा इसकी सूचना पहुँचा दी । उस पुराहितजी का सरस निरमिमान हृदय इस मानमरे आयोजनके तुमुमभित्तगसे विचरित हा उठा । जहाँ ऐसे प्रजननकी प्राप्तिके लिए अग्य उत्कठित रहते हैं वहाँ विद्याभूषणजीको हुरगन्ती प्रसन्नते घेर लिया । मसा सरस्वतीके एकान्तमन्थिरमें चरामनामीन पुजारीकी यह विष्ण कैसे रुचिकर होता और कैसे वह इस प्रोपचारिकताक पीछे धाता जाता सेता वेता रहता ?

उन्होंने कण्ठ पर शपथ रखते हुए इस आयोजनका तत्काल रद्द करनेके लिए अपना धर्मवीर्यमन्त्रण बुढ़ाके साथ निश्चय भेजा । उनके घरोंमें रहें तो पुरोहितजीने इस प्रस्तावको विनयके साथ दोन प्रार्थना करते हुए ठुकरा दिया । परन्तु सभा के अन्य सभी कार्योमें विद्याभूषणजीने सलग्नमनस्वतासे भाजीवन सहयोग लिया । गीताके श्रियतप्रज्ञलक्षणोंसे विभूषित विद्याभूषणजीका विनय त्याग समभाव और सहिष्णुता चिरकाल तक अविस्मरणीय रहेंगे ।

अन्तमें एक दिव्यदर्शनकी भाँकी प्रस्तुत करनेका सोम कसम सवरण नहीं कर पा रही है । बात अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनके अयपुर अधिवेशनके प्रथम दिनकी है । एक छह फीट लम्बे धानानुवाहु तेजस्वी गौरवर्ण तुपारस्तातत्कालपुरस्वतीप्रतिम बूढ़ पुरुष जिन्होंने घुड़ीदार पायजामा मध्य श्वेत अवरला गुलाबी पगड़ी और कंधे पर सांगानेरी उत्तरीय पहना हुआ था सहारेके लिए हाथमें मूठदार छड़ी धामे हुए मक्के एकान्त कोनेमें घुपघाप आकर बिराजमान हो गये । यह माननीय विद्याभूषणजी थे । सम्मेलन का सम्मर्द था । बहुत जन आ जा रहे थे । कोलाहल ख रहा था । तभी अख्य श्रीपुरुषोत्तमदासजी टबन मध पर आये । वह पुरोहितजीके मद्यसौरभके मधुवत थे परन्तु साक्षात्कार सुरमित श्वेत कमलके मध्य पाथिव व्यक्तित्वका अभी नहीं हुआ था । विद्याभूषणजीने भी टबनजीको सुना था देखा नहीं । मध जैसे ही टबनजीको पता चला कि विद्याभूषणजी आये हुए हैं वह उनकी ओर द्रुतगतिसे मिलनोत्सुक होकर चले । फिर तो क्याम सभाने टबनजी और तुपारघात विद्याभूषणजी एक-दूसरेसे इस प्रकार लिपट गये कि जैसे समान-उद्देश्यपभगामिनी ममुना-नागाकी धाराए अन्तस्छन्न सरस्वतीको लिये सगम पर एक हो गई हों ।

वह व्यक्तित्व वह विभूतिमूषित महासत्त्व अपनी जीवनयात्राके अन्तिम पदचिह्नोको साहित्यके राजमार्ग पर सुमनके मणिदीपकोंकी अक्षयपक्ति अक्षर स्नेहसे अगमग कर भव प्रस्थान कर गया है । शेष है उसकी अक्षरसम्बद्ध कीर्ति जो हमारे क्षुतिपटों पर अमृतमहरियोंके शत-शत उमिसग तरमित कर रही है करती रहेगी । विद्याभूषणजी यदि अपने अगस्वेत्परिष्कृत उपक्रान्त ग्रन्थोंको (मीरा जयपुर राज्यका इतिहास प्रभृति) स्वयंकी भाँसोंसे मुद्रित प्रकाशित एवं सम्पन्न देख पाते तो उनसे अधिक सुप्तिलाभ साहित्यिक सहृदयोंको ही होता परन्तु मध तो उनकी पुण्य स्मृतिके काननमें ही ये सदाबहारी कृसुम खिलखिला कर विद्याविनयभूषण पुरोहित हरिमारायणजीकी कीर्तिभजरियोंको विकीर्ण करते रहने । एवमस्तु ।

स्वर्गीय पुरोहित हरिनारायणजी, बी ए -

विद्याभूषण - ग्रन्थ - संग्रह - सूची

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कला	विवरणक्रम	पत्रांकीक्या	विशेष विवरण आदि
(१)	शकुन्तीके पुत्रहर समर्थका पद्ये		१८४६	३१७-३२१	
(११)	कबीरजीकी २६ साधियाँ पर टीका		"	३२१-३७३	
(१२)	कबीरजीके १२३ पद्यों पर टीका		"	३७३-३८३	
(१३)	भामदेवजीके २३ पद्यों पर टीका		"	३८३-३८४	
(१४)	देवस्तके ३ पद्यों का टीका		"	३८४-३८४	
(१५)	हरिदासजीके १६८ पद्यों पर टीका		"	३८४-४०३	
(१६)	मुकुन्द भारतीके २ पद्य तथा बलभानीके ४ पद्य टीका समित्त पुत्रकर संघ—		"	४०३-४०३	
(१७)	नवबार्ता १२ प्रश्नोंके उत्तर, गरीबत सरकारी भाष्य होकोट छात्र समुह, ४ विद्या ३ गुण स्वभाव नवभाव दो पद्य ।		"	४०३-४०३	
(१८)	भामदेवजी के दिव्यकीर्तियोंको टीका (पद्यककोष); रसिकी पद्योंकी भाषा)		"	४०३-४०३	

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कृता	निक्षिप्तमय	पुस्तकिका	विशेष विवरण आदि
(१२)	पुराण संस्कृत- कविता प्रदीपिकाप्रमाण राजकवि कविता २ १ वाक्य प्रदीपिका २ कविता इतिहास प्रमाणप्रमाण इतिहासप्रमाण २ पुस्तक (कविता ४ पुस्तक ४ देव १ वाक्य १ पुस्तक ४) प्रमाणिका प्रमाण वाक्यानी वीर कवितावाक्यानी सप्तम सप्तम सप्तमपुराण प्रमाण कवितावाक्यानी वाक्यानी (संस्कृतमय) वेतराजकीरी सौरभका पुस्तक कवितावाक्यानी कविता ४ वेदमय कवितावाक्यानी ४ कविता कवितावाक्यानी कविता राजकीरी कविता देवता प्रमाणिका कवितावाक्यानी वेर पुस्तिकावाक्यानी मोतिमय इतिहास ३	वाङ्मय कविता	१०४६	४ कविता ४ कविता ४ कविता-४ ४ कविता	
			"	४१११	
			"	४१२१	
			"	४१२२-४१३	
			"		
			"		

क्रमांक	प्रकरण	कर्ता	नियमितमय	पुनर्प्रकाश	विशेष विवरण
	प्राथमिक छन्द ४ वीरकी शाली राम-भक्तभक्तवक्ता शाली राजकी शाली १ बैतलकी शाली १ एवम् शत्रु शीतलवाक्यको वक्ता रत्नम रत्नो प्रायस्क ४२ कृष्ण कविता १४ विचारके आध्यात्मिक शब्द आर्यो सम्प्रदाय और शत्रु प्रायका धारि २४ मित्र सत्यमोदी गोता बहु-शाली प्रायस्क प्रकाशकको वक्ता इन्द्रावका ४४ शीतल नन्दप्रकाश कविता तथा शीतलके वक्ता पुनर्प्रकाश ४ छन्द ४२ 'मण्डल' विचार शाली 'राम'	पीक राजकी बैतल	१८२२ २० २० २० २० २० २० २० २० २० २० २०	४१२२ २० ४१२२ ४१२२ २० ४१२२ २० ४१२२ २० ४१२२	विशेष विवरण धारि

[illegible]

क्रमांक	प्रकल्पनाम	कला	मिपिसमर	पत्रसंख्या	निवेदन विवरण प्राप्ति
(२३)	आगतसुख	सुन्दरवास	१८२४	४७२-४८४	रचनाकाल-१७१ । २ उपकाशों में इसकी प्रतीति हुई है । समस्त क्षेत्र ३ ६ समस्त क्षेत्रों ६ ।
(२४)	रत्नरत्नीका कविता (५ भाग ४६ पृष्ठ)	रत्नरत्नी		४८४-५	प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र का प्रतीति बहुमता से किया गया है ।
(२५)	सर्वज्ञ भावनी (मोवावाली)	भीमबाग		५-५-५	रचनाकाल-१६८३ । प्रोफ़ेसर से स्वर और कालकाल-काल में २५ क्षेत्रों क्षेत्र है ।
(२६)	दुर्गोत्तम विद्यालयकी	सुन्दरवास		५-५-५	
(२७)	विद्युत्-विद्यालयकी			५१०-५११	
(२८)	सर्वज्ञ भावनी (३२ पृष्ठ ३३३ सप्ताह)			५११-५१३	
(२९)	सर्वज्ञ भावनी (३२ पृष्ठ ३३३ सप्ताह)			५१३-५१५	
(३०)	वीथर का सुकुम्भल रत्नीका कला			५१५-५१७	यह क्षेत्र प्रातः कालाशों में सुख हुआ है । यह शत्रुकी को कलासत को कहा है ।
सुन्दरवास—					
(१)	राष्ट्र साक्षी सुख साक्षी ३५६३ पृष्ठ ३७	राष्ट्र	१८२५	१-२१	विस्ती प्रकल्पनामें कल्पनावासको सुन्दर-पर-परामें कल्पोववास द्वारा मिश्रित । यह प्रातः सुख है ।
(२)	राष्ट्रसाक्षी पर सुख पर ४८ राष्ट्र २७	"		२१०-३०३	युक्त ।
(३)	राष्ट्रसाक्षीकी कल्पनासाक्षी परामें । कल्पना ६६२ सप्ताह २४ साक्षी ३३	कल्पनासाक्षी		३०३-३०५	
(४)	विस्तीकाली परामें सुख २८	कल्पनासाक्षी		३०५-३०७	कल्पनासाक्षी प्रातः सुन्दरसाक्षी में ।

क्रमांक	कारण	वर्ग	सिद्धिप्रमाण	पञ्चसिद्धा	विशेष विवरण
(२२) ज्ञानसमग्र		गुणवराज	१८४६	४७२-४८४	रक्षाकाल-१७१ । २ कालासौ में इन्की पुष्टि हुई है । समस्त पुत्र ३ ६ समस्त स्त्री ३ ।
(२३) रक्षाकालीना कविता (४ अङ्क ५२ अक्षर)		रक्षाकाली	"	४८४-४ ३	ग्राम अथवा अक्षर आ प्रयोग कथितता से किया गया है ।
(२४) सर्वज्ञ शास्त्री (भोवावाकरी)		भोवाक	"	४ ३-४ २	रक्षाकाल-१६५३ । अकार से स्वर और अक्षर-काल में २२ अक्षर अक्षर है ।
(२५) हरिद्वीप विज्ञानसौ		गुणवराज		४ २-४१	
(२६) विवेक-विज्ञानसौ				४१०-४११	
(३) सारक-विज्ञानसौ				४११-४१५	
(३१) सधवा (३४ अङ्क ४३३ सर्वज्ञ)				४१५-४२८	
(३२) पीवर का कुसुमाल राजाकी कथा				४२८-४७०	यह ग्रन्थ पाठ अस्मासौ में पुनर्गुण है । यह शब्दों को कराराय को कथा है ।
सूचना—					
(१) शास्त्री शास्त्री सुद शास्त्री १४६५ अङ्क ३७		शास्त्री	१८६८	१-२१	हिन्दी अक्षर-पञ्चमे अस्मासौ की पुनर्गुण स्वरा में सन्तोषदास द्वारा लिखित । यह पाठ पुनर्गुण है ।
(२) शास्त्री के वर सुद वर शास्त्री राज २७		"		२१०-३८३	पुनर्गुण ।
(३) शास्त्री शास्त्री के अस्मासौ पञ्च १ । अकार १६२ शब्द २४ शास्त्री २७		अस्मासौ	"	३८३-४२२	
(४) विज्ञानसौ पञ्च १ सुद २८		अस्मासौ		४२२-४२३	अस्मासौ की पुनर्गुणरासे से ।

क्रमसू	व्यक्तनाम	वर्ग	निमित्तमय	पत्रावस्था	विशेष विवरण यदि
	(२) गोपाली बरबर्ग ११६ ७७७	छात्रसभास	१८३६	४३३-३२४	
	(६) नामदेवकोटी बरबर्ग १२४ ४६			३२६-३३९	
	(७) बबोदोली बरबर्ग १२४ २२४			३३२-३३२	
	(८) रंगमही बरबर्ग २१६			३३९-३७३	
४	मुद्रका जिल्ला - १६ दृष्टिमा १			१-३१	
	(१) दण्डबाली बर्ग ४ (जुम)	बाहुबपालको		३१-२११	
	(२) बाल नाम (कोमिका जलवाला)	पठकन लेखको		३१-२११	
	नामक महामात्र गजालीद्वारा				
	चारसी पाठका जमुवार				
	(३) पर्वतबादक (१२३ दृष्ट)	नेमवाल		२१२-२३	
	(४) रजमकोटी माको एवं मुद्र	रजमको		२३ -२३२	
	कमिल				
	(५) मुद्रास्तसारी छादि मुद्रा मन्त्रके	विदिय		२३२-३३९	
	३१ दृष्ट				
	(६) मयाकार बंदाको दृष्ट खीर			२३२-२३२	
	मयापुकोटी मुद्रका सारी	मायापक (क्यापकासुत्र)		२३२ २३१	
				२७१	
	मुद्रा बाहे छादि नाम ६६७	रजम		२३२ २३५,	
				२३२ ३३	
				२३१ २३४	
				२३५ २३६	
				२३७ २३८	

[illegible]

क्रमांक	परिचय	कक्षा	निर्दिष्ट	प्रश्नसंख्या	विशेष विवरण
(२) वैद्यकीय		प्रथम	१०८६	७-१३	वैद्यकीय प्रश्नसंख्या ७० मारुतक
(३) वैद्यकीय				१३-२६	रक्तस्राव, मनुष्यको सुसंस्कार
(४) वैद्यकीय				२६-३६	वैद्यकीय रोगविज्ञान र रक्तस्राव
(५) वैद्यकीय				३६-४२	वैद्यकीय रोगविज्ञान र रक्तस्राव
(६) वैद्यकीय				४२-४८	वैद्यकीय रोगविज्ञान र रक्तस्राव
पुस्तक—१६ कृति				४८-५४	वैद्यकीय रोगविज्ञान र रक्तस्राव
(१) वैद्यकीय			१०८७	१-११	वैद्यकीय रोगविज्ञान र रक्तस्राव
(२) वैद्यकीय				"	वैद्यकीय रोगविज्ञान र रक्तस्राव
(३) वैद्यकीय				"	वैद्यकीय रोगविज्ञान र रक्तस्राव
(४) वैद्यकीय				"	वैद्यकीय रोगविज्ञान र रक्तस्राव
(५) वैद्यकीय				"	वैद्यकीय रोगविज्ञान र रक्तस्राव
(६) वैद्यकीय				"	वैद्यकीय रोगविज्ञान र रक्तस्राव

क्रमांक	वृत्तनाम	वर्ग	निर्दिष्टमय	पत्रसंख्या
(अ)	(१) ३ गृहनाम ४४	गोरेनाथ	१८८३	१७४३
	(२) दीपादेवीजीगणप	"	"	१७४-१७६
	(३) आनमाला ४४	"	"	१७६-१७७
	(४) ४४ ६	"	"	१७७-१७८
	(५) मोरोवारको दाखी	"	"	१७८-१७९
	(६) पुंनोमनको दाखी	"	"	१८०-१८१
	(७) रावर्तकी दाखी	"	"	१८१-१८२
	(८) बालमुर्ती मण्डवकी दाखी	"	"	१८२-१८३
	(९) मानदेवीका ४४ ८	मानदेवी	"	१८४-१८५
	(१०) देवातीकी दाखी ४४ ९	देवाती	"	१८५-१८६
	(११) पोताकी दाखी पुनकर ४४	पोता	"	१८६-१८७
	(१२) बरवीवनातीकी दाखी- (विनतारिणी मोपण)	बरवीवनाती	"	१८७-१८८
	(१३) दीवानजीगणप	"	"	१८८-१८९
	(१४) गुरु परमेश्वर	"	"	१९०-१९१
	(१५) लेखातीकी विनावकीजीग- ४४	लेखाती	"	१९१-१९२
	(१६) भरणीचरित	बरीचरित	"	१९२-१९३
	(१७) भरणीचरित	बरीचरित	"	१९३-१९४
	(१८) मोरीचरित महिमा	मोरीचरित	"	१९४-१९५

क्रमांक	वस्तुनाम	वर्ण	विक्रयस्थान	विक्रयस्थान	विक्रयस्थान
(१)	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता
(१५)	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता
(१६)	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता
(१७)	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता
(१८)	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता
(१९)	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता
(२०)	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता
(२१)	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता
(२२)	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता
(२३)	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता
(२४)	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता
(२५)	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता
(२६)	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता
(२७)	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता
(२८)	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता
(२९)	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता
(३०)	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता	गुणवत्ता

एकनाकाल-में १७२६ (८ विद्यामंते पुनः)
 वि. क. भाष्यद्वारा
 व विद्यामं वि. क. भाष्यद्वारा

१८ विद्यामंते पुनः ।
 एकनाकाल-१७१४ पापुन मुद्रि ५
 वि. क. - मुद्रिद्वारा राजनशासिकाय मोक्ष
 कारिकाद्वारा ।
 एकाकाराते यक्षपर्वणि नर्ममुद्रिद्वारा
 ४ प्रभाषों में पुनः ।
 मोदी-मुद्रिद्वारा पुन मो प्राप्ते मोक्ष पुन सं
 मुद्रिद्वारा मो प्राप्ते
 पत्र १ भाषति मुद्रिद्वारा मो प्राप्ते

क्रमांक	सम्प्रदाय	कर्म	तिथिप्रमाण	पत्रावली	विशेष विवरण
(५)					
(१५)	मुक्तेश्वरकोटवाल	योगदास रत्नचक्रिय	१५५५	२२०-२४५	१५२५ (८ विधानसे पुर्ण)
(१६)	कनकलालचरणवाल	कनकोपाल	"	२४५-२४५	लि. क. वा. २४५
(१७)	मुक्तेश्वरकोटवाल	बाबुर	"	२४५-२४५	न विधान लि. क. वा. २४५
(१८)	विवादात्मक	कनकोपाल	"	२४५-२४५	
(१९)	मुक्तेश्वर रत्नकोटवाल	कनकोपाल	"	२४५-२४५	
(२०)	रत्नकोटवाल	कनकोपाल	"	२४५-२४५	
(२१)	मुक्तेश्वरकोटवाल	बाबुर	"	२४५-२४५	
(२२)	कनकोटवाल (संग्रह)	विधि	"	२४५-२४५	
(२३)	गुरुजीकी पुष्पी	रत्नकोटवाल	"	२४५-२४५	
(२४)	कनकोटवाल	विधि	"	२४५-२४५	
(२५)	कनकोटवाल	कनकोटवाल	"	२४५-२४५	
(२६)	कनकोटवाल	कनकोटवाल	"	२४५-२४५	
(२७)	कनकोटवाल	कनकोटवाल	"	२४५-२४५	
(२८)	विष्णुकोटवाल (संग्रह)	कनकोटवाल	"	२४५-२४५	
(२९)	कनकोटवाल	कनकोटवाल	"	२४५-२४५	
(३०)	कनकोटवाल	कनकोटवाल	"	२४५-२४५	
(३१)	कनकोटवाल	कनकोटवाल	"	२४५-२४५	
(३२)	कनकोटवाल	कनकोटवाल	"	२४५-२४५	
(३३)	कनकोटवाल	कनकोटवाल	"	२४५-२४५	
(३४)	कनकोटवाल	कनकोटवाल	"	२४५-२४५	
(३५)	कनकोटवाल	कनकोटवाल	"	२४५-२४५	
(३६)	कनकोटवाल	कनकोटवाल	"	२४५-२४५	
(३७)	कनकोटवाल	कनकोटवाल	"	२४५-२४५	
(३८)	कनकोटवाल	कनकोटवाल	"	२४५-२४५	
(३९)	कनकोटवाल	कनकोटवाल	"	२४५-२४५	
(४०)	कनकोटवाल	कनकोटवाल	"	२४५-२४५	
(४१)	कनकोटवाल	कनकोटवाल	"	२४५-२४५	
(४२)	कनकोटवाल	कनकोटवाल	"	२४५-२४५	
(४३)	कनकोटवाल	कनकोटवाल	"	२४५-२४५	
(४४)	कनकोटवाल	कनकोटवाल	"	२४५-२४५	
(४५)	कनकोटवाल	कनकोटवाल	"	२४५-२४५	
(४६)	कनकोटवाल	कनकोटवाल	"	२४५-२४५	
(४७)	कनकोटवाल	कनकोटवाल	"	२४५-२४५	
(४८)	कनकोटवाल	कनकोटवाल	"	२४५-२४५	
(४९)	कनकोटवाल	कनकोटवाल	"	२४५-२४५	
(५०)	कनकोटवाल	कनकोटवाल	"	२४५-२४५	

क्रमांक	वर्गनाम	कर्ता	निगमनाय	पत्रकीयता	विशेष विवरण धारि
(३) मुरार १			१८८६	४३ - ४३१	२ 'मैं तो राम बिकानो' 'ऊठोमी क्यू तो बहोरि भ बहोरि' शोचो समुद्र यलाच मुह ५ मुम्बार कारिया मये
६ मुद्रका २ कृतिया				सकपत्र सं २१३	
(१) विवेकचिन्तामणि		मुम्बरदास		१-३	
(२) इन्द्रावर्योप		सतदास		४-४	
(३) मरुतीको कोल-यह		कामू		५-६	
(४) धाम संभ		कस्यविल		६-७	
(५) गोदीकहा कोल-यह		रामचरण		७-८	इसके कर्ताका नामा आतापरप्रताद भूत मुक्ति सिद्धा है म्मु पसुड है। (सं)
(६) लपव				८-१६	
(७) मरुतीप		सतदास		१६-३	
(८) रेवता लोका मुरमा		मेवादास		३ - ३१	
(९) लतादासको कोली		सतदास	१८४	३१-४६	सि क - इन्द्रावर्य मातदाससिद्ध आकानमये
(१०) बड़ा व्यास				४७-६२	
(११) दास-रेवता				६२-६३	
(१२) निम्न-निगार		लोकादास गिरय शात गिरय		६३-१	
(१३) विष्णुचरित्र		रामचरणदास		१ - १ ८	सि क - प्रदीप आकानमये
(१४) हरिकार-नाल		व्यासदास		१ ६-१३२	
(१५) पंगरीको परकई		धम-लतास		१३२-१४३	

क्रमांक	वस्तुनाम	कला	निगमन	पत्रकीयता	विषय विवरण यादि
(१) मुरदा १			१८८६	४१-४३१	१. मैं तो राम विजयी' 'ऊनोको कही तो बहुरि न कहियो' बोको लगुन यगाय सुं २ मुकवार काराडिया साये
२. गरका २ इतिवो				नवपत्र सं २१६	
(१) विदेकविजयानि	मुरदास			१-३	इसके कर्ताका नाम राजलखरजदार मूल मुक्तिसे लिया है यह समुद्र है। (सं)
(२) इन्दारदोष	सकादास			४-५	
(३) भरतोजीको जोग-जद	कामू			४-६	
(४) वाय धेन	कायचित			६-७	
(५) गोपीकाशका जोग-जद	रामचरण			७-८	
(६) दुपप				८-१२	
(७) भरत-जोड़	सकादास			१२-१	
(८) रेणवा लीका मुरदा	सेवादास			१०-११	
(९) लखदागजीको बाकी	सातदास		१७४	११-७६	लि. क-इन्द्राराम मानदाससिन्धु काबडामध्ये
(१०) बहू-भ्याम	"			८७-१२	
(११) दाद रेणवा	"			१२-१३	
(१२) गितक-निगार	सेवादास गिरव दास गिरव			१३-१	
(१३) बिस्ताकनि	रामचरणदास			१-१८	लि. क-प्रदीप काबडामध्ये
(१४) श्रुतिदाद-सत	व्यामदास			१२-१३२	
(१५) पंगरजोको बरकई	प्रम-सदास			१३२-१४२	

प्रमाण	व्यवस्था	कर्म	निर्दिष्ट समय	पत्रावधि	निर्दिष्ट विवरण यादि
२ (१५) विधानसभा परामर्श	प्रमाणव्यवस्था		१८५५	१५२-५५	
(१७) विधानसभा की परामर्श	प्रमाण व व्यवस्था			१५३-१५७	
(१८) विधानसभा की परामर्श	प्रमाणव्यवस्था			१५७-२५	
(१९) विधानसभा की परामर्श	प्रमाणव्यवस्था			२५-२६१	
(२०) विधानसभा की परामर्श	प्रमाणव्यवस्था			२६१-२६५	
३	प्रमाणव्यवस्था—२१ विधानसभा				
(१) परामर्श की परामर्श	परामर्श विधानसभा		१८५७	१-५२	
(२) विधानसभा की परामर्श	परामर्श विधानसभा			१-५	
(३) विधानसभा की परामर्श	परामर्श विधानसभा			५-८	
(४) विधानसभा की परामर्श	परामर्श विधानसभा			८-१५	
(५) विधानसभा की परामर्श	परामर्श विधानसभा			१५-२८	
(६) विधानसभा की परामर्श	परामर्श विधानसभा			२८-८१	
(७) विधानसभा की परामर्श	परामर्श विधानसभा			८१-१२५	
(८) विधानसभा की परामर्श	परामर्श विधानसभा			१२५-१३५	
(९) विधानसभा की परामर्श	परामर्श विधानसभा			१३५-१४१	

इसका भी कार्य समझाया ही हो ? (स)

हरिहरदास बोले नह

११५ पत्र

विधानसभा ३५ । यदि प्रमाणव्यवस्था न मिले

प्रमाण वही प्रमाणव्यवस्था ही होगी ।

प्रमाण वही प्रमाणव्यवस्था ही होगी ।

प्रमाण वही प्रमाणव्यवस्था ही होगी ।

प्रमाण वही प्रमाणव्यवस्था ही होगी ।

[illegible]

क्र.सं.	प्रस्ताव	कर्म	निविदासमय	पुनर्मंजुरा	विशेष विवरण यदि
(१२)	गंगा घर्म पत्रे घाटी बालभारतको घाटी प्रतापी विप्लवे सन्धी घाटपानको घाटी नगमकवाचको घाटी बालभूदार्तिको सन्धी बचराको घाटी बुलकाको घाटी रातोको घाटी जानपराको घाटी भोरीबाटको घाटी		१०४१-४३	१६४ १६४ १६४ १६४ १६६ १६७	२ रातो मे १७ रात घाटे विप्लवे घाटे । घाटे २ । घाटा घाटा घाटी । ३ घाटे घाटीमे घाटी । ४ घाटे १ रात घाटी । ५ घाटे घाटी । ६ घाटे । ७ घाटे । ८ घाटे २ रात । ९ घाटे गुजरातो मे २ रात । १० घाटे ३ रात ।
(१४)	काठो महुमको घाटे	काठो महुमको घाटे		१६८-१७	
(१५)	काठो महुमको घाटे	काठो महुमको घाटे		१७ - १७२	
(१६)	काठो महुमको घाटे	काठो महुमको घाटे		१७२	
(१७)	काठो महुमको घाटे	काठो महुमको घाटे		१७३	
(१८)	काठो महुमको घाटे	काठो महुमको घाटे		१७४	
(१९)	काठो महुमको घाटे	काठो महुमको घाटे		१७५	
(२०)	काठो महुमको घाटे	काठो महुमको घाटे		१७६	

क्रमांक	सम्प्रदाय	कतौ	निधिसमय	वयसंका	विवरण विवरण कादि
(१२)	(३८) भाग्यवती के घर-२२५ १३ १४ ७३	भागीधर भगत	१७४१-४३	२१-२१३	पूछ २६२३ पर एक ३३ गोपालका सोर
	(३९) कवीरजी के घर	कवीर		२१३-२१२	एक घर गुरदासका भी भिजा है (स)।
	(४०) गुरदासजी के घर गुरदास	गुरदास		२६२३-२६३	गुरुद जगन्ने घर है। २६३३ वन पर वरस-
	(४१) भागवतजी के घर गुरदास	भागवत		२६२४	राज कनकास सोर भिजोके भी घर है।
	(४२) भागवतजी के घर गुरदास	भागवत		२६२४	गोविन्दलालपूजाके
	(४३) भागवतजी के घर गुरदास	भागवत		२६२४	भागीधर भगतने भूयसे रजवलीका नाम
	(४४) भागवतजी के घर गुरदास	भागवत		२६२४	भिजा है पर गुरु गुरदासजीकी रचना है।
	(४५) भागवतजी के घर गुरदास	भागवत		२६२४	गुरुजी भक्ति भागवतवासके लों भिजी ल
	(४६) भागवतजी के घर गुरदास	भागवत		२६२४	१७४१ देखा भिजा है।
	(४७) भागवतजी के घर गुरदास	भागवत		२६२४	गुरदासजीके घर गुरुद जगन्ने है।
	(४८) भागवतजी के घर गुरदास	भागवत		२६२४	भगतने भगतने भक्ति भागवतजीकी लाली
	(४९) भागवतजी के घर गुरदास	भागवत		२६२४	गुरदासका नामका ल १७४१ देखा भिजा है।
	(५०) भागवतजी के घर गुरदास	भागवत		२६२४	भागीधर भगतने भक्ति भागवतजीकी लाली
	(५१) भागवतजी के घर गुरदास	भागवत		२६२४	भागीधर भगतने भक्ति भागवतजीकी लाली
	(५२) भागवतजी के घर गुरदास	भागवत		२६२४	भागीधर भगतने भक्ति भागवतजीकी लाली
	(५३) भागवतजी के घर गुरदास	भागवत		२६२४	भागीधर भगतने भक्ति भागवतजीकी लाली
	(५४) भागवतजी के घर गुरदास	भागवत		२६२४	भागीधर भगतने भक्ति भागवतजीकी लाली
	(५५) भागवतजी के घर गुरदास	भागवत		२६२४	भागीधर भगतने भक्ति भागवतजीकी लाली
	(५६) भागवतजी के घर गुरदास	भागवत		२६२४	भागीधर भगतने भक्ति भागवतजीकी लाली
	(५७) भागवतजी के घर गुरदास	भागवत		२६२४	भागीधर भगतने भक्ति भागवतजीकी लाली
	(५८) भागवतजी के घर गुरदास	भागवत		२६२४	भागीधर भगतने भक्ति भागवतजीकी लाली
	(५९) भागवतजी के घर गुरदास	भागवत		२६२४	भागीधर भगतने भक्ति भागवतजीकी लाली
	(६०) भागवतजी के घर गुरदास	भागवत		२६२४	भागीधर भगतने भक्ति भागवतजीकी लाली

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	मितिप्रमाण	पत्रसंख्या	विवरण विवरण आदि
(१२)	पद	(२) भक्ताना	१७४१-४३	३२६-३३	वाङ्मयीकी छापी १९२८ ।
	"	(३) गुरुराज	"		बोम्पा (पोषिया) की छापी १९१
	"	(४) पारमानन्द	"		काकी काठमाकी छापी ३७ ।
	"	(५) विद्यापति	"		यमुनेक-गर्भतीर्थे छाप ६ ।
		(६) विद्यादास	"		दत्त-गोरक्षछाप ४२ ।
		(७) केमदास	"	"	गोरक्षनाथकी छापी २१ ।
	"	(८) रामदास	"	"	गोरक्षनाथकी छापी १२६ ।
	"	(९) रत्नदास	"	"	गोरक्षनाथकी छ ३४ ।
	"	(१०) केवली	"	"	गोरक्षनाथकी छ १२ ।
	"	(११) पोषा	"	"	वाङ्मयीकी छ ३३२ ।
	"	(१२) जयवीरदास	"	"	खड्गेरकी छ ३८१ ।
		(१३) रामगोपाल	"	"	श्रीमन्नैजकी छ ३८१ ।
	"	(१४) माधोदास	"	"	रैवातकी छ ३२ ।
	"	(१५) जयधर	"	"	कुटकार २ २ ।
	"	(१६) बराली	"	"	गुप्तोपासकी छ ३५० १ ६ ।
	"	(१७) गोपाक	"	"	छापकी बोझको बोझो—
					छापी २४५४ ।
					पद ११२५ ।
					छापी ७१२ ।
					पत्रर बरालीकी छ १२५५२ ।
					नोट—इस पुस्तकमें दो बाण्ड संलग्न भिजाई—

क्रमांक	व्यवस्थापन	कार्य	निर्दिष्ट समय	पत्रावधि	विशेष विवरण यादि
१३	<p>सुरक्षा जिले—</p> <p>राज्यपालकी कार्यालयी कार्यालय</p> <p>सर्वथा पर करित और सुख रूप</p> <p>करे हुए ।</p>	राज्यपाल कार्यालय	१७४३	१३१	<p>पुस्तक भालपुरेले सुरेष्ठित सम्पादनकोले</p> <p>बेलाक करि २ र १२७४को प्राप्त ।</p> <p>प्राचीन लिपि । कालका दीपक कासा हुवा</p> <p>सत्ता पुस्तके पर सम्बन्धे कालक पर लेखत</p> <p>१७३२ और १७४३ मिला है । इसको</p> <p>लिखावटकी बात भी पुरानी हो है । कालक</p> <p>की पुस्तका है । साजी और परीको कालक</p> <p>(पुस्तक) है । यह कालिकी बात कल समय</p> <p>बाल पुरी की बर्णिका इस समयकी और भी</p> <p>पुस्तककोले साजी करी हुई है । निम्ना</p> <p>सम्बन्धित लिखका समय और कोलेले लक्ष्मीकी</p> <p>सो लिखावट को पुरानेपत्ता प्रभाव है ।</p> <p>पुस्तक हुवा (बालकार)</p> <p>प्राचीन ३२ पत्र मही है ।</p> <p>दीपके पत्र अधिपत है ।</p>
१४	<p>सुरक्षा—</p> <p>(१) राजपुस्तको साजी ३६ पत्र</p> <p>(२) कालिकीकी साजी २६ पत्र</p> <p>(३) निम्ना कालिकीकी साजी</p> <p>३६ पत्र</p> <p>(४) कालिकीकी रत्नेकी ३६ पत्र</p> <p>(५) सम्बन्धितपुस्तका यादि हरिपालकी</p> <p>३ पत्र</p> <p>(६) कालिकी</p>	<p>साजी</p> <p>कालिकी</p> <p>कालिकी</p> <p>कालिकी हरिपाल</p> <p>राजपुस्तक</p>		<p>३६-३२</p> <p>३२-३६</p> <p>३६-३२</p> <p>३६-३६</p> <p>३६-३६</p>	<p>१३२</p> <p>१३३</p> <p>१३४</p> <p>१३५</p> <p>१३६</p>

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	सिद्धिप्रमाण	पुनर्लेखन	विक्रीय नियमन आदि
(१४)	(७) दोनहरीसे भाग ११वां (८) बायाबली (९) बायाबली (१०) दोनहरीसे (११) बीजोल गुरोकी लीला पत्र ३७ (१२) अरबबालि पत्र ६२ (१३) अरबबालि पत्र १२४ (१४) अरबबालि (१५) गुणगार पत्र २ ९ (१६) बलाबालि २२ गुरोकी लीला (१७) बलाबालि (१८) बाया-अरबबालि	रजब बागू गरीबबालि बागूबालि अनयोबास बागूबालि " अनयोबास " अनयोबास बागूबालि रजबबालि बागूबालि		११८८ ११८-११८ ११८-१२४ १२४-१२८ १२८-१३ १३-१३३ १३३-१४ १४०-१४४ १४४-१४८ १४४-१४८ १४८-१४८ १४८-१४८	१४४ की पत्र नहीं है । १५ की पत्र नहीं है । अनुपम । अत्यंत एक पत्र पत्र है । आदि के दो पत्र नहीं हैं परन्तु पत्र आरम्भ है । इसमें गुणगारकी लीला भी है । अति स्वासी गोपबालिसे दोनहरीबालिसे अत्यंत पत्र है । नाम केनबालिसे घंटिका गुरुका । यह गुरुका अत्यंत पत्रकी बलाबालि है । स्वासी गोबालिसे अत्यंत है । इसमें भावा भावा अत्यंत है ।
१५	गुरुका-- (१) बागूबालि लीला (२) बागूबालि पत्र ४४४ पत्र ३७	बागूबालि	१७२४	१२२-२४	

क्रमांक	वस्तुनाम	वर्ग	मिपिपमय	पक्षरक्या	विशेष विवरण पारि
(२२)	(१९) सुद कलिय पारि	मिस्कर कलिय पारि	१७७२	१३-१७	इसमें पारि प्रसारित कलिय पारि- मस्कारके पक्ष कलिय पारि है।
	(२०) राजमोना	प्रसारित		१-१	
	(२१) होमपारि कलिय ६	कुलपारि		१०-१३	
	(२२) मुरलीनगर	पारि		१३-१३	
	(२३) पारि-विद्युत-पान-सड़-मुक्ति	प्रसारित		२१-२३	
२३	पुदका—पुदका ६		१६		एकमात्र—१७४६
	(१) प्रसारित			१-१६	यह पुदका पुनः प्रसारित की जायेगी
	(२) कलिय			१६-१७	है। इसमें ६ पक्ष पुदका मिपिपमय है।
	(३) प्रसारित			१७-२६	पारि को कोड़ों से कलिय कलिय पारि
	(४) विद्युत-पान			२६-२७	कर दिये हैं।
	(५) मुरलीनगर			२७-३६	
	(६) प्रसारित			३६-३६	
	(७) एकमात्र-पारि			३६-३६	
	(८) पारि			३६-३६	
	(९) पुदका-पारि			३६-३६	
२४	पुदका—				
	(१) पुदका-पारि २१३३ पुदका			७८	यह पुदका पुदारी पारि-पारि से प्राप्त हुआ।
२५	पुदका—				मिपि पुदका है।
	(१) प्रसारित-पुदका	प्रसारित पुदका	१७७४	७९	
	(२) प्रसारित-पुदका	प्रसारित पुदका	१७७४	७९	
	(३) प्रसारित-पुदका	प्रसारित पुदका	१७७४	७९	

क्रमांक	व्यवसाय	कारा	निमित्तमक्ष	पञ्चकथा	विशेष विवरण यादि
(२५)	(१२) परब्रह्मपुराण (१६) सर्वसाधने (१७) लुप्त कथित	पद्याकर भोजनय		२६-२१ ११-१२ ११-१७	लक्षणके अभावको ।
२७	पुस्तक— (१) रामायणी (लाली) पद्य यादि (२) लुप्त पद्य लघु	पार्श्व गाम्भीर्य विद्यावत्स सीरी कौम केवल परीव कवीर एकवच गुप्तर बबला गोरकनाथ यादि	१२वीं २० २०	१-२२ ४२-४३	
२८	पुस्तक— (१) लक्ष्मीनारा (२) लक्ष्मीनारायणी कथा			१-११ १२-२१	इस पुस्तकसे मोटे अक्षर लेखकके हाथके हैं । लक्ष्मीनारायणी कथासे ३ अर्थात् अक्षर कार्यक हैं ।
२९	पुस्तक— (१) श्रीमानकृतसंवादा	पद्यपुराणोक्त		२४	मोटे अक्षर हैं । भाषा सरल है ।
३	पुस्तक— (१) लक्ष्मीनारा	विष्णुसाल	१८वीं	१-१७	नि. छ. सम्पूर्ण । धारणी २ पत्र भरी है ।

क्रमांक	विवरण	वर्ग	मिति	पत्रांक	विषय
११	(१) बट्टी पहाड़ा (२) मनीसबोरो बकाय बुरका जगह— (१) अबादराय	राजधान	१८७२ १८८१	१८-४ १-२४	भीम-बालक पूछ पर बोचमें बट्टी पहाड़े बोर अपर भीम आस्ताबिक बोहे भिजे है। (स) पंथा निर्मासबत्तु बट्टी दिया है। पंथाबाले अपना निवासस्थान पाँच इलाका मिराज इलाका हीन बालका प्रदेय भिजा है। इनके भिलाका नाम मनेपुरबास था।
१२	बुरका— (१) राजाजबोरीन बोहे बर (२) बोहाबली बोहे बर	रपुराज राजसले	१-१२ १२-१२		संभलत दे बहुराज रपुराजोनिह रोका बाले है। इलाका निवासस्थान बहुराज बोर गोरज- पुरके पास बट्टी था। प्रतिके प्रेतमें भूति भी बहुराज भरेतु कुल बोहाबली संभुर्नम देता भिजा है। भी राजसलेका बिबरन निमज्ज भिजोबमें दिया है।
१३	बुरका— (१) भीमबाल राजस राजस २ (२) बहुराज-कविता (३) बिजपरो राजस ४ (४) भीमबोरी (१२८ भीमि ब पर्मके बाप)	राजधान " " " "	१८७४ ई " " " "	१-३ १-३ १-३	राजसमुखा में राजस राजसणि भिजले इलाको किरायासहता भिजा है। जतोसि प्रति भिजि भी है। यह बापराजनि कवि राजसनाथकी गणपति भारतोके बंधनमें राजस हुई है। स १२२३में

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	निर्दिष्टमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(३३)					मकल कराई है। संख्या ४६ से ६३ तक प्रसक्त पुराणमें नहीं है। बड़े कामकी बातें हैं। अन्तमें दोहोंमें बुद्धचर्याका इस प्रकार है—रामानन्द रामानन्दनन्द बुद्धबाह केशरी बापबास विमोचबास समस्तबास ।
१४ मुद्रका—					
(१) गीतारसी	समस्तबास	१७१२	३४		यह जीर्ण मुद्रका है। खीर संवत् १७१२का सिक्का हुआ है। अन्तमें सिक्का है—संवत् १७१२ बड़े काले १२५ महामानुसिंह सम्युक्त-महोदय-पण्डिते अक्षरवर्मा १३ मय-बासरे विष्णुपुराणमें स्वामी विराट्वाल्मीकी-सिंह स्वामी माधोबासकी सप्तसिद्धि बन्धन-कालेनासिद्धि बन्धनामें धुमम् मन्त्रु खीरामो-कल्पित ।
(२) गीतारसी		"	"		गोद-बट मुद्रका अत्यन्त जीर्ण है। खीर-मल लक्ष्मण है। अन्त में खीरपुरेष्टिलकीकी मुद्राके अनुसार ही छत्रिपति नाम यहाँ चित्रित कर दिये हैं। पत्नीकी संख्या इनकी मरम्मत होनेके बाद ही लगाई जा सकती है। (नं)
(३) गीतारसी		"	"		
(४) अक्षरवर्मा		"	"		
(५) अक्षरवर्मा		"	"		
(६) अक्षरवर्मा		"	"		
(७) अक्षरवर्मा		"	"		
(८) अक्षरवर्मा		"	"		
(९) अक्षरवर्मा		"	"		
(१०) अक्षरवर्मा		"	"		
(११) अक्षरवर्मा		"	"		
(१२) अक्षरवर्मा		"	"		
(१३) अक्षरवर्मा		"	"		
(१४) अक्षरवर्मा		"	"		
(१५) अक्षरवर्मा		"	"		
(१६) अक्षरवर्मा		"	"		

(१७) अक्षरवर्मा

(१८) अक्षरवर्मा

(१९) अक्षरवर्मा

(२०) अक्षरवर्मा

(२१) अक्षरवर्मा

(२२) अक्षरवर्मा

(२३) अक्षरवर्मा

(२४) अक्षरवर्मा

(२५) अक्षरवर्मा

(२६) अक्षरवर्मा

(२७) अक्षरवर्मा

(२८) अक्षरवर्मा

(२९) अक्षरवर्मा

(३०) अक्षरवर्मा

(३१) अक्षरवर्मा

(३२) अक्षरवर्मा

(३३) अक्षरवर्मा

(३४) अक्षरवर्मा

(३५) अक्षरवर्मा

(३६) अक्षरवर्मा

(३७) अक्षरवर्मा

(३८) अक्षरवर्मा

(३९) अक्षरवर्मा

(४०) अक्षरवर्मा

(४१) अक्षरवर्मा

(४२) अक्षरवर्मा

(४३) अक्षरवर्मा

(४४) अक्षरवर्मा

(४५) अक्षरवर्मा

(४६) अक्षरवर्मा

(४७) अक्षरवर्मा

(४८) अक्षरवर्मा

(४९) अक्षरवर्मा

(५०) अक्षरवर्मा

(५१) अक्षरवर्मा

(५२) अक्षरवर्मा

(५३) अक्षरवर्मा

(५४) अक्षरवर्मा

(५५) अक्षरवर्मा

(५६) अक्षरवर्मा

(५७) अक्षरवर्मा

(५८) अक्षरवर्मा

(५९) अक्षरवर्मा

(६०) अक्षरवर्मा

(६१) अक्षरवर्मा

(६२) अक्षरवर्मा

(६३) अक्षरवर्मा

(६४) अक्षरवर्मा

(६५) अक्षरवर्मा

(६६) अक्षरवर्मा

(६७) अक्षरवर्मा

(६८) अक्षरवर्मा

(६९) अक्षरवर्मा

(७०) अक्षरवर्मा

(७१) अक्षरवर्मा

(७२) अक्षरवर्मा

(७३) अक्षरवर्मा

(७४) अक्षरवर्मा

(७५) अक्षरवर्मा

(७६) अक्षरवर्मा

(७७) अक्षरवर्मा

(७८) अक्षरवर्मा

(७९) अक्षरवर्मा

(८०) अक्षरवर्मा

(८१) अक्षरवर्मा

(८२) अक्षरवर्मा

(८३) अक्षरवर्मा

(८४) अक्षरवर्मा

(८५) अक्षरवर्मा

(८६) अक्षरवर्मा

(८७) अक्षरवर्मा

(८८) अक्षरवर्मा

(८९) अक्षरवर्मा

(९०) अक्षरवर्मा

(९१) अक्षरवर्मा

(९२) अक्षरवर्मा

(९३) अक्षरवर्मा

(९४) अक्षरवर्मा

(९५) अक्षरवर्मा

(९६) अक्षरवर्मा

(९७) अक्षरवर्मा

(९८) अक्षरवर्मा

(९९) अक्षरवर्मा

(१००) अक्षरवर्मा

क्रमांक	वस्तुनाम	कता	निविदापत्र	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(१४)	(१६) मासरेखनीका घर	मासरेख	१७१५		
	(१७) मासरेखनीकी माफो	रेखास			
	(१८) रेखासनीका घर	हिरवास		२ ७-२६६	इसकी १ पत्ती मासरेखी कोर १ पत्ती को इस वरकि धारित है ।
	(१९) हिरवासनीका घर	नामक	२१		
	(२०) हिरवासनीकी माफो	पीपा		२७	
	(२१) नामकनीका घर	रखोडी		२८	
	(२२) नामकनीकी माफो	मिलोबन		२९	
	(२३) खोसनीका घर	दिवसप	३०		
	(२४) खोसनीकी माफो	बीजस			
	(२५) खोसनीका घर	बेनी	३१	३२	
	(२६) खोसनीकी माफो	राधानगर		३३	
	(२७) राधानगरनीका घर	भक्तिपुर			
	(२८) भक्तिपुरनीका घर	कमास	३४		
	(२९) कमासनीका घर	मुदम		३५	
	(३०) मुदमनीका घर	पट्टर	३६		
	(३१) पट्टरनीका घर	मुसागर	३७		
	(३२) मुसागरनीका घर				

[illegible]

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	मिथिनाम	पुस्तकका	विशेष विवरण आदि
(१४)	(१६) नामदेवजीका पद्य	नामदेव	१७१३		
	(१७) नामदेवजीकी भाषा	"	"		
	(१८) रत्नाजीका पद्य	रत्ना			
	(१९) हरिदासजीका पद्य	हरिदास			
	(२०) हरिदासजीकी भाषा	"		२ ७-२६६	इसकी ३ पत्तियाँ, आठपत्तियों और १ पत्ती की हल शब्दों की भाषा में हैं ।
	(२१) नामदेवजीका पद्य	नामदेव	"		
	(२२) नामदेवजीकी भाषा	वीणा	"	"	
	(२३) रत्नाजीका पद्य	रत्ना	"	"	
	(२४) रत्नाजीकी भाषा	रत्ना	"	"	
	(२५) रत्नाजीका पद्य	रत्ना	"	"	
	(२६) रत्नाजीकी भाषा	रत्ना	"	"	
	(२७) विद्याभूषणका पद्य	विद्याभूषण	"	"	
	(२८) विद्याभूषणका पद्य	विद्याभूषण	"	"	
	(२९) रत्नाजीका पद्य	रत्ना	"	"	
	(३०) रत्नाजीका पद्य	रत्ना	"	"	
	(३१) रत्नाजीका पद्य	रत्ना	"	"	
	(३२) रत्नाजीका पद्य	रत्ना	"	"	
	(३३) रत्नाजीका पद्य	रत्ना	"	"	
	(३४) रत्नाजीका पद्य	रत्ना	"	"	
	(३५) रत्नाजीका पद्य	रत्ना	"	"	
	(३६) रत्नाजीका पद्य	रत्ना	"	"	

क्रमांक	व्यक्त्यानाम	वर्ग	निविष्टसमय	पञ्चसंख्या	विशेष विवरण आदि
(३४)	(३७) कुम्भारनाथ बर	कुम्भारनाथ	१७१३		
	(३८) लक्ष्मिदेविका पद	लक्ष्मिदेविका	"		
	(३९) परमराजिका पद	परमराजिका	"		
	(४०) परमराजिकी साक्षी	"			
	(४१) सारिका पद	सारिका	"		
	(४२) लीला पद	लीलापल	"		
	(४३) कामदेविका राजलिका बर	कामदेविका			
	(४४) बाणिका पद	बाण			
	(४५) अरती मूर्तिका पद	अरती			
	(४६) मोहितिकासका पद	मोहितिकास			
	(४७) मोरकुका पद	मोरकु			
	(४८) लीला साक्षी	लीला			
	(४९) चम्पारकी पोखरी	चम्पार			
	(५०) चम्पारका पद	"			
	(५१) चम्पारकी रातो	"			
	(५२) लीला पद	लीला			
	(५३) बसन्तिका देवसंघिका	बसन्तिका			
	(५४) बसन्तिका पद	"			
	(५५) बसन्तिका पद	बसन्तिका			
	(५६) लीलाका पद	लीला			
	(५७) बसन्तिका पद	बसन्तिका			

क्र.सं.	क्रमसं.	वर्णन	वर्ष	विनिमय	वर्षसंख्या	विशेष विवरण यदि
(१४)	(२०)	दुग्धरास	१७१५			
	(२१)	पला भल्ल				
	(२२)	अपरेष कदि				
	(२३)	सपरोडल				
	(२४)	व्यास				
	(२५)	वीणा				
	(२६)	नायिक				
	(२७)	सारी				
	(२८)	गानिह				
	(२९)	हलीकेय				
	(३०)	बहुपुत्र				
	(३१)	मुद्रका न				
	(३२)	केपरास				
	(३३)	मुद्रका न				
	(३४)	परमानरास				
	(३५)	आयोक्षयाच				
	(३६)	बनरास				
	(३७)	पारास (सीरवाका)				
	(३८)	"				
	(३९)	रत्नरत्न				
	(४०)	राष्ट्रपुति तवेया				
					१८-१९०	

[illegible]

क्रमांक	प्राजापितामह	वर्ग	विशेषण	पत्राङ्क
(१४)	(१२२) बरतको वर	बरत	१७१५	१३६को
	(१२३) भरतको वर	भरत	"	"
	(१२४) भेक भेकका वर	भेक भेक	"	"
	(१२५) बलिभूषण वर	बलिभूषण	"	"
	(१२६) बलिभूषण वर	बलिभूषण	"	"
	(१२७) बलिभूषण वर	बलिभूषण	"	"
	(१२८) बलिभूषण वर	बलिभूषण	"	"
	(१२९) बलिभूषण वर	बलिभूषण	"	"
	(१३०) बलिभूषण वर	बलिभूषण	"	"
	(१३१) बलिभूषण वर	बलिभूषण	"	"
	(१३२) बलिभूषण वर	बलिभूषण	"	"
	(१३३) बलिभूषण वर	बलिभूषण	"	"
	(१३४) बलिभूषण वर	बलिभूषण	"	"
	(१३५) बलिभूषण वर	बलिभूषण	"	"
	(१३६) बलिभूषण वर	बलिभूषण	"	"
	(१३७) बलिभूषण वर	बलिभूषण	"	"
	(१३८) बलिभूषण वर	बलिभूषण	"	"
	(१३९) बलिभूषण वर	बलिभूषण	"	"
	(१४०) बलिभूषण वर	बलिभूषण	"	"
	(१४१) बलिभूषण वर	बलिभूषण	"	"
	(१४२) बलिभूषण वर	बलिभूषण	"	"
	(१४३) बलिभूषण वर	बलिभूषण	"	"
	(१४४) बलिभूषण वर	बलिभूषण	"	"
	(१४५) बलिभूषण वर	बलिभूषण	"	"
	(१४६) बलिभूषण वर	बलिभूषण	"	"
	(१४७) बलिभूषण वर	बलिभूषण	"	"
	(१४८) बलिभूषण वर	बलिभूषण	"	"
	(१४९) बलिभूषण वर	बलिभूषण	"	"
	(१५०) बलिभूषण वर	बलिभूषण	"	"

क्रमांक	उपपद्या	वर्ग	विवरण	परिमाण	परिमाण
(१५)	(२६) बरगको घर	घर	बरग	१०१२	१११५
	(२७) बरगको घर	घर	बरग		
	(२८) बरगको घर	घर	बरग		
	(२९) बरगको घर	घर	बरग		
	(३०) बरगको घर	घर	बरग		
	(३१) बरगको घर	घर	बरग		
	(३२) बरगको घर	घर	बरग		
	(३३) बरगको घर	घर	बरग		
	(३४) बरगको घर	घर	बरग		
	(३५) बरगको घर	घर	बरग		
	(३६) बरगको घर	घर	बरग		
	(३७) बरगको घर	घर	बरग		
	(३८) बरगको घर	घर	बरग		
	(३९) बरगको घर	घर	बरग		
	(४०) बरगको घर	घर	बरग		
	(४१) बरगको घर	घर	बरग		
	(४२) बरगको घर	घर	बरग		
	(४३) बरगको घर	घर	बरग		
	(४४) बरगको घर	घर	बरग		
	(४५) बरगको घर	घर	बरग		
	(४६) बरगको घर	घर	बरग		
	(४७) बरगको घर	घर	बरग		
	(४८) बरगको घर	घर	बरग		
	(४९) बरगको घर	घर	बरग		
	(५०) बरगको घर	घर	बरग		

क्रमांक	व्यवसाय	कला	मिथिलपत्र	पत्रसंख्या	विशेष विवरण यदि
(१४)	(११६) बरहदोब (बन्धनगोरगर्जनाथ) गोरगर्जाब		१७१५	३७६-३७८	इसमें १८ पत्र हैं जे सब प्रभाव के हैं ।
	(११७) गोरगर्जाब (१७३ बर्गार्थ)		"	३७८-३८६	
	(११८) भरहरीजीका सार (राजा-राजीवराज)		"	३८६-३८७	
	(११९) भरहरीजीको छम्पी	"	"	३८७-३८८	
	(१२०) हुनवलाजीका बर चोर भजन	लुखला	"	३८८-३८९	जे सबके जोड़ी थे ।
	(१२१) हुनवलाजीको छम्पी	"	"	३८९-३९०	
	(१२२) गोपीकाजीका पत्र	घोरीकात्र राजा	"	३९०	
	(१२३) गोपीकाजीको छम्पी	"	"	३९०	
	(१२४) लाली कपरीका पत्र	कपरी	"	३९१	
	(१२५) कपरीकाबकी छम्पी	"	"	३९१	
	(१२६) हुनगोपका बर	हुनगोप	"	३९१	
	(१२७) हुनगोपका छम्पी	"	"	३९१	
	(१२८) भरहरीकाबकी छम्पी	बलभरीपत्र	"	३९१	
	(१२९) भागाजकी छम्पी	भागाजकी	"	३९१	
	(१३०) बरहरीकी छम्पी	बरहरी	"	३९१	
	(१३१) बोरगोपकाबकी छम्पी	बोरगोप	"	३९१	
	(१३२) मित्रकी छम्पी	(कोई नाम)	"	३९१	अगुल जोरवार पत्र है ।
	(१३३) बरहरीकी छम्पी	बलभरी	"	३९१	
	(१३४) बलभरीकाबकी छम्पी	बलभरी	"	३९१	
	(१३५) मित्रकी छम्पी	मित्र	"	३९१	

क्रमांक	पत्रनाम	कर्ता	निरूपितमात्र	पत्रसंख्या	विशेष विवरण यदि
(१४)	(१२०) दोल बहादुरीका पर	दोल बहादुरी	१७१२	१२७७	
	(१२१) दोल करिगल्ले आली	दोल चण्डेपुरी		१२७८-१२८८	
	(१२२) गोरक्षनाथकोका पर	गोरक्षनाथ	"	१२७९-१२८९	
	(१२३) गोरक्षनाथकोकी तिथि	"	"	१२९०	
	(१२४) अरवचोक	"	"	१२९१-१२९७	
	(१२५) काकरचोक	"		१२९८-१२९९	
	(१२६) काकमि तिमोक माया	"	"	१२९९-१३००	
	(१२७) रामनाथको	"	"	१३०१	
	(१२८) विद्यावर्धन डाय	"	"	१३०२-१३०३	
	(१२९) ज्ञानकोतीती	"	"	१३०४-१३०५	
	(१३०) गोरक्षनाथकोच	"	"	१३०६-१३०७	
	(१३१) जलचोक	"	"	१३०८	
	(१३२) रामचन्द्रा	"	"	"	
	(१३३) गोरक्षनाथकोका घर	"	"	१३०९	
	(१३४) गोरक्षनाथ अष्टाक्षर	"	"	१३१०	
	(१३५) गोरक्षनाथकोका	"	"	१३११-१३१२	
	(१३६) गोरक्षनाथकोका	"	"	१३१३-१३१४	
	(१३७) गोरक्षनाथकोका	"	"	१३१५-१३१६	
	(१३८) गोरक्षनाथकोका	"	"	१३१७-१३१८	

पत्रको नाम गोरक्षनाथकोका अस्ति ।

पत्रको नाम गोरक्षनाथकोका अस्ति । पत्रको नाम गोरक्षनाथकोका अस्ति । पत्रको नाम गोरक्षनाथकोका अस्ति ।

[illegible]

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	लिपिसमय	प्रकाशका	विशेष विवरण यदि
(३४)	(१३६) सुलङ्कारकी सवरी	सुलङ्कार	१७१२	१६३५	
	(१३७) मोडकीवाकी सवरी	मोडकीवाचन	"	"	
	(१३८) मोराबोलीकी सवरी	मोराबोलीवाचन			
	(१३९) कटवलाकी सवरी	कटवला			
	(१४०) मिश्र हस्तलीकी सवरी	मिश्र हस्तली		१६३५	
	(१४१) मन्वन्तीसवरी सवरी	मन्वन्तीसवरी			
	(१४२) दलकीकी सवरी	दल			
	(१४३) कानावका सवरी	कानावका (कावेरका ?)		१६७५	
	(१४४) पूर्वोत्तरकी सवरी	पूर्वोत्तर		१६७-१६८	
	(१४५) पूर्वोत्तरका सौम्य	पूर्वोत्तर सुम्य		१६८-१६९	कठोर 'वृत्ति' की पूर्वोत्तर सुम्यारे लक्ष्य म्हापुराणे सिद्धमस्य सीमावर्तिव्यापोगास्य सम्यक् ।
	(१४६) निवर्तनीय-वासर्वाप्रकाशको- काव	"		४ १-४ ३	
	(१४७) प्राक्परीची (१९ काव)	"		४ ३-४ ४	सुलङ्कार-पूर्वोत्तरकावर्तिवर्तनीय सीमावर्तिव्यापोगास्य
	(१४८) प्राक्परीची (१०० काव)	"		४ ४-४ ५	विषयव्यवस्था की है ।
	(१४९) प्राक्परीची-मिश्रहस्तलीकी- काव (१९ काव)	"		४ ५-४ ६	
	(१५०) प्राक्परीचीकाव	"		४ ६-४ ७	
	(१५१) प्राक्परीचीकाव	"		४ ७-४ ८	
	(१५२) प्राक्परीचीकाव	"		४ ८-४ ९	
	(१५३) प्राक्परीचीकाव	"		४ ९-४ १०	
	(१५४) प्राक्परीचीकाव	"		४ १०-४ ११	मोदीकीरवा (नारदा) सुलङ्कारकावर्तिव-मन्वन्ती

राज्यपाल आचार्यका अभिप्राय—(विद्यार्थीसंख्या-४१०-सौराष्ट्र-मुंबई)

क्रमांक	प्रश्नसंख्या	संज्ञा	निर्दिष्टकाल	गणसंख्या	विशेष विवरण यादि
(१४)	(१०२) बट्टासारेसुरेन्द्रजीसंस्थान (२ एम)	पुणेभाषा मुद्रण	१७१२	४१३-४१४	सारी-सारी उपरोक्तपत्रो बाते ।
(१०६)	व्यवहारसंस्थानसुरेन्द्रजीसंस्थान (२ एम)	"	"	४१४वां	उपरोक्तपत्रो वीणकी मुद्रा बाते ।
(१०७)	आत्मसुरेन्द्रजीसंस्थान (११ एम)	"	"	४१४-४१५	"
(१०८)	अविर्भूतसंस्थान (१४ एम)	पुणेभाषा	"	४१५वां	उपरोक्तपत्रो बाते ।
(१०९)	निर्दिष्टसंस्थानसंस्थान (१३ एम)	"	"	४१५-४१६	"
(११०)	संस्थासंस्थान (१२ एम)	"	"	४१६वां	वीणकी गायत्री
(१११)	संस्थासंस्थान (१७ एम)	"	"	४१६-४१७	विद्यार्थीसंस्थानसंस्थान
(११२)	संस्थासंस्थानसंस्थान (१८ एम)	"	"	४१७-४१८	"
(११३)	संस्थासंस्थानसंस्थान (१९ एम)	"	"	४१८-४१९	"
(११४)	संस्थासंस्थानसंस्थान (२० एम)	"	"	४१९-४२०	"
(११५)	संस्थासंस्थानसंस्थान (२१ एम)	"	"	४२०-४२१	"
(११६)	संस्थासंस्थानसंस्थान (२२ एम)	"	"	४२१-४२२	"
(११७)	संस्थासंस्थानसंस्थान (२३ एम)	"	"	४२२-४२३	"
(११८)	संस्थासंस्थानसंस्थान (२४ एम)	"	"	४२३-४२४	"
(११९)	संस्थासंस्थानसंस्थान (२५ एम)	"	"	४२४-४२५	"

क्रमांक	प्रबन्ध	कवि	निर्माणक	पत्रिका	विशेष विवरण
(१४)	(२१) चैतन्यजी के वर १८ (२२) चैतन्यजी का सपना २ छोर काफ़ी ६	चैतन्य (शङ्खुशिर)	१७१३	४४५-४४६ ४४६-४४७	शङ्खुजी की श्रुतिके नीरस भरे अलस लवण हैं ।
	(२३) शास्त्राचार्य एव १२ (२४) अमरनाथ के वर ७ (२५) प्रजापति (राज भुवनेश्वर)	अमरनाथ	"	४४७-४४८ ४४८-४४९	
	एव १८ (२६) अमरनाथ के वर एव २८ (२७) भैरव के सवेरे ९ (२८) प्रजापति (२ विद्या)		"	४४९-४५० ४५०-४५१	शङ्खुजी-अमरनाथ-संस्कृत ।
	(२९) प्रजापति (१८ विद्या) (३०) मोहनदेव (१ विद्या) १९८८ बोलियाँ	"	"	४५१-४५२ ४५२-४५३	
	(३१) अमरनाथ (६ विद्या) (३२) मोहन देव (१ विद्या) (३३) शङ्खुजी अमरनाथ वर (३४) विद्या		"	४५३-४५४ ४५४-४५५	
	(३५) अमरनाथ (६ विद्या) (३६) शङ्खुजी अमरनाथ वर (३७) अमरनाथ (६ विद्या)		"	४५५-४५६ ४५६-४५७	
	(३८) अमरनाथ के वर ७ (३९) अमरनाथ के वर १४	"	"	४५७-४५८ ४५८-४५९	

[illegible]

क्रमांक	कर्मनाम	कला	निमित्तमय	वक्रावस्था	विशेष विवरण यादि
(१४)	(१३७) गुणदेवतादीनां एव १० (१३८) गुणविग्रहको एव एव १७	विद्या याज्ञिक	१७१५	२ ७३ २ ७-३११	प्रायः दोहा एव प्रयुक्त हुआ है । मुक्तार्थ नामाको लख्य है ।
	(१३९) वरजन्तो (राज जीने) यज्ञोत्तर भाऊ यादि			२११-३१२	
	(१४०) वक्राभिमानो एव १५		"	२१२-३१३	
	(१४१) वक्र एव १५			२१३वां	
	(१४२) मुक्तहितकरेण एव २३३	"		२१३-३२४	अनुत्त रोचक कथा है । अन्तर्गते अस्ति है ।
	(१४३) भूमीभूषण एव			२२४-३२५	गाय लया ३२४ पद्य है । सुप्रसन्नान्ते प्रयोजित नहीं है ।
	(१४४) निरञ्जन्मुद्रावस्थ			३२५-३३१	चित्ती कृत्यान् प्राप्त कथाका भोगका कथाया प्रयोग होता है । कलाका नाम नहीं दिया है । अन्तर्गते (निरञ्जन्) ऐसा लिखा है । इसमें वक्रावस्था एव नहीं है ।
	(१४५) जगन्नाथ (जगन्नाथ ५)	मुक्तारका	१७१	३३१-३३६	
	(१४६) लक्ष्मीकावली एव ३५	"		३३६-३३७	
	(१४७) विष्णुदेवतादीनां एव ४	"		३३७-३३८	
	(१४८) भूमीभूषणको			३३८-३३९	
	(१४९) देवताभूषण जगन्नी ४५			३३९-३४०	
	(१५०) गुरुरागादीको विद्याको			३४०वां	
	द्वितीयविद्याको	"		३४०-३४५	

क्रमांक	पर्यायनाम	कार्य	निर्दिष्टसमय	पुस्तकिका	विशेष विवरण
(१४)	(१४१) मुम्बईराजकीके वर (१४२) मेरुकी केतावनी (१४३) हरिप्रभुकीकी केतावनी वर ३६	मुम्बईराज मेरुवात काहीरी हरिप्रभु	१७१	१६६-१६७ १६७-१६८ १६८-१६९	प्रभुकी १ कलकत्ताका वर भी है ।
(१५)	(१५१) छिलम्बे वर १ वर (१५२) मुम्बई (१५३) गुरु काविल वर १६	छिलम्बेवात गुरुका काविल (१) गुरु गुरुकीलिख (२) गुरुवात (३) गुरुकी (४) गुरु (५) गुरुकी (६) गुरुकी (७) गुरुकी (८) कवि वर (९) हरिप्रभु वर ३६ गुरुकाविल	२०	१६९-१७० १७०-१७१ १७१-१७२	
(१६)	(१६१) लीलापदराजकीकी (लीलाई ५१) गुरुकाविलकीके वर वर ३६	लीलापदराजकीकी (लीलाई ५१) गुरुकाविलकीके वर वर ३६	२०	१७२-१७३	
(१७)	(१७१) निर्वाणकीके वर (१७२) वर ३६ (१७३) मुम्बईकीकी भीला (१७४) वर ३६	निर्वाणकीके वर वर ३६ मुम्बईकीकी भीला (१७४) वर ३६	२०	१७३-१७४ १७४-१७५ १७५-१७६	विशेष लीलापद वर ३६ ।

क्रमांक	व्यवस्थापक	कर्ता	निमित्तपत्र	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(१४)	(२२१) कर्मविचारपीठ (२२२) भारतीजीका लोक सुधार (२२३) राजकीय कविता पत्र ७७ (२२४) कौटिल्यराजकी कथा (२२५) आर्यभट्टकी कथा (२२६) जितोत्तमकी कथा	योगेश्वर रत्न अमरावत अमरावत	१७१ " " " "	२१५-२१६ २१६-२१७ २१७-२१८ २१८-२१९ २१९-२२०	विष्णु संस्कृतका प्रथम है। रचना-१९५२ संस्कृत है। नोट—यह पुस्तक संवत् १७१ धारा इससे पूर्वका सिका हुआ अतीत होता है अतः कि बीकानेर सुधारदासकी प्रथम आत्मकृतकी समाप्ति पर सिका हुआ है। धारासे जो संवत् १७१२की प्रथम सिका सिका गई है वह पुष्पक स्यादिके द्वारा लेखककी सिका हुई काल होती है। (सं)
३२ पुस्तक	(१) विचारपीठ १ १ पुस्तक (२) भारतीय पत्र धारा	अमरावत योगेश्वर	१८ ७	१-१७	धारा १। इसमें दोषों की प्राप्ति धारा है। भारतीयसे ११५ धारा तथा धारासे १४८ धारा है।
	(३) विचारपीठ (४) अमरावतकी (५) अमरावत	अमरावत अमरावत अमरावत	१७७५	१-२१ २१-२४ २४-२६	राज्याध्यक्ष-आचार्यराजमित्र-आचार्यका प्रथम। मि. अ. अमरावत सकारित्वकी राससे पुरोहितपुरोहितकी सकारित्वसे निर्मित।

क्रमांक	कव्यभाग	कला	मिथिलमय	वर्णनका	विशेष विवरण यादि
(३२)	(१) नाम धूमकेतु यादि (२) राजवर्णिका	केवलवाद्य	१७०४ १८ ७	१७०४ वन १-११३	मि. क.—पुरीक्षित राजराज संयोगेराजस्य ।
३३	कुटका— गीता (भावाभूषण)	द्विचलन	१८ ९	७	
३४	कुटका— (१) गीता (भावाभूषण)		१७४४	१-१४८	मि. क.—बाहुल्य राजसकल भावस्तीत्य केवल कार्यासिद्धते । अहं प्रकाशे लिकी है ।
३५	(२) लुप्ति स्तोत्राराजकी (३) गीता (भावाभूषण)	लवणवाद्य निरञ्जनी	१७४२ १७४२	१७४२-१२४ ७१	१४ की वन कव्यस्य । टका—मं १७४२ दीपकतो । मि. क.—रत्नगुण राजवर्णिका । प्रति कीर्त है ।
३६	गीता (भावाभूषण)	कटाक्षकूर	१८ ६	१७६	लुप्ति है । ९ प्रत्यायोका धनुषाद है । नोट—इसमें स्तोत्र किं द्वितीय-पद्यानु वाच दिया है । टीका ललित और उत्तम है । लेखारत्न लंबी मुद्राद्विधा अष्टपुरमिकासीके मिसे इस धनुषादकी रचना हुई । कटाक्षकूर वीरवाग्व्यास कटुल वा । यह धनुषाद पद्या वा । मि. क.—वीरवाद्य द्वितीयमिथिलमय भवर बोका वर्णनये । धनुषं न धनुष है ।
४	गीता (भावाभूषण)	अष्टममल निरञ्जनी	१६१३	१२६	
४१	(१) गीताभूषण एवं वाक्काकीका (२) कौटिल्याय		१६१४ १६१४	३२ १-४१	

[illegible]

क्रमांक	व्यक्ति	वर्ग	कर्म	निमित्त	पत्रांक	विशेष विवरण
२१	(१) गुजरातीपार (२) हरि रामदासजीको बाली (३) " (४) समुद्रबहादुरजी (५) अस्मिताजी	गुजरातीपार हरि रामदास " रामदास समुद्रबहादुर	गुजरातीपार हरि रामदास " रामदास समुद्रबहादुर	१२५० १-१२ १-१३ १४-१५ १४-१६	(अनुप) इस पत्रके पर मुद्रोहितजीकी सुधीस अव संख्या की है और उसके सामने 'मुद्रोहित' संख्या संख्या अनुप' लिखा है परन्तु इसमें कह नहीं है। इसमें को मुद्रोहित पत्र लिखे है वे वहाँ अस्मिता कर दिने गये हैं। (सं)	
२२	रामदास	कवि	कवि	१२५२	१२५	र.का-सं. १ ४४ विहारी। १५२१ विहारी संख्या। १५२६ की प्रतिलिपि। वि. क-अती गुजरातीपार परन्तु अस्मिता लिपिकार द्वारा लिखित यह पत्र २ दिनों रखा गया था। (सं)
२३	गुजरातीपार	गुजरातीपार	गुजरातीपार	१२५३	१२५	अनुप व अतीपति है। अस्मिता प्रतिलिपि।
२४	गुजरातीपार	गुजरातीपार	गुजरातीपार	१२५४	१२५	अनुप व अतीपति है। अस्मिता प्रतिलिपि।
२५	गुजरातीपार	गुजरातीपार	गुजरातीपार	१२५५	१२५	अनुप व अतीपति है। अस्मिता प्रतिलिपि।

कथा	पद्यनाम	कथा	निर्माणम्	पद्यकथा	विशेष विवरण पादि
२९ भोवाचीकी		धीवराभरालिक	१९८८	१८	सं १९७९की प्रतिस्ते प्रतिनिधित्व । मि.क-धीवराभराली नाम कर्तुमुच (धीवरा) विषयः। मि.क-धीवराभराली नाम कर्तुमुच (धीवरा) नाम विद्ये है (१) कुट्ट २ ३ सं ३८४ पर । इसके द्वारा रचित पद्यका नाम 'धीवरा' मिला है । इसका समय १९८१ की रचनाका नाम २७१ विद्या है । इससे धर्मपराधिका परमेश्वर कुट्ट ७२२ सं ७८ पर है । ये धर्मपराधिका-नामका नाम है । इसका नाम (१) कुट्ट पर (२) नामो मिला है । रचनाका नाम सं १८ विषयः । धर्मपराधिका नाम है कि 'धीवरा' धर्मपराधिका नाम है । यह नाम धर्मपराधिका द्वारा धर्मपराधिका नाम है । (म) नाम धर्मपराधिका नाम धर्मपराधिका नाम नाम । धर्मपराधिका नाम । धीवरा नाम धर्मपराधिका नाम है । इसके नाम धर्मपराधिका नाम है । मि.क-धीवराभराली नाम धर्मपराधिका नाम धर्मपराधिका नाम है । धर्मपराधिका धीवरा नाम धर्मपराधिका नाम है । (स)
३० भोवाचीकी		धीवराभरालिक	१९८८	१८	मि.क-धीवराभराली नाम कर्तुमुच (धीवरा) विषयः। मि.क-धीवराभराली नाम कर्तुमुच (धीवरा) नाम विद्ये है (१) कुट्ट २ ३ सं ३८४ पर । इसके द्वारा रचित पद्यका नाम 'धीवरा' मिला है । इसका समय १९८१ की रचनाका नाम २७१ विद्या है । इससे धर्मपराधिका परमेश्वर कुट्ट ७२२ सं ७८ पर है । ये धर्मपराधिका-नामका नाम है । इसका नाम (१) कुट्ट पर (२) नामो मिला है । रचनाका नाम सं १८ विषयः । धर्मपराधिका नाम है कि 'धीवरा' धर्मपराधिका नाम है । यह नाम धर्मपराधिका द्वारा धर्मपराधिका नाम है । (म) नाम धर्मपराधिका नाम धर्मपराधिका नाम नाम । धर्मपराधिका नाम । धीवरा नाम धर्मपराधिका नाम है । इसके नाम धर्मपराधिका नाम है । मि.क-धीवराभराली नाम धर्मपराधिका नाम धर्मपराधिका नाम है । धर्मपराधिका धीवरा नाम धर्मपराधिका नाम है । (स)

क्रमांक	प्रश्नार्थक	कर्ता	निर्दिष्टमूल्य	व्ययप्रमाण	विशेष विवरण यादि
(२६)	(०) राजा करारी काग	मध्यमपत्राकाश	१०३६	२६	मि.क. बागा चौबरो बयसगीरी हुसपान- [दिया] नवरामजीकी पारबोके पालका गुटका १३×६ प्रमुलका है। एतेक राय पानिगिरीसे रहित।
	(१) मरमजोरी व्यापारी	मनुष्यन (कोटमुलसी- निकासी)	"	१०२	पुणे । मोट-कुल मुलसे पानिगुल २ एकोसे पानिगुल पुणे-पुणे कुलकर सोहे पादि भी है। एक व्यापकजीकी पत्राल भी है।
	(४) प्र बर्तन	पत्रालनकराल	"	३	पुणे बने। सेकक (एकोपिता ?)की सिली। बयसगीरी प्रगत १३-१२ १६ ४ ई।
	(२) गलीकरती की कवा	अनमुद्रण	१०११	२२	मि.क.-ज्योतिषी मुन्नाजीमहारीसास बयसपुर । पुणे । गोपीचंदजीकी मोस भीतो १) से। ता १ १२ ३६।
२८	पेकरली (भाका)	अनमुद्रण	१०३३	४८	
२९	मनुष्यनलीमापरी	अनगोपन	१०३३	४८	
३०	विहारी मतनई (बयसगीरी-प्रकरणकठ)	विहारी	१०३३	४८	
३१	मरका -				
	(१) कविबि	केयकराल	१०३३-४३ ७		पुणे चौथे प्रभावसे कुल पाये तक (१२३३ से ४३ तक) केवल १२ अय्यायका प्रमुलका है। हुलके घाले १ मोरीका पर बयसगीरीका पर नया महुाराजा मरमिह मिर्जा राजाज्योतिष महुाराजकुमार जयसिंहके प्रगतिलेक कविप भी है। घालके २ पत्रोंसे मीहपत्रास पयोहारी (यसताबासे)का स्तोत्र भी है जो पुणे है। (सं)
	(२) सीतामायामुकार	पत्रालनकराल		२-३४	
	(३) विपुल (पुणे)			३४-४३	

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	तिथिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण प्राप्ति
११	दंष्ट्रकथा (चैतन्योदयकथा)	रामनारायण	१७७७	६२	अमृतपुरके महाराजा साहूई अन्तर्गतसुहृदी प्रकाशने प्रेषित । कि क—सहायक काहुण द्वारा श्रीमती-नाथकोट्य धर्मिण (पुस्तकी बस्ती) के समस्त अमृतपुरमें भिक्षित । स्वाम् हेमलोम कीदेके पुरोहित-समिति प्राप्त । ऐसी कारण वर पत्नी स्थायीकी सिद्धी ।
१२	विमलप्रसिका	कुलवीरदास	१८१२	८३	कि क—साधु कोटो कीरीनिवासो । एक संछुयें कीर्तिनाई, की कोटीनाईकी है । अमृतपुरी काका वर भिक्षो ।
१३	हृदयभूषिणे रघुद वन			२	की पुरोहितकी कथा करते थे कि यह सोतीनाई बड़ी योगिनी थी । यह उनकी अनेक बलिनी थी । (अ)
१४	वर्मविद्यापत्रिका	रामनारायण	१८वीं	२५	कटे पुराने बर्तोंमें १ छि १ ७ अक्षर एक ।
१५	वदना— (१) कवीरकी काकी (१ बर)	कवीर	१८वीं		देखी काका वर कोटा-का बुरका ।
	(२) हरिदासकी काकी ७	हरिदास	२०		अमृतपुर । कथा हुआ कीर्ति पुस्तका । १ अमृतपुरी (अमृतपुर) बस्ता नहीं है ।
					आदि के ८२ वन भुक्ति है जो प्राप्त नहीं है ।
					पत्नी पर संख्या दर्जित नहीं है । एक इतने कीर्ति है कि पूरे ही कीर्ति हो जाते हैं । अतः इस प्रति का विवरण पुरोहितकी की सुनी के अनुसार ही लिख दिया गया है । (उ)

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	मिथिलनाम	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(१७)	(१) पञ्चाची जाली ७ (२) पोसाकीची जाली १ (३) वरताराम (४) भावकोची जाली ७० (५) जलनाची जाली ४ (६) मुद्रणकीची जाली ४ (७) निरुक्त जाली १७ (८) नवनिर्माण (९) कोटीत सिद्धनाथ (१०) लघुनाथोप ३२ लक्षण (११) बहुभाषाचार्यनाम (१२) गोरक्षनाथकीची प्रची (१३) बरंदागामर्तनाथ ३७ छंद (१४) भरत रोमाचकीची प्रची ३३ जाली (१५) गोपीचमकी जाली १२ (१६) बालभरणीपाचकी की प्रची (१७) काकरबोध (ग्रन्थ)	बसनाथ पोसा वरताराम भावको जलना मुद्रण निरुक्त नवनिर्माण कोटीत सिद्धनाथ लघुनाथोप ३२ लक्षण बहुभाषाचार्यनाम गोरक्षनाथकीची प्रची बरंदागामर्तनाथ ३७ छंद भरत रोमाचकीची प्रची ३३ जाली गोपीचमकी जाली १२ बालभरणीपाचकी की प्रची काकरबोध (ग्रन्थ)	१८५ १७ ३० २५ २७ ३०		एक छंदे कीर छंदे हैं । १४६ तक संख्या है । ६ तक हैं । आगेके नाम नहीं हैं । छंद में "ची गोरक्षनाथ ग्रन्थपर आचार्यसुतंकारे काकरबोध सम्बन्ध । प्रचीव आत्मा व चक्रण है । जोपचार्य नाम्ने है ।
(२०)	मर्दान्त-लघु				
(२१)	गणप-गोरक्षतंकार				

क्रमांक	सम्प्रदाय	कर्ता	सिद्धिप्रसंग	पत्राख्या	विशेष विवरण आदि
(१७)	(२२) महारथ-नोरक्षरसंसार				३१ अक्ष है । अन्तर्गत अक्षका नाम 'आम दीपकोष' लिखा है ।
	(२३) राम-नोरक्षरसंसार				अक्षका अक्ष है ।
	(२४) अक्षसीधरसंसार				अक्षका अक्ष है ।
	(२५) अक्षसीधरसंसार				अक्षका अक्ष है ।
	(२६) अक्षसीधरसंसार				अक्षका अक्ष है ।
	(२७) अक्षसीधरसंसार				अक्षका अक्ष है ।
	(२८) अक्षसीधरसंसार				अक्षका अक्ष है ।
	(२९) अक्षसीधरसंसार				अक्षका अक्ष है ।
	(३०) अक्षसीधरसंसार				अक्षका अक्ष है ।
	(३१) अक्षसीधरसंसार				अक्षका अक्ष है ।
	(३२) अक्षसीधरसंसार				अक्षका अक्ष है ।
	(३३) अक्षसीधरसंसार				अक्षका अक्ष है ।
	(३४) अक्षसीधरसंसार				अक्षका अक्ष है ।
	(३५) अक्षसीधरसंसार				अक्षका अक्ष है ।
	(३६) अक्षसीधरसंसार				अक्षका अक्ष है ।
	(३७) अक्षसीधरसंसार				अक्षका अक्ष है ।
	(३८) अक्षसीधरसंसार				अक्षका अक्ष है ।
	(३९) अक्षसीधरसंसार				अक्षका अक्ष है ।
	(४०) अक्षसीधरसंसार				अक्षका अक्ष है ।
	(४१) अक्षसीधरसंसार				अक्षका अक्ष है ।
	(४२) अक्षसीधरसंसार				अक्षका अक्ष है ।
	(४३) अक्षसीधरसंसार				अक्षका अक्ष है ।
	(४४) अक्षसीधरसंसार				अक्षका अक्ष है ।
	(४५) अक्षसीधरसंसार				अक्षका अक्ष है ।
	(४६) अक्षसीधरसंसार				अक्षका अक्ष है ।
	(४७) अक्षसीधरसंसार				अक्षका अक्ष है ।
	(४८) अक्षसीधरसंसार				अक्षका अक्ष है ।
	(४९) अक्षसीधरसंसार				अक्षका अक्ष है ।
	(५०) अक्षसीधरसंसार				अक्षका अक्ष है ।

क्रमांक	व्यक्तिगत	वर्ग	निर्देशित	वर्ष	विषय
(१०)	(१) राजेश्वरी माता (२५०१ माता) काटवाल पत्नी ११२)	काटवाल	१८४६	१-२	पंजाब है कुछ वीरताईका वर्तमान मुंबई विद्या है ।
	(२) राजेश्वरी माता	काटवाल		२ ०-१६६	राजेश्वरी वर्तमान मुंबई है ।
	(३) राजेश्वरी माता	काटवाल		१६६-४ ६	पुनीव वर्तमान मुंबई है । (स)
	(४) राजेश्वरी माता	काटवाल		४ ६-४६६	है । वर्तमान मुंबई है । (स)
	(५) राजेश्वरी माता	काटवाल		४६६-४६६	है । वर्तमान मुंबई है । (स)
	(६) राजेश्वरी माता	काटवाल		४६६-४६६	है । वर्तमान मुंबई है । (स)
	(७) राजेश्वरी माता	काटवाल		४६६-४६६	है । वर्तमान मुंबई है । (स)
	(८) राजेश्वरी माता	काटवाल		४६६-४६६	है । वर्तमान मुंबई है । (स)
	(९) राजेश्वरी माता	काटवाल		४६६-४६६	है । वर्तमान मुंबई है । (स)
	(१०) राजेश्वरी माता	काटवाल		४६६-४६६	है । वर्तमान मुंबई है । (स)
	(११) राजेश्वरी माता	काटवाल		४६६-४६६	है । वर्तमान मुंबई है । (स)
	(१२) राजेश्वरी माता	काटवाल		४६६-४६६	है । वर्तमान मुंबई है । (स)
	(१३) राजेश्वरी माता	काटवाल		४६६-४६६	है । वर्तमान मुंबई है । (स)
	(१४) राजेश्वरी माता	काटवाल		४६६-४६६	है । वर्तमान मुंबई है । (स)
	(१५) राजेश्वरी माता	काटवाल		४६६-४६६	है । वर्तमान मुंबई है । (स)
	(१६) राजेश्वरी माता	काटवाल		४६६-४६६	है । वर्तमान मुंबई है । (स)
	(१७) राजेश्वरी माता	काटवाल		४६६-४६६	है । वर्तमान मुंबई है । (स)
	(१८) राजेश्वरी माता	काटवाल		४६६-४६६	है । वर्तमान मुंबई है । (स)
	(१९) राजेश्वरी माता	काटवाल		४६६-४६६	है । वर्तमान मुंबई है । (स)
	(२०) राजेश्वरी माता	काटवाल		४६६-४६६	है । वर्तमान मुंबई है । (स)
	(२१) राजेश्वरी माता	काटवाल		४६६-४६६	है । वर्तमान मुंबई है । (स)
	(२२) राजेश्वरी माता	काटवाल		४६६-४६६	है । वर्तमान मुंबई है । (स)
	(२३) राजेश्वरी माता	काटवाल		४६६-४६६	है । वर्तमान मुंबई है । (स)

[illegible]

क्रमांक	प्रश्ननाम	कर्ता	निर्दिष्टमस	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
७	गुरुका— राष्ट्रवासी	दास	१८७८	१८८६	छोटा गुरुका नाम बौट आरामकी बूटीका ४ संयुक्त बीड़ा और दास संयुक्त नामका है। मि. क.—बीकानेरवास काका-नामा सेनास बीकी काकावास यह रक्तार्थकर। दासक्य धनकोसे मिली हुई जिससे निम्नपिपा साविका बनन है गुरुका पला मरी है साको- ११ X ७॥ संयुक्त। कटा हुआ सुखासा गुरुका अयूर। लकी- १ X ५॥ संयुक्त। संयुक्ती कायकका पला। गुरुका लक्य धीरका लकी १ X ६ संयुक्त है येसमकासमीका दिया हुआ। आमनेसे संन निवारो राम आमीकी गोरक गुबीकी रात।
७१	कबीरपंथीनधिया (अनुक्त)		२ वीं	२	
७२	मीताभधिरस्य			११-१८	
७३	गुरुका— (१) रामचरणको यह व भजन १२३ वर (२) गुरुतराजकीके पर (३) बीरका यह १ (४) पवित्रलक्ष्मण १६ पर (५) भावापन ३७ एव (६) भाग्यलक्ष्मणपरम (अभि- प्रसन्नप्राप्त) ३३ एव (७) सेतुभजीका यह व रेखा	रामचरण गुरुतराज मीरा रामचरण " " मीरा	१६३१ " " " " "	६८ १६-७७ ७८-८९ ८९-९९ ९९-९९ ८९-९९	

ପାଠକଙ୍କର ଶ୍ରଦ୍ଧାବିପ୍ଳାବନିପ୍ତାମ — ବିପ୍ଳାବମୁଖର ପାଠକ ନିପତ୍ତମୁଖୀ]

[illegible]

क्रमांक	संख्या	कर्ता	निर्दिष्ट मूल्य	पणतीका	विशेष विवरण यदि
(७३)	(२) पर	पुरवाण बनबन विष्णुनाथ सुबकास काजीलक्ष्मण सुरवास आलीरद दुरिवात परमानन्द जगन्मोहो बाबिब बरीमनाथ रायचरण " " " " " " सूरदास लेखीनाराय मीरवी	१६२१	१२०-१३ १३०-१३२ १३६-१३२ १३२-१३६ १३०-१६ १६ -१६४ १६४-१६० १६०-१०६ १०६-१००	उपार है ।
	(३) पर	(६) सुसमृद्धा २४ छत्र (१) भावप्रसाद ७२ छत्र (१६) विष्णुनाथीराम १२० छत्र (१२) जगन्मोहो २० छत्र (१३) जगन्मोहो ३ छत्र (१४) विष्णुनाथीराम ३० छत्र (१५) जगन्मोहो ३३ छत्र (१६) जगन्मोहो ३४ छत्र (१७) भावप्रसाद			

क्रमांक	विवरण	कर्म	प्रतिफल	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(१)	(१७) गन्तव्य	अरली	१८३१	१७१-१७७	
	"	मुस्ताफा	"	"	
	"	बख्तावर	"	"	
	"	वीरा	"	"	
	"	मुस्ताफा	"	"	
	"	मुस्ताफा	"	"	
(१८) गन्तव्य	अरली	१८३१	१७७-१८३	१७७-१८३	मि. क. - अरली-अरली हाथ-रसमम् ।
(१९) गन्तव्य	अरली	१८३१	१८३-१८९	१८३-१८९	अरली-अरली । मुस्ताफा-अरली हाथ-रसमम् ।
(२०) गन्तव्य	अरली	१८३१	१८९-१९५	१८९-१९५	अरली-अरली । मुस्ताफा-अरली हाथ-रसमम् ।
(२१) गन्तव्य	अरली	१८३१	१९५-२०१	१९५-२०१	अरली-अरली । मुस्ताफा-अरली हाथ-रसमम् ।
(२२) गन्तव्य	अरली	१८३१	२०१-२०७	२०१-२०७	अरली-अरली । मुस्ताफा-अरली हाथ-रसमम् ।
(२३) गन्तव्य	अरली	१८३१	२०७-२१३	२०७-२१३	अरली-अरली । मुस्ताफा-अरली हाथ-रसमम् ।
(२४) गन्तव्य	अरली	१८३१	२१३-२१९	२१३-२१९	अरली-अरली । मुस्ताफा-अरली हाथ-रसमम् ।
(२५) गन्तव्य	अरली	१८३१	२१९-२२५	२१९-२२५	अरली-अरली । मुस्ताफा-अरली हाथ-रसमम् ।
(२६) गन्तव्य	अरली	१८३१	२२५-२३१	२२५-२३१	अरली-अरली । मुस्ताफा-अरली हाथ-रसमम् ।
(२७) गन्तव्य	अरली	१८३१	२३१-२३७	२३१-२३७	अरली-अरली । मुस्ताफा-अरली हाथ-रसमम् ।
(२८) गन्तव्य	अरली	१८३१	२३७-२४३	२३७-२४३	अरली-अरली । मुस्ताफा-अरली हाथ-रसमम् ।
(२९) गन्तव्य	अरली	१८३१	२४३-२४९	२४३-२४९	अरली-अरली । मुस्ताफा-अरली हाथ-रसमम् ।
(३०) गन्तव्य	अरली	१८३१	२४९-२५५	२४९-२५५	अरली-अरली । मुस्ताफा-अरली हाथ-रसमम् ।
(३१) गन्तव्य	अरली	१८३१	२५५-२६१	२५५-२६१	अरली-अरली । मुस्ताफा-अरली हाथ-रसमम् ।

मि. क. - अरली-अरली हाथ-रसमम् ।

अरली-अरली । मुस्ताफा-अरली हाथ-रसमम् ।

(२) अरली-अरली हाथ-रसमम् ।

अरली-अरली हाथ-रसमम् ।

(३) अरली-अरली हाथ-रसमम् ।

(४) अरली-अरली हाथ-रसमम् ।

(५) अरली-अरली हाथ-रसमम् ।

(६) अरली-अरली हाथ-रसमम् ।

(७) अरली-अरली हाथ-रसमम् ।

(८) अरली-अरली हाथ-रसमम् ।

(९) अरली-अरली हाथ-रसमम् ।

(१०) अरली-अरली हाथ-रसमम् ।

(११) अरली-अरली हाथ-रसमम् ।

(१२) अरली-अरली हाथ-रसमम् ।

(१३) अरली-अरली हाथ-रसमम् ।

क्रमांक	व्यवसाय	कार्य	विधिविषय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण यदि
(७४)	(१२) गारोबन्दीके वर १५० वर	गारोबन्दी	१८वीं क	१८०-११२	
	(१३) रैरातबन्दीके वर ८४ वर	रैरात		११५-१२६	
	(१४) रैरातबन्दीकी साकी ४ साकी			१२७वीं	
	(१५) हुंरिवातबन्दीके वर १ १ वर	हुंरिवात निरंकी		१२७-१२६	
	(१६) हुंरिवातबन्दीकी साकी ४	हुंरिवात		१२७वीं	
	(१७) बग वर (राग माक ३ कतरे)	"		१२८-१२८	
	(१८) नापुवरी १२ क्व			१२८-१२६	
	(१९) दलवरीरन्को १ वर			१२९-१२७	
	(२०) कुन्की १८ क्व	कापक		१२७-१२२	
	(२१) नालबन्दीके वर ४		"	१२१वीं	एव म्थेनू ।
	(२२) सतभूनीया एव			१२१-१२२	एव बहुरि ।
	(२३) बल्लाबन्दीका वर	बल्ला		१२२वीं	
	(२४) कान्हाबन्दीका वर २७	कान्हा		१२१-१२७	
	(२५) कान्हाबन्दीकी साकी ६ वर क्व			१२१वीं	
	(२६) सनभेप्रबोव १४ क्व	परीबहाल (बाहुपुर)	"	१२८-१२८	सालमें इस एवका नाम सम्यक्प्रबोव लिखा है ।
	(२७) परीबहालके वर १ वर			१६ -१७	
	३ एव				
	(२८) परीबहालकी साकी ४८ क्व			१७०-१७३	
	(२९) बमबारीवाल काबाके वर २	बमबारीवाल काबा	"	१७२वीं	
	२ एव				

क्रमांक	समाचारिका	कर्म	निर्माणस्थ	प्रकाशक	निर्देशक विवरण
(७४)	(१) राधाकृष्णजीका घर (२) राधा २ राधा	राधाकृष्ण	१७२-१७३		
(७५)	(१) गुलाबजीका घर (२) गुलाब १ राधा	गुलाब	१७३		
(७६)	(१) आशाजीका घर (२) आशा १ राधा	आशा	१७४-१७५		
(७७)	(१) अम्बाजीका घर (२) अम्बा १ राधा	अम्बा	१७५		
(७८)	(१) अम्बाजीका घर (२) अम्बा १ राधा	अम्बा	१७६-१७७		
(७९)	(१) अम्बाजीका घर (२) अम्बा १ राधा	अम्बा	१७७-१७८		
(८०)	(१) अम्बाजीका घर (२) अम्बा १ राधा	अम्बा	१७८-१७९		
(८१)	(१) अम्बाजीका घर (२) अम्बा १ राधा	अम्बा	१८०-१८१		
(८२)	(१) अम्बाजीका घर (२) अम्बा १ राधा	अम्बा	१८२-१८३		
(८३)	(१) अम्बाजीका घर (२) अम्बा १ राधा	अम्बा	१८४-१८५		
(८४)	(१) अम्बाजीका घर (२) अम्बा १ राधा	अम्बा	१८६-१८७		
(८५)	(१) अम्बाजीका घर (२) अम्बा १ राधा	अम्बा	१८८-१८९		
(८६)	(१) अम्बाजीका घर (२) अम्बा १ राधा	अम्बा	१९०-१९१		
(८७)	(१) अम्बाजीका घर (२) अम्बा १ राधा	अम्बा	१९२-१९३		
(८८)	(१) अम्बाजीका घर (२) अम्बा १ राधा	अम्बा	१९४-१९५		
(८९)	(१) अम्बाजीका घर (२) अम्बा १ राधा	अम्बा	१९६-१९७		
(९०)	(१) अम्बाजीका घर (२) अम्बा १ राधा	अम्बा	१९८-१९९		
(९१)	(१) अम्बाजीका घर (२) अम्बा १ राधा	अम्बा	२००-२०१		
(९२)	(१) अम्बाजीका घर (२) अम्बा १ राधा	अम्बा	२०२-२०३		
(९३)	(१) अम्बाजीका घर (२) अम्बा १ राधा	अम्बा	२०४-२०५		
(९४)	(१) अम्बाजीका घर (२) अम्बा १ राधा	अम्बा	२०६-२०७		
(९५)	(१) अम्बाजीका घर (२) अम्बा १ राधा	अम्बा	२०८-२०९		
(९६)	(१) अम्बाजीका घर (२) अम्बा १ राधा	अम्बा	२१०-२११		
(९७)	(१) अम्बाजीका घर (२) अम्बा १ राधा	अम्बा	२१२-२१३		
(९८)	(१) अम्बाजीका घर (२) अम्बा १ राधा	अम्बा	२१४-२१५		
(९९)	(१) अम्बाजीका घर (२) अम्बा १ राधा	अम्बा	२१६-२१७		
(१००)	(१) अम्बाजीका घर (२) अम्बा १ राधा	अम्बा	२१८-२१९		

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	लिपिप्रमाण	पुस्तक्य	विशेष विवरण आदि
(४४)	(४८) अथ कठोरको शास्त्री, (शास्त्री ७१ र ७२)	करीब शैल	देवनागरी	१८८-१८९	
	(४९) शास्त्री मधुसूदनजीका पद व शास्त्री २४ पद शास्त्री ३	मधुसूदनको	"	१८९-१९०	
	(५०) शेष भावरीका पद ३	भावरीजी	"	१९०-१९१	
	(५१) विद्योक्तमन्त्रिका पद ३	विद्योक्तम	"	१९१-१९२	
	(५२) लोभजीका पद ३	लोभजी	"	१९३-१९४	पुस्तकाली भाषाये ।
	(५३) अन्वय महिमा शास्त्री	अनुपम	"	१९८-१९९	
	(५४) भरको पौस्तिका पद ३	भरजी	"	१९९-२००	
	(५५) श्रीमन्त्रिका पद १	श्रीमन्त्र	"	२००-२०१	भाषाये ।
	(५६) अक्षरपञ्चमीका पद २	अक्षरपञ्च	"	"	
	(५७) श्रीमन्त्रिका पद १	श्रीमन्त्र	"	"	पुस्तकाली भाषाये ।
	(५८) अक्षरपञ्चमीका पद १	अक्षरपञ्च	"	"	
	(५९) देवीरासजीका पद २	देवीरास	"	२०१-२०२	
	(६०) अक्षरपञ्चमीका पद ३	अक्षरपञ्च	"	२०२-२०३	पुस्तकाली भाषाये योग्यतया है ।
	(६१) अक्षरपञ्चमीका पद ३	अक्षरपञ्च	"	२०३-२०४	पुस्तकाली भाषाये ।
	(६२) अक्षरपञ्चमीका पद ३	अक्षरपञ्च	"	२०४-२०५	
	(६३) अक्षरपञ्चमीका पद ३	अक्षरपञ्च	"	२०५-२०६	
	(६४) अक्षरपञ्चमीका पद ३	अक्षरपञ्च	"	२०६-२०७	
	(६५) अक्षरपञ्चमीका पद ३	अक्षरपञ्च	"	२०७-२०८	
	(६६) अक्षरपञ्चमीका पद ३	अक्षरपञ्च	"	२०८-२०९	
	(६७) अक्षरपञ्चमीका पद ३	अक्षरपञ्च	"	२०९-२१०	
	(६८) अक्षरपञ्चमीका पद ३	अक्षरपञ्च	"	२१०-२११	
	(६९) अक्षरपञ्चमीका पद ३	अक्षरपञ्च	"	२११-२१२	
	(७०) अक्षरपञ्चमीका पद ३	अक्षरपञ्च	"	२१२-२१३	

क्रमांक	कार्यक्रम	काल	प्रतिष्ठान	परिणाम	उपलब्ध है।
(७४)	(१०) मेनोकोका घर ३		मेनोको	४ १०१	
	(११) मेनोकोका घर ३		मेनोको	"	
	(१२) मेनोकोका घर ३		मेनोको	"	
	(१३) मेनोकोका घर ३		मेनोको	"	
	(१४) मेनोकोका घर ३		मेनोको	"	
	(१५) मेनोकोका घर ३		मेनोको	"	
	(१६) मेनोकोका घर ३		मेनोको	"	
	(१७) मेनोकोका घर ३		मेनोको	"	
	(१८) मेनोकोका घर ३		मेनोको	"	
	(१९) मेनोकोका घर ३		मेनोको	"	
	(२०) मेनोकोका घर ३		मेनोको	"	
	(२१) मेनोकोका घर ३		मेनोको	"	
	(२२) मेनोकोका घर ३		मेनोको	"	
	(२३) मेनोकोका घर ३		मेनोको	"	
	(२४) मेनोकोका घर ३		मेनोको	"	
	(२५) मेनोकोका घर ३		मेनोको	"	
	(२६) मेनोकोका घर ३		मेनोको	"	
	(२७) मेनोकोका घर ३		मेनोको	"	
	(२८) मेनोकोका घर ३		मेनोको	"	
	(२९) मेनोकोका घर ३		मेनोको	"	
	(३०) मेनोकोका घर ३		मेनोको	"	

सो राग ।

४९९-४९९

१२९९

अरवली

(१५) १५

४९९-४९९

१२९९

अरवली

(१५) १५

४९९-४९९

१२९९

अरवली

(१५) १५

४९९-४९९

१२९९

अरवली

(१५) १५

४९९-४९९

१२९९

अरवली

(१५) १५

४९९-४९९

१२९९

अरवली

(१५) १५

४९९-४९९

१२९९

अरवली

(१५) १५

४९९-४९९

१२९९

अरवली

(१५) १५

४९९-४९९

१२९९

अरवली

(१५) १५

४९९-४९९

१२९९

अरवली

(१५) १५

४९९-४९९

१२९९

अरवली

(१५) १५

४९९-४९९

१२९९

अरवली

(१५) १५

४९९-४९९

१२९९

अरवली

(१५) १५

४९९-४९९

१२९९

अरवली

(१५) १५

४९९-४९९

१२९९

अरवली

(१५) १५

४९९-४९९

१२९९

अरवली

(१५) १५

४९९-४९९

१२९९

अरवली

(१५) १५

४९९-४९९

१२९९

अरवली

(१५) १५

४९९-४९९

१२९९

अरवली

(१५) १५

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कारि	निरूपिताम	पुस्तकका	विशेष विवरण यादि
(७४)	(१२४) देवनागरीकी खोजी ४	देवनाग	१८८०-४४	४७४५	इसके मादिये "कीरासी पड़ना बीजा मारना का सर्वेकी कथा" लिखा है ।
	(१२५) पृथ्वीमानकी खोजी १५	पृथ्वीमान	"	४७४६-४७४७	
	(१२६) गोरखनागकी खोजी- खण्ड ६	गोरखनाग	"	४७४८-४७४९	
	(१२७) बरधरासराज का ७८	बरधरासराज	"	४७५०-४७५१	
	(१२८) राजपूतनागरीकी खोजी- (राजपूतकी) का ४२३	"	"	४७५२-४७५३	
	(१२९) कायाप्राप्तिकार खण्ड ७ बड़े	कायाप्राप्तिकार (राजपूतकी)	"	४७५४-४७५५	आरक्ष कड़ीका गुण प्रकरण ।
	(१३०) मङ्गा रचयित का १६१		"	४७५६-४७५७	
	(१३१) मन्त्रालय खण्ड २२३		"	४७५८-४७५९	
	(१३२) राजकीकी २४ पृष्ठीका- खण्ड ३३		"	४७६०-४७६१	
	(१३३) मोहनिर्मुक्तिकार खण्ड १२६		"	४७६२-४७६३	
	(१३४) मोहनिर्मुक्तिकार का ७८	कायाप्राप्तिकार (राजपूतकी)	"	४७६४-४७६५	पत्र प्रकाश है ।
	(१३५) मोहनिर्मुक्तिकार का ७८	कायाप्राप्तिकार (राजपूतकी)	"	४७६६-४७६७	
	(१३६) मोहनिर्मुक्तिकार का ७८	कायाप्राप्तिकार (राजपूतकी)	"	४७६८-४७६९	
	(१३७) मोहनिर्मुक्तिकार का ७८	कायाप्राप्तिकार (राजपूतकी)	"	४७७०-४७७१	
	(१३८) मोहनिर्मुक्तिकार का ७८	कायाप्राप्तिकार (राजपूतकी)	"	४७७२-४७७३	
	(१३९) मोहनिर्मुक्तिकार का ७८	कायाप्राप्तिकार (राजपूतकी)	"	४७७४-४७७५	

ક્રમ નં	વર્ણનામ	જાતી	રિપિયમલ	પગલુંકયા	વિષય ચિત્રણ વાદિ
(૭૫)	(૧૧) બેનગીનો ભાગી ર	બેનગી	૧૮૫૦	૨૩૧૧-૨૩૧૭	રાજકોશી ભુતિલે છે .
	(૧૨) બેનગીને ભવેવા ર		"	૨૩૧૭-૨૩૨૩	
	(૧૩) બેનગીના કાપલા ર		"	૨૩૨૩-૨૩૨૯	
	(૧૪) રીમાગીના વર ર	રીમાગી		૨૩૨૯-૨૩૩૫	સબ ૧ ભારતી છે .
	(૧૫) કાગ : ભાદર (મિત્રી)	સબક કાગિ			
		(૧) કુચલ			
		(૨) કાલના			
		(૩) રાગગીચલ			
		(૪) ભરલક			
	(૧૬) રાગગીચલ	રાગગી		૨૩૩૫-૨૩૪૧	
	(૧૭) રાગગીચલ	રાગગી		૨૩૪૧-૨૩૪૭	
	(૧૮) રાગગીચલ	રાગગી		૨૩૪૭-૨૩૫૩	
	(૧૯) રાગગીચલ	રાગગી		૨૩૫૩-૨૩૫૯	
	(૨૦) રાગગીચલ	રાગગી		૨૩૫૯-૨૩૬૫	
	(૨૧) રાગગીચલ	રાગગી		૨૩૬૫-૨૩૭૧	
	(૨૨) રાગગીચલ	રાગગી		૨૩૭૧-૨૩૭૭	
	(૨૩) રાગગીચલ	રાગગી		૨૩૭૭-૨૩૮૩	
	(૨૪) રાગગીચલ	રાગગી		૨૩૮૩-૨૩૮૯	
	(૨૫) રાગગીચલ	રાગગી		૨૩૮૯-૨૩૯૫	
	(૨૬) રાગગીચલ	રાગગી		૨૩૯૫-૨૪૦૧	
	(૨૭) રાગગીચલ	રાગગી		૨૪૦૧-૨૪૦૭	
	(૨૮) રાગગીચલ	રાગગી		૨૪૦૭-૨૪૧૩	
	(૨૯) રાગગીચલ	રાગગી		૨૪૧૩-૨૪૧૯	
	(૩૦) રાગગીચલ	રાગગી		૨૪૧૯-૨૪૨૫	
	(૩૧) રાગગીચલ	રાગગી		૨૪૨૫-૨૪૩૧	
	(૩૨) રાગગીચલ	રાગગી		૨૪૩૧-૨૪૩૭	
	(૩૩) રાગગીચલ	રાગગી		૨૪૩૭-૨૪૪૩	
	(૩૪) રાગગીચલ	રાગગી		૨૪૪૩-૨૪૪૯	
	(૩૫) રાગગીચલ	રાગગી		૨૪૪૯-૨૪૫૫	
	(૩૬) રાગગીચલ	રાગગી		૨૪૫૫-૨૪૬૧	
	(૩૭) રાગગીચલ	રાગગી		૨૪૬૧-૨૪૬૭	
	(૩૮) રાગગીચલ	રાગગી		૨૪૬૭-૨૪૭૩	
	(૩૯) રાગગીચલ	રાગગી		૨૪૭૩-૨૪૭૯	
	(૪૦) રાગગીચલ	રાગગી		૨૪૭૯-૨૪૮૫	
	(૪૧) રાગગીચલ	રાગગી		૨૪૮૫-૨૪૯૧	
	(૪૨) રાગગીચલ	રાગગી		૨૪૯૧-૨૪૯૭	
	(૪૩) રાગગીચલ	રાગગી		૨૪૯૭-૨૫૦૩	
	(૪૪) રાગગીચલ	રાગગી		૨૫૦૩-૨૫૦૯	
	(૪૫) રાગગીચલ	રાગગી		૨૫૦૯-૨૫૧૫	
	(૪૬) રાગગીચલ	રાગગી		૨૫૧૫-૨૫૨૧	
	(૪૭) રાગગીચલ	રાગગી		૨૫૨૧-૨૫૨૭	
	(૪૮) રાગગીચલ	રાગગી		૨૫૨૭-૨૫૩૩	
	(૪૯) રાગગીચલ	રાગગી		૨૫૩૩-૨૫૩૯	
	(૫૦) રાગગીચલ	રાગગી		૨૫૩૯-૨૫૪૫	
	(૫૧) રાગગીચલ	રાગગી		૨૫૪૫-૨૫૫૧	
	(૫૨) રાગગીચલ	રાગગી		૨૫૫૧-૨૫૫૭	
	(૫૩) રાગગીચલ	રાગગી		૨૫૫૭-૨૫૬૩	
	(૫૪) રાગગીચલ	રાગગી		૨૫૬૩-૨૫૬૯	
	(૫૫) રાગગીચલ	રાગગી		૨૫૬૯-૨૫૭૫	
	(૫૬) રાગગીચલ	રાગગી		૨૫૭૫-૨૫૮૧	
	(૫૭) રાગગીચલ	રાગગી		૨૫૮૧-૨૫૮૭	
	(૫૮) રાગગીચલ	રાગગી		૨૫૮૭-૨૫૯૩	
	(૫૯) રાગગીચલ	રાગગી		૨૫૯૩-૨૬૦૦	
	(૬૦) રાગગીચલ	રાગગી		૨૬૦૦-૨૬૦૬	
	(૬૧) રાગગીચલ	રાગગી		૨૬૦૬-૨૬૧૨	
	(૬૨) રાગગીચલ	રાગગી		૨૬૧૨-૨૬૧૮	
	(૬૩) રાગગીચલ	રાગગી		૨૬૧૮-૨૬૨૪	
	(૬૪) રાગગીચલ	રાગગી		૨૬૨૪-૨૬૩૦	
	(૬૫) રાગગીચલ	રાગગી		૨૬૩૦-૨૬૩૬	
	(૬૬) રાગગીચલ	રાગગી		૨૬૩૬-૨૬૪૨	
	(૬૭) રાગગીચલ	રાગગી		૨૬૪૨-૨૬૪૮	
	(૬૮) રાગગીચલ	રાગગી		૨૬૪૮-૨૬૫૪	
	(૬૯) રાગગીચલ	રાગગી		૨૬૫૪-૨૬૬૦	
	(૭૦) રાગગીચલ	રાગગી		૨૬૬૦-૨૬૬૬	
	(૭૧) રાગગીચલ	રાગગી		૨૬૬૬-૨૬૭૨	
	(૭૨) રાગગીચલ	રાગગી		૨૬૭૨-૨૬૭૮	
	(૭૩) રાગગીચલ	રાગગી		૨૬૭૮-૨૬૮૪	
	(૭૪) રાગગીચલ	રાગગી		૨૬૮૪-૨૬૯૦	
	(૭૫) રાગગીચલ	રાગગી		૨૬૯૦-૨૬૯૬	
	(૭૬) રાગગીચલ	રાગગી		૨૬૯૬-૨૭૦૨	
	(૭૭) રાગગીચલ	રાગગી		૨૭૦૨-૨૭૦૮	
	(૭૮) રાગગીચલ	રાગગી		૨૭૦૮-૨૭૧૪	
	(૭૯) રાગગીચલ	રાગગી		૨૭૧૪-૨૭૨૦	
	(૮૦) રાગગીચલ	રાગગી		૨૭૨૦-૨૭૨૬	
	(૮૧) રાગગીચલ	રાગગી		૨૭૨૬-૨૭૩૨	
	(૮૨) રાગગીચલ	રાગગી		૨૭૩૨-૨૭૩૮	
	(૮૩) રાગગીચલ	રાગગી		૨૭૩૮-૨૭૪૪	
	(૮૪) રાગગીચલ	રાગગી		૨૭૪૪-૨૭૫૦	
	(૮૫) રાગગીચલ	રાગગી		૨૭૫૦-૨૭૫૬	
	(૮૬) રાગગીચલ	રાગગી		૨૭૫૬-૨૭૬૨	
	(૮૭) રાગગીચલ	રાગગી		૨૭૬૨-૨૭૬૮	
	(૮૮) રાગગીચલ	રાગગી		૨૭૬૮-૨૭૭૪	
	(૮૯) રાગગીચલ	રાગગી		૨૭૭૪-૨૭૮૦	
	(૯૦) રાગગીચલ	રાગગી		૨૭૮૦-૨૭૮૬	
	(૯૧) રાગગીચલ	રાગગી		૨૭૮૬-૨૭૯૨	
	(૯૨) રાગગીચલ	રાગગી		૨૭૯૨-૨૭૯૮	
	(૯૩) રાગગીચલ	રાગગી		૨૭૯૮-૨૮૦૪	
	(૯૪) રાગગીચલ	રાગગી		૨૮૦૪-૨૮૧૦	
	(૯૫) રાગગીચલ	રાગગી		૨૮૧૦-૨૮૧૬	
	(૯૬) રાગગીચલ	રાગગી		૨૮૧૬-૨૮૨૨	
	(૯૭) રાગગીચલ	રાગગી		૨૮૨૨-૨૮૨૮	
	(૯૮) રાગગીચલ	રાગગી		૨૮૨૮-૨૮૩૪	
	(૯૯) રાગગીચલ	રાગગી		૨૮૩૪-૨૮૪૦	
	(૧૦૦) રાગગીચલ	રાગગી		૨૮૪૦-૨૮૪૬	

અસલ છે . ગુપ્ત રાજાસિંહ કાયા કાયા રે .

વિષયક વાદ છે .

કઈ ભંગ છે .

રાજકોશી બીજમ-ચરિત્રે સમગ્ર વાદે સર્વેય છે . રાજકોશી બીજમે બી રેવો .

क्रमांक	सम्बन्धिता	कर्म	निमित्तियम	पञ्चसखा	विशेष विवरण यादि
(७५)	(१२७) रजस्थानी के पर तथा लक्ष्मी	रजस्थ	१८५१ ई	१७९२-१७९४	
	(१२८) रजस्थानी के साक्षी	"	"	१७९५ ई	
	(१२९) रजस्थानी के लक्ष्मी	"	"	"	
	(१३०) रजस्थानी का कनिका पुष्प	योगेश्वरदास	"	१७९४-१७९६	
	(१३१) ब्रह्मसोपानिका ५३ अक्षर		"	१७९६-१७९८	
	(१३२) गोविन्दजी के लक्ष्मी ४		"	१७९८-१७९९	
	(१३३) गोविन्दजी के पर ३		"	१७९९ ई	
	(१३४) परसोपानिका ५३	ब्रह्मसोपानिका	"	१७९९-१८०१	
	(१३५) जगन्नाथ ७२ अक्षर	परसोपानिका ?	"	१८०१-१८०२	
	(१३६) रजस्थानी के साक्षी २	रजस्थ	"	१८०२ ई	
	(१३७) विष्णुजी के लक्ष्मीसिद्धि २७ अक्षर		"	१८०२-१८०३	
	(१३८) गुरुदेवसोपानिका ८ अक्षर	गुरुदेवसोपानिका	"	१८०३-१८०४	
	(१३९) गुरुदेवसोपानिका ८ अक्षर	गुरुदेवसोपानिका	"	१८०४ ई	
	(१४०) गुरुदेवसोपानिका ८ अक्षर	गुरुदेवसोपानिका	"	१८०४ ई	
	(१४१) गुरुदेवसोपानिका ८ अक्षर	गुरुदेवसोपानिका	"	१८०४ ई	
	(१४२) गुरुदेवसोपानिका ८ अक्षर	गुरुदेवसोपानिका	"	१८०४ ई	
	(१४३) गुरुदेवसोपानिका ८ अक्षर	गुरुदेवसोपानिका	"	१८०४ ई	
	(१४४) गुरुदेवसोपानिका ८ अक्षर	गुरुदेवसोपानिका	"	१८०४ ई	
	(१४५) गुरुदेवसोपानिका ८ अक्षर	गुरुदेवसोपानिका	"	१८०४ ई	
	(१४६) गुरुदेवसोपानिका ८ अक्षर	गुरुदेवसोपानिका	"	१८०४ ई	
	(१४७) गुरुदेवसोपानिका ८ अक्षर	गुरुदेवसोपानिका	"	१८०४ ई	
	(१४८) गुरुदेवसोपानिका ८ अक्षर	गुरुदेवसोपानिका	"	१८०४ ई	
	(१४९) गुरुदेवसोपानिका ८ अक्षर	गुरुदेवसोपानिका	"	१८०४ ई	
	(१५०) गुरुदेवसोपानिका ८ अक्षर	गुरुदेवसोपानिका	"	१८०४ ई	

गुरुदेवसोपानिका ८ अक्षर

क्रमांक	ग्रन्थनाम	वर्ग	निर्णयमात्र	पत्रसंख्या	विषय विवरण यादि
(७४)	(१७४) जयजयश्रीका ४३ र (१७५) गुरुरराजश्रीका ४३	जयजयश्री गुरुरराज	१८४०-४१	३८६८	गुरुराद्विषय । २८५ ४३ गुरुरकी मद्रिमा है माये माने नहीं है । आवा आता है कि प्यो गुरुरकाको ही भिरर बंवाई गई है । रोठेके माने लो गये सो लो कहो तो मिलते ? गुरुरने पर्वोकी प्योरी पोकी है ।
७५	(१) गिर-ज्योदान्तकार पत्र ४ (२) गुरुरकी जयजयश्रीका ४३ ४३४४ (गुरुर १३ कोर एक ४३४४)	मद्रिमाजय जयजयश्रीका	१८४०-४१ "	१-३ ३-४	
७६	गुरुरका— (१) गुरुरकी भागी (मद्रिमा) पत्र ३७ भागी ३३ र (२) ४३४४	गुरुरकी "	१८४०-४१ "		मद्रिमा भागके पात्रों है । गुरुरकी भागी भागी पत्रकाके मद्रिमा ३७ ३८ ३९ तककी भागी नहीं है इतनी रण गयी है । माये पत्र भाय लानुक्त है । पत्रगु हास हो भद्रका भीषकीय न शोक पाया हुआ है । मोर मद्रिमा मोकेनेर भाटलको माने बाईकी मद्रिमा कुमारी से माये हुआ ।
	(३) गुरुरकी भागी पत्र ४३ व भागी ३६७ (४) गुरुरकीका ४३	गुरुरकी "	"	१-३ ३-४	माया: पुत्र मिली है । रोठेके पत्रोंको शोक का गई है । मद्रिमा ३४ की रणकी तक ।

क्रमांक	विवरण	कला	सिद्धिमान	पत्रांक	विवरण
(२७)	() बाराहवाली १३ गाँव	भुरलीवाल	१६वीं अ २	२-२६	प्रत्येक गाँव के नामों में 'वा' से भगत भुरलीवाल कहते हैं। यह भगत भुरलीवाल से निकला हुआ है और भुरलीवाल का दुकाना जाता है।
(१)	बाराहवाली १२ गाँव	पञ्चतकपुत्र	"	२६-२८	बाराहवाली गाँव से निकला जाता है।
(२)	बाराहवाली १३ गाँव	कागोवाल	"	२८-३३	कागोवाल गाँव से निकला जाता है।
(३)	बाराहवाली १३ गाँव	मयमको	"	३३-४३	मयमको गाँव से निकला जाता है।
(४)	बाराहवाली १२ गाँव	रघुपति	"	४३-४५	रघुपति गाँव से निकला जाता है।
(५)	बाराहवाली १२ गाँव	भुरलीवाल	"	४५-४६	भुरलीवाल गाँव से निकला जाता है।
(६)	बाराहवाली १३ गाँव	भगतभुरलीवाल	"	४६-४७	भगतभुरलीवाल गाँव से निकला जाता है।
(७)	बाराहवाली १३ गाँव	भगतभुरलीवाल	"	४७-४८	भगतभुरलीवाल गाँव से निकला जाता है।
(८)	बाराहवाली १३ गाँव	भगतभुरलीवाल	"	४८-४९	भगतभुरलीवाल गाँव से निकला जाता है।
(९)	बाराहवाली १३ गाँव	भगतभुरलीवाल	"	४९-५०	भगतभुरलीवाल गाँव से निकला जाता है।
(१०)	बाराहवाली १३ गाँव	भगतभुरलीवाल	"	५०-५१	भगतभुरलीवाल गाँव से निकला जाता है।
(११)	बाराहवाली १३ गाँव	भगतभुरलीवाल	"	५१-५२	भगतभुरलीवाल गाँव से निकला जाता है।
(१२)	बाराहवाली १३ गाँव	भगतभुरलीवाल	"	५२-५३	भगतभुरलीवाल गाँव से निकला जाता है।
(१३)	बाराहवाली १३ गाँव	भगतभुरलीवाल	"	५३-५४	भगतभुरलीवाल गाँव से निकला जाता है।
(१४)	बाराहवाली १३ गाँव	भगतभुरलीवाल	"	५४-५५	भगतभुरलीवाल गाँव से निकला जाता है।
(१५)	बाराहवाली १३ गाँव	भगतभुरलीवाल	"	५५-५६	भगतभुरलीवाल गाँव से निकला जाता है।

क्रमांक	कृष्यनाम	काल	निर्दिष्टमय	पञ्चसंज्ञा	विशेष विवरण यादि
(७२)	(१) कविप्रिया (पद्म)	केसवनाथ	१९५१	१२-६६	किरी मधुरानाले कोवेसीसि प्राप्ता श्रीमते बालेसे । बाले का बाला । कई पत्रे भरी । मि. क.-कल्याणबासराय गरीब पुरोहिताका । मि. ल्या.—दायानर । इससे प्रत्येक कविप्रिया तथा कविप्रियाको प्रकटित १२ पुष्प संभव है । (सं.)
८१	हुनोररातो (१) स्वरोप (२) रसकेतु (राजसनाकेल) समस्या प्रकट प्रकट प्रकट २१ पौष्टे । (३) बाले मलिक मुकाय २५ पौष्टे (४) कविप्रिया ७१ कविप्र (५) पुष्पान्जलि (हितोपदेशकपञ्चमुखा)	पौष्ट कवि रसराशि रसराशि प्राकाशनामपुष्प (बाली कवि उपनाम) गुरावर	१९५७ १९६२ १९६४ १९६५ १९६७	४५ १-२ १-२ १-१ १-११ १-१५७	मि. क.—पौष्पीबाबू दया कपूर । मधुराबाबू पुष्पीप्रिया कपूरके लिए । २८ संभवते रचित । रचनाकाल १९४१ संवत् । यह कवि मल- किमोर प्रकट प्रती हुई पुस्तकको प्रकट है । यह बहुत सुन्दर काव्य है । रचित-मधुराबा रमुनाबाबूकोका यह कविप्रिया प्रकट रचित है । कपूर-पुष्प कपूर-मधुराबा रामप्रियाका यह पौर बोधा इतिहास भी इससे रचित है । रोचक मनोरंजक, रसोन्म कपूर है ।
८२	रमुनाबाबू		१९६४		

क्र.सं.	व्यवस्थापक	कर्मचारी	निविदापत्र	व्ययपूर्विका	विशेष विवरण प्राप्ति
८३	(१) प्रमुखपाल	अनगोपाल		१-११	यसो गुरुका सविनोदके राउ रामनारायण १) सँ सविनोद सँ दियमा का अरु हाम राउ गुरोद्विगत पोषीनाचकीके साथ उनका पुताउ- लकल देपाम सविनोद सए दे, लकल यसो संकल १२०३ के कागज मागकी अउर है ।
	(२) सेमी (हल-चलिकी)	पुत्रीराय राउरी		२१-४२	
	(३) विनोद	बाबुदुर्ग राउरी		४२-४१	
	(४) गणनाकी पोता			४३-४१	
	(५) अनुसोदो कायम			४४-४३	
	(६) अनुसोदो अनुसोद			४५-४३	
८४	मानसुद	गुवाराका	१२०३	२६	यसो काउर-साविनी है जिसमे ४५५ हो स्मोड ले सए है ।
८५	पानकोप	काका देवनाथी	१२४१	१३४	गुण वल्लु सपुड; लकल पोताको कुप-कुप दीका ओर अकोके विनोदो हो है ।
८६	काउर ४२-४३		२ बी.ग		ओर पुर्वित; संकल १२२९ में भिन्ना ।
८७	काउर राउरमावली				सुदुरका अलसिहको लक है । १५ पने प्राया सपुड है ।
८८	होमी हुवाका	राउ-होमीरायणी			हामे भिन्ना लकलो पुर्व सुत्रो से प्राप्त १ हुकाउ होलोके गोलीका संकल है; (म)
८९	गुवाराकोका	काका संकली अनुसोद	१२६२	२	हल गुरुके के पोले कुप सपुड अविनामी भिन्ना है ।

क्रमांक	ग्रन्थनामा	कला	लिपियुगम	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(१)	(१) मय्यामलीकवा	अनुपूर्वकाल	१७७७	१-२१	इस पुस्तके के आदिमें १९ पत्रोंमें विनपर आमाते संख्या लगी है। रायभाभा एवं रसविकारा नामक दो इतिहास मिलित हैं। रायभाभा का विधिकाल १ है तथा रसविकारा १७७७ है। (२) लि क देवीवास कामध बरेलाको पोकीसे प्रसिद्धिपुस्तक। लि क देवीवास कायक (२)
	(२) सोपुबदेक	अनुपूर्वकाल	"	६९-१२	
	(३) भाषाशास्त्र-कौमुदिकाली कवा	आत्मय	"	१६-१२३	
	(४) नैवनाल	आदीय	"	१२२-१२७	
	(५) रघु संवत्ता आदि		"	१२७-१६	
	(६) दोला-भाष्यकी की बात सोपु	कुसुमनाम	१७	१६-२१४	२. का १६७७ २. का जेतसमर लि क सय
	(७) धीरावभाषाभास्योत्र	विद्वत्पदार्थसिद्धिमेव			राससोत्र 'पककाराव
	(८) भाषाशास्त्री	इत्या	१७८६	१-४	
	(९) सपुदे-गुरी के कविता			२-६	
	(१०) रघुकावित	कवकीय भूषण गद कवीर		२७-१२	७ व १ की पत्र समाप्त।
	(११) कवितादि (सिद्धमन्त्रकाल-शास्त्राधिक इत्यादि)	नरली कवि	"	१३-१८	
	(१२) कविता एवं गूढा	एनेक कवि		१६-२	
	(१३) गुल-मुद्रकवि	नरनामक		२१-२३	
	(१४) हरिलालकला	सपुदेनाथ	"	२२-२६	

क्रमांक	प्रश्ननाम	कला	निर्णयमात्र	पत्रसंख्या	विशेष विवरण यदि
(२१)	(२१) हीमाली कविता (अनुसूचकरीके कवि)	आलेख कवि	१७२६	१७-७	हलमें 'अविनाश' नामक उपन्यास तथा एकत्र प्रासादिक शोध एवं विचारोन्मेषिके एक शोध शोधों पर प्रकाशिका है। (सं)
	(२२) कविता उपन्यासिकाली	कवि दीर्घ	"	७०-७१	अन्यथा काव्य।
	(२३) लघुकाव्य कविता	अनुसूचकरी	"	७१-७२	
	(२४) अनुसूचकरी	अनुसूचकरी	"	१-३७	निम्न स्था—विशेषपुर साहित्यिकी दीर्घावली- प्रकाशिका।
२२	(१) अनुसूचकरी	"	१८२६	१८-२६	निम्न स्था—अन्यथावली पाठ
	(२) विविधविषय काव्य	विशेष कवि	"	२७-१८२	" स्था—सं १९२१ विषय १ १४।
	(३) उपन्यासिकी काव्य	कवि	१८२६	१७५	यह प्रसिद्धि १८२३को प्रसिद्धि लिखित है।
२३	अनुसूचकरी	अनुसूचकरी	सं १८३६		इसी पुस्तकमें ३६ एकत्र एक शोध है जो अन्यथावली काव्य द्वारा अनेकानेके कवि लिखे हुए हैं। (सं)
			२. अनुसूचकरी	१-१	१ ३ एक शोध लिखित है।
२४	(१) दीर्घ काव्य (१ कविता दीर्घावली अनुसूचकरी उपन्यास- कवि की विविध अनुसूचकरी कवि काव्य)	अनुसूचकरी	१८३६	१७-१७	
	(२) दीर्घावली अनुसूचकरी उपन्यास- कवि काव्य	अनुसूचकरी	"	"	राज्यपाल आचार्यके उपन्यासमें।
	(३) कविता		"	१७-२७	

राज्यपाल आचार्यसाहित्यसंग्रह - विद्याभवन-काठ-मैथिल-मुद्रा]

क्रमांक	वस्तुनाम	वर्ग	निगलनमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(१४)	(४) मुद्राभवन राजकीयी हस्त निर्देशोरी (५) नीति (६) विष्णुसहस्रनाम कवित्त (७) हस्त कवित्त (८) राजकविता (९) वरनाम (१०) कविकावली (११) रत्नविद्या (१२) सायबखार (राजविराजतीरी) साची कवि	साङ्ग मन्त्रालयकीरी बही मुद्राशाल मुद्रा विवरण आदि मुद्राशाल राजीनीलान जोवाल केन्द्रवाल (राजकविता)	१२वीं स	२७-४५ १-२ ३-७ ७-२४ २४-२८ १६ ४६ १७+४=२१	प्रत्येक राजकीय सहाय्यार्थ । १२६ पत्रोंमें रचित । विष्णुसहस्रनामक । प्रमुख ; वम १४ पृष्ठ ८-२६ तक समाप्त । वम १२ पृष्ठ ८१ तक समाप्त । वम ४ नामवर्णन स्वरोदय एवं अमरुदी व्यंजित कुंठको आश्रयान कविके है । (स) रचनाकाल १७७३ ।
१५	अपरीक्षित विज्ञान राजान्त समीरनाम	अपकृत कवि मुद्राशाल	" १८ २ २ कीं सा	७ ११८ १४६	उर्ध्वनिमित्त लिखित । यह दोहरे भाषा समीरनामकी कीर्तनी है ; इसका अर्थको समु बाद हो चुका है । राजाबालके इतिहासके लिए यहसूत्रपूर्ण पुस्तक है । (स) उर्ध्वनिमित्त युजित । लि. क.-साधारण । लि. क.-साधारण समग्रार्थमें लिखित ।
१६	मर वपनरे साकल कवित्त (१) नाममय पुस्तक ३ ६ (२) मन्त्रविद्योत आदि ग्रन्थ	मुद्राशाल "	१८१ १८६	११८ १६ २	

[illegible]

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	निर्गमक	पत्रसंख्या	विशेष विवरण
११४	(१) विद्यारमणसह-समस्तविद्या- दीक्षासहित	श्री विद्याराम	१६७२	२४	विद्या-रत्ना १७७१। अक्ष १७७७को प्रतिसे निर्णीकृत। लि. क-सरोव्याससद कपुर्वी।
	(२) विद्यासहित	विद्यासहित	१६		लि. क-सरोव्याससद कपुर्वी। स. १७७७को प्रतिसे निर्णीकृत।
	(३) सूरसहित	सूर कवि	१६७६	१२	लि. क-सरोव्याससद कपुर्वी। स. १६७७को प्रतिसे निर्णीकृत।
११५	समस्तविद्या (विद्यारमणसहदीक्षा)	श्री अमृत	२४	१६७	सूर्य। रत्नासद १७७४। लि. क-सरोव्याससद कपुर्वी। स. १६७७को
११६	समस्तविद्या (विद्यारमणसहदीक्षा)	कविगोपास	१६		लि. क-सरोव्याससद कपुर्वी। स. १६७७को प्रतिसे निर्णीकृत।
११७	समस्तविद्या (विद्यारमणसहदीक्षा)	विद्यासहित	१६		लि. क-सरोव्याससद कपुर्वी। स. १६७७को प्रतिसे निर्णीकृत।
११८	समस्तविद्या (विद्यारमणसहदीक्षा)	विद्यासहित	१६		लि. क-सरोव्याससद कपुर्वी। स. १६७७को प्रतिसे निर्णीकृत।
११९	समस्तविद्या (विद्यारमणसहदीक्षा)	विद्यासहित	१६		लि. क-सरोव्याससद कपुर्वी। स. १६७७को प्रतिसे निर्णीकृत।
१२०	समस्तविद्या (विद्यारमणसहदीक्षा)	विद्यासहित	१६		लि. क-सरोव्याससद कपुर्वी। स. १६७७को प्रतिसे निर्णीकृत।
१२१	समस्तविद्या (विद्यारमणसहदीक्षा)	विद्यासहित	१६		लि. क-सरोव्याससद कपुर्वी। स. १६७७को प्रतिसे निर्णीकृत।

क्रमांक	ग्रन्थनाम	वर्ग	निर्माणक	पुस्तकका	विशेष विवरण यादि
१२	अथवा (सहस्र) भावना	कविबट उदयान	२ बोटा	२४	पद्य सं १३८ कुल है। नि क-गोपीकाव्य उर्मा अथपुर (?)
१३	भावना (गोपबेनकी)	रत्नमूहसार		२६	र.का-१७७६ (१७६३) नि क-गोपी काव्य उर्मा (?)
१४	एकद्वारोभावना	रत्नमूहसार		१२	नि क-गोपीकाव्य उर्मा। इसमें कुल पद्य १३२ हैं। १३१वें पद्यमें रचनाकाल इस प्रकार दिया है—सम्मत हार रिज लम्बोयो अथवा राग भव संक। काल लक्ष्मी पद्य गुरु माला करी पद्यक ॥१३१॥ इस दोहे पर पद्य नोट लिखा है—“इस दोहेका घुट पद्य नहीं मिला है काव्य वर्तिका प्रभावसे। यद्द्वाराका अथर्वसिंहजीका राज्यकाव्य विक्रम संवत् १७८० से १८६६ तकका है। यदि हार रिजसे ७६ लिखा जाय तो (७७६)का संवत् माला आता उपपन्न होता है और घुट पद्य निजमते यद्गोपिका नाम श्री निकल लक्ष्मी है। कुपला लक्ष्मी तो है ही।
१२२	चनेवारको-पुष्पाभरीभावना	आनंद उदयान कवि		२६	नि क-गोपीकाव्य उर्मा अथपुर।
१२६	द्विज पवित्राभरण (विजयवीर पुष्प)	कविबट मुरारीदास (विजयवीरभास्कर पुष्प)		४	"
१२७	(१) एकद्वारोभावना	रत्नमूहसार (नामो वाधारक)		१-१२ पद्य	नि क-आनंदोपा अथपुर।

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	निर्दिष्टमूल्य	व्ययसंख्या	निकषेय दिनरास यादि
	(२) गङ्गा चरकोटकोसी आचल	विद्यापीठाल मरुदु	२ बी अ	१३-१८ सेक	मि क -यातोया बुका ।
	(३) बाल चरकोटकोसी	यासिया बुका		१६-२४ "	अपुर्ण कमाङ्क २३३ (१) में इस
१२४	मन्त्रचरकोटी कथा	बीतासु कवि	१२६	१२	पुस्तकका व्यवस्थित संज्ञा प्राप्त है (स)
१२६	"	राजभाष	१२६६	४२ सेक	८ का -१८३३ । मि क -बनारस कोसी
॥	(१) सेवाकी क्षति (बीताको छंद)	कवि कुलपतिमित्र	१२२६	६	मुष्कमुष्क ।
१२१	(२) कुलपति मित्रकी वंशपरम्परा	पुनरोद्दिष्ट हरिनारायणकाजी(?)	२ बी अ	३	८ का -१८२ । मि क -मोरोचंद कर्मा मंत्र
	मीशु(सम्मान)	कवि कुलपतिमित्र	१२७२		अपुर्ण १६ शकी अक्षिसे सिरीकुल ।
१२२	मुनकम्पावतीविमल	वसिष्ठरत्न	२ २	३४ सेक	व्ययित दो पत्र पर पुनरोद्दिष्ट हरिनारायणकी
१२३	रससङ्ग	देवविष्णु मन्त्र कवि	१२६७	४२	द्वारा रचित इस ग्रन्थकी समुच्च भूमिका
१२४	समूह चरकोटकोसी	चम्पुसारको	१२६३	४३	लिखित है । (स)
१२५	समूह-चरकोटकोसी	"	१२६६	४४	मि क -मोरोचन्द कर्मा मंत्र अपुर्ण । १ का
१२६	दृष्टव्यविमलकोसी	गठोप पुष्पीराज	१२६७	४५ "	१८ ९ ।
	(सम्पादनकोष)	(सम्पादनकोष)			मि.क -संपादन कर्मा मंत्र-निवासी ।
१२७	मन्त्रचरकोटी एवं आचार्यविमल	अरवी कवि आदि	१२२३	३६	मि क -मोरोचंद कर्मा अपुर्ण ।
					"
					मि क -मुष्कमुष्क मन्त्र अपुर्ण । (स पुनरोद्दिष्ट
					कोसी बीसी)

प्रश्नांक	प्रश्नार्थ	प्रश्नी	निर्णयन	प्रश्नार्थ	विशेष विवरण यदि
११०	३१ बालप्रमाणिकोना मध्य	मार्ग कवि	२ को ११	४	४५ ७१ बालप्रमाणिकोना विवरण प्रयोग पुरोहितको प्रश्नी ३१ (म)
(१)	बालप्रमाणिको मध्य	मार्ग कवि	२	४	
(२)	प्रमाणिको	मार्ग कवि	२	४	
(३)	मार्गिको व प्रमाणिको	मार्ग कवि	२	४	
(४)	मार्गिको व प्रमाणिको	मार्ग कवि	२	४	
(५)	मार्गिको व प्रमाणिको	मार्ग कवि	२	४	
(६)	मार्गिको व प्रमाणिको	मार्ग कवि	२	४	
(७)	मार्गिको व प्रमाणिको	मार्ग कवि	२	४	
(८)	मार्गिको व प्रमाणिको	मार्ग कवि	२	४	
(९)	मार्गिको व प्रमाणिको	मार्ग कवि	२	४	
(१०)	मार्गिको व प्रमाणिको	मार्ग कवि	२	४	
(११)	मार्गिको व प्रमाणिको	मार्ग कवि	२	४	
(१२)	मार्गिको व प्रमाणिको	मार्ग कवि	२	४	
(१३)	मार्गिको व प्रमाणिको	मार्ग कवि	२	४	
(१४)	मार्गिको व प्रमाणिको	मार्ग कवि	२	४	
(१५)	मार्गिको व प्रमाणिको	मार्ग कवि	२	४	
(१६)	मार्गिको व प्रमाणिको	मार्ग कवि	२	४	
(१७)	मार्गिको व प्रमाणिको	मार्ग कवि	२	४	
(१८)	मार्गिको व प्रमाणिको	मार्ग कवि	२	४	
(१९)	मार्गिको व प्रमाणिको	मार्ग कवि	२	४	
(२०)	मार्गिको व प्रमाणिको	मार्ग कवि	२	४	
(२१)	मार्गिको व प्रमाणिको	मार्ग कवि	२	४	
(२२)	मार्गिको व प्रमाणिको	मार्ग कवि	२	४	
(२३)	मार्गिको व प्रमाणिको	मार्ग कवि	२	४	

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	मिथियाय	पत्रांख्या	विशेष विवरण आदि
(११८)	(२१) बाबुमल्लो कोलो-मल्लाज्जीको	विष्णुप्रभु	२ कोड	१	
(११९)	(२२) दुबरो-संय-विहार बर्मेनकी	समाज		३	
(१२०)	(२३) रायलीको			२	
(१२१)	(२४) लमिठा छकीकी	लमिठा सली		१	
(१२२)	(२५) विरधुनीको	बालमुकुन्द		२	
(१२३)	(२६)			३	
(१२४)	(२७) कपारीकी	बालमुकुन्दराज		३	
(१२५)	(२८) बल्लु अङ्गारको	समाज		२	
(१२६)	(२९) म्म बलीकी	न मुलराज हरीमल्ल		३	
(१२७)	(३०) मोरमार्जकी	बालराज कादम्ब		३	
(१२८)	(३१) हरिकण्ठकी	मुलराज हरीमल्ल		२	
(१२९)	(३२) कल्याणलकीकी	जम्नीराम चिडाकाभिल्लासो		३	
(१३०)	(३३) गोपियोकी	मुलराज		२	
(१३१)	(३४) रामके विवाहकी	समाज		२	
(१३२)	(३५) मानकी	कामुलाल याचाय		२	
(१३३)	(३६) उपदेशकी	समाज		२	
(१३४)	(३७) गोपीचन्द्र खोर	समाज		२	
(१३५)	(३८) रामकी बल्लकी			२	
(१३६)	(३९) गोपियोकी कुच्छ-विष्णुम	शोक विम		२	
(१३७)	(४०) ब्रह्मरीकी	समाज		३	

क्रमांक	प्राणवासा	कृतां	निमित्तमय	पञ्चद्विषा	विशेष विवरण आदि
(११८)	(६)	मुरलीराजजीकी	मुरलीराज	२ बी. ग.	
(११९)	"	बिरहुकी	धाराज	"	
(१२०)	"	"	कविकाशीराज	२	
(१२१)	"	"	मन्त्रको	२	
(१२२)	"	"	रघु	४	
(१२३)	"	"	सातनास	२	
(१२४)	"	"	अरपति नागद्व	२	दीप्तसन्देशरासायन
(१२५)	"	मन्त्रको	ज्ञानचरीदेवो नागद्वय	२	
(१२६)	"	बिरहुकी	मीरीबाई	१	
(१२७)	"	राविकाविरहुकी	कुलमज	३	
(१२८)	"	कोमको	पुण्योबाककी	२	
(१२९)	"	बिरहुकी	काशनदास त्यागी	१	अन्वेषितमन्त्रपत्र
१३०	भारतेश्वर (हमरसतरङ्ग)		मीमुदयनराजकी (ज्यामा लकी)	१६८६	
१३१	अपकाहु-गुजरातकास		देवविष्णु मन्त्रकवि	१६८६	वि.क.—भारतभारती सातनासकी
१३२	राजसचरित		१६८६	२३ देव	
१३३	अष्ट-दशिशतसौ अष्टपुरके राजाप्रौढा हुम		२ बी. ग.	६	१. का.—१८७९ । नि.क.—मीरीबाई (१)
१३४	रसिकपद्मार् राविकाशीमंगल		१६८६	१६	१. का.—१८७९ ।
१३५	हमीररातो (हमीरायक)		१६८६	४८ देव	नि.क.—मीरीबाई धर्मा

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	निर्गमितमय	पत्रसंख्या	विक्रीय विवरण आदि
(१२४)	मनस्यव्यासा (कवितासंग्रह)				निर्गमितार्थी योगोक्त्याद आर्त्ता मोड बन्धपुर निष्कासो द्वि (६)
	१ कण्वशास्त्र		१	२२२	
	२ पराशराय		२०	३२२	
	३ श्रीमत्तः २ सोहेन			३३३	
	४ श्रीमदी		२०	३३३	
	५ श्रीमत्तः		२०	३३३	
	६ रामशास्त्र		२०	३३३	
	७ श्रीमत्तः		२०	३३३	
	८ श्रीमत्तः		२०	३३३	
	९ श्रीमत्तः		२०	३३३	
	१० श्रीमत्तः		२०	३३३	
	११ श्रीमत्तः		२०	३३३	
	१२ श्रीमत्तः		२०	३३३	
	१३ श्रीमत्तः		२०	३३३	
	१४ श्रीमत्तः		२०	३३३	
	१५ श्रीमत्तः		२०	३३३	
	१६ श्रीमत्तः		२०	३३३	
	१७ श्रीमत्तः		२०	३३३	
	१८ श्रीमत्तः		२०	३३३	
	१९ श्रीमत्तः		२०	३३३	
	२० श्रीमत्तः		२०	३३३	
	२१ श्रीमत्तः		२०	३३३	
	२२ श्रीमत्तः		२०	३३३	
	२३ श्रीमत्तः		२०	३३३	
	२४ श्रीमत्तः		२०	३३३	
	२५ श्रीमत्तः		२०	३३३	
	२६ श्रीमत्तः		२०	३३३	
	२७ श्रीमत्तः		२०	३३३	
	२८ श्रीमत्तः		२०	३३३	
	२९ श्रीमत्तः		२०	३३३	
	३० श्रीमत्तः		२०	३३३	

क्रमांक	वर्ग	वर्ग	विषय	परीक्षा	दिनांक
१२५	गणित	गणित	गणित	१२	१२
१२६	गणित	गणित	गणित	१२	१२
१२७	गणित	गणित	गणित	१२	१२
१२८	गणित	गणित	गणित	१२	१२
१२९	गणित	गणित	गणित	१२	१२
१३०	गणित	गणित	गणित	१२	१२
१३१	गणित	गणित	गणित	१२	१२
१३२	गणित	गणित	गणित	१२	१२
१३३	गणित	गणित	गणित	१२	१२
१३४	गणित	गणित	गणित	१२	१२
१३५	गणित	गणित	गणित	१२	१२
१३६	गणित	गणित	गणित	१२	१२
१३७	गणित	गणित	गणित	१२	१२
१३८	गणित	गणित	गणित	१२	१२
१३९	गणित	गणित	गणित	१२	१२
१४०	गणित	गणित	गणित	१२	१२
१४१	गणित	गणित	गणित	१२	१२
१४२	गणित	गणित	गणित	१२	१२
१४३	गणित	गणित	गणित	१२	१२
१४४	गणित	गणित	गणित	१२	१२
१४५	गणित	गणित	गणित	१२	१२
१४६	गणित	गणित	गणित	१२	१२
१४७	गणित	गणित	गणित	१२	१२
१४८	गणित	गणित	गणित	१२	१२
१४९	गणित	गणित	गणित	१२	१२
१५०	गणित	गणित	गणित	१२	१२

[illegible]

क्रमांक	सम्बन्ध	कला	तिथिसम्बन्ध	पत्रसंख्या	विशेष विवरण यादि
(१२४)	अन्यसंख्या (कवितासंग्रह)				
	अ २ सुरिया । अ ३ पोरण	१	१	१५६ अ ३	
	अ ४ अमरा । अ ५ पोरिब	"	"	१५७ "	
	अ ६ अरपट	"	"	१५८ "	
	अ ७ मुक्कौरास	"	"	"	
	अ ८ रापट	"	"	१५९	
	अ ९ देवति । २ अ १०	"	"	१६० "	
	११ अरप	"	"	१६१	
	१२ लोडडि	"	"	१६२ "	
	१३ अरप	"	"	१६३ "	
	१४ रसतिया	"	"	१६४ "	
	१५ लावा	"	"	१६५ "	
	१६ बीडरा । १७ रास	"	"	१६६ "	
	१८ रेतन				यह नाम दुबारा आया है जो कवित्वका १६ वर चरित है ।
	१९ अमरा	"	"	१६७	
	१ अरा । १ १ लोड	"	"	१६८ "	
	१ २ अरप	"	"	"	
	१ ३ अमरा	"	"	१७० "	
	१ ४ अरप	"	"	१७१ "	
	१ ५ रसतिया (रसतिया पुष्ट १७६ अ)	"	"	१७२ "	रसतिया कवि है १७३ अ अ ३ आया है । (सं)
	१ ६ अरप	"	"	१७३ "	

क्रमांक	ग्रन्थनाम	वर्ग	निर्माणवर्ष	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
१२२	भोगाभाषा/संस्कृत/१८७१	भाषीसाल (कनकसाल ?)	१८८२	१३६ पृष्ठ	प्रायः बटोमें कनकसालकी ही अधिक भाषा निर्माण कृष्टिगोचर होती है अतः इसीकी यह कृति है। भाषीसाल तो इस प्रतिका निधि कार हो सकता है जबका कनकसाल जलका उपवास हो। नि. क. -मोपीचन्द्र नाम। सन्ति-भाल जडेभवासली १८३५ संवत्की प्रतिति सिपीकृत। कपपुरमाये। (सं.)
१९	(१) लक्ष्मणचरि (२) गुणभाषासमे (३) भाषाभोजकी भाषा (४) गुणभाषा (५) व्यासचरि	राजानुजवाल " " अष्टाव गुणभाषा स्वायो	१-७ १-५ १-८ १-१५ १-६		नि. क. -मोपीचन्द्र नामों गोठ कपपुर।
१६१	गुणभाषाभोजकी भाषीको व भाषी		२ बी. टी.	३	
१६२	भाषाभाषी		"	१५	"
१६३	हीराभाषी व वृद्धभाषीको भा. २५	हीरा	"	१	"
१६४	वृद्धभाषाभोजकी भाषीको	कवीरवास	"	३	"
१६५	= भाषी		"	४	"
१६६	वृद्धभाषाभोजी वृ. ६७	जिज्जरकपुरि	"	७	"
१६७	मोक्षभाषी भाषी	मोक्षज	"	११	"
१६८	भाषाभोजी भाषाभोजी वृ. ३५	मोक्षभाषी गुणभाषा	"	३	"
१६९	गुणभाषाभोजी भाषाभोजी वृ. ३५	गुणभाषा	"	३	"

क्र.सं.	विवरण	प्रमाण	प्रमाण	प्रमाण	प्रमाण
१	पेनसिल (ग्रेनाइट) ५०० ग्राम	१००	१००	१००	१००
२	पेनसिल (ग्रेनाइट) ५०० ग्राम	१००	१००	१००	१००
३	पेनसिल (ग्रेनाइट) ५०० ग्राम	१००	१००	१००	१००
४	पेनसिल (ग्रेनाइट) ५०० ग्राम	१००	१००	१००	१००
५	पेनसिल (ग्रेनाइट) ५०० ग्राम	१००	१००	१००	१००
६	पेनसिल (ग्रेनाइट) ५०० ग्राम	१००	१००	१००	१००
७	पेनसिल (ग्रेनाइट) ५०० ग्राम	१००	१००	१००	१००
८	पेनसिल (ग्रेनाइट) ५०० ग्राम	१००	१००	१००	१००
९	पेनसिल (ग्रेनाइट) ५०० ग्राम	१००	१००	१००	१००
१०	पेनसिल (ग्रेनाइट) ५०० ग्राम	१००	१००	१००	१००
११	पेनसिल (ग्रेनाइट) ५०० ग्राम	१००	१००	१००	१००
१२	पेनसिल (ग्रेनाइट) ५०० ग्राम	१००	१००	१००	१००

क्रमांक	पुस्तकनाम	कृषि	मिपिसमय	वपसंख्या	विशेष विवरण यादि
१२४	विष्णुबोध व्याकरण	काशीनाथ	१२६२	११	मि. क. - राजमहापुत्र शास्त्री मणोरुपपुरनिकाशो ।
१२५	"	हरिदासनाथ	१२५५	५	र. का. - १७६५ । स्वामी-जीवमहापुत्र । मि. क. -
१२६	पुनर्दशनामनी	हरिदासनाथ	१२५५	२३	वकाशनाथनाथ मिरासरी भाष्यपुरनम्ये ।
१२७	संस्कृतभाषासंग्रह	जीवमहापुत्र	१२५५	२२	र. का. - १६६६ । मि. क. - मुकुन्द । इस संग्रहमें
१२८	विष्णुबोधप्रयोग (संस्कृत)	काशीनाथ	१२६२	५	स्वर्णाधिकारनाथ ब्रह्ममोदी श्री विविध लिखित हैं
१२९	वकाशनाथनाथ (वकाशनाथभाष्यनाथ)	हरिदासनाथ	१२५५	१२	श्रीर. पाठाधिकारिका लिखित वक्ता हैं । (सं.)
२	संस्कृतभाषासंग्रह	हरिदासनाथ	१२५५	२	इसमें आते हुए एक वक्ता वक्ता वक्ता वक्ता
३	संस्कृतभाषासंग्रह	हरिदासनाथ	१२५५	२	संस्कृतभाषासंग्रह लिखित हैं ?
४	संस्कृतभाषासंग्रह	हरिदासनाथ	१२५५	२	मि. क. - श्रीवाराणसी पुरोहित ।
५	संस्कृतभाषासंग्रह	हरिदासनाथ	१२५५	२	"
६	संस्कृतभाषासंग्रह	हरिदासनाथ	१२५५	२	मि. क. - श्री वक्ता श्री हरिदासनाथजी पुरो
७	संस्कृतभाषासंग्रह	हरिदासनाथ	१२५५	२	हितोपदेश ।
८	संस्कृतभाषासंग्रह	हरिदासनाथ	१२५५	२	"
९	संस्कृतभाषासंग्रह	हरिदासनाथ	१२५५	२	मि. क. - १२६५ ई. राज्यभवनपत्रसे मुद्रित
१०	संस्कृतभाषासंग्रह	हरिदासनाथ	१२५५	२	संस्कृतभाषासंग्रह द्वारा वक्ता वक्ता
११	संस्कृतभाषासंग्रह	हरिदासनाथ	१२५५	२	संस्कृतभाषासंग्रह वक्ता वक्ता
१२	संस्कृतभाषासंग्रह	हरिदासनाथ	१२५५	२	संस्कृतभाषासंग्रह वक्ता वक्ता

[illegible]

क्रमांक	राज्यनाम	वर्ग	सिद्धिप्रमाण	पुस्तकसंख्या	विशेष विवरण आदि
२२१	भगवान्नगरनाटक	कवि स्मृतात्मक (कवि भाषा में भीतल भाषा)	१८६२	४२	सि.क.-भीमनगरनाम कायस्थ ।
२२२	सप्तशतीर शरीर रत्नमाला	कवि गुणमाला	२ बं. ८	१+१-२	सुदूरवाकिराय रूप कितनेको साक्षात् देखित । सि.क.-बनारस कोसी काभावादिमाला । सि.क.-गुप्तपुर ।
२२३	सप्तशतीर शरीर रत्नमाला	कवि गुणमाला	१६ ८	२३	इसमें रामानुजकृत वंशकस्तोत्र धनुराचार्य कृत लिङ्गात्मविष्णु एवं दो अन्य कृतियों संमिलित हैं ।
२२४	विद्याभूषणनाटक (अर्ध राजक ?)	कवि गुणमाला	१६ बं. ८	२	राजना-१७४३ जयपुर ।
२२५	(१) व्यासभोग (२) कृष्णभोग (३) बलभोग (४) मुनिभोग (५) कविभोग (६) कविभोग (७) कविभोग	कवि गुणमाला कवि गुणमाला कवि गुणमाला कवि गुणमाला कवि गुणमाला कवि गुणमाला कवि गुणमाला	" " " " " " "	१-३ ३-१४ १४-१५ १५-२२ २२-२६ २६-३७ ३७-४०	राजना-१७४३ जयपुर ।
२२६	सप्तशतीर शरीर रत्नमाला	कवि गुणमाला	१८६३	२७ बं. ८	रा.क.-१८७३ । सि.क.-भीमनगरनाम जयपुर ।
२२७	कविभोग ८६२	कवि गुणमाला	१८६३	२६ "	सुदूरवाकिराय रूप कितनेको साक्षात् देखित । सि.क.-भीमनगरनाम जयपुर ।

[illegible]

ક્રમ નં.	વર્ણનામ	વર્ણ	મિલિતિથય	વપાવણ	વિશેષ ચિહ્નરૂપ માધિ
૧૧૨	મુખ્યમંત્રીના પાનનો પોદડાનિહીતી	ભાઈ સત્યાપિય	૧ જી ઈ	૧૪	
૧૧૩	(૧) માયોખેડ	અમેદરાય કારણદ	"	૧-૨	
	(૨) રાજગોળિ	"	"	૨-૨	
	(૩) ખાવાવાપાવ	"	"	૩-૧૬	
	(૪) કાચીપૂજ	"	"	૧૬-૨૪	
	(૫) જરમિયાકાલિસ	"	"	૨૪-૨૭	
૧૧૪	(૧) જિલ્લા-બીનગર	કાંઠીશાસકી દાદિ દલેક	૧૬૨૭૬	૧	રજાના-૧૮૭૨ ૧૯૬૧
	(૨) કુર્મા રેહન-અમલગર	દાનોવા	"	૧-૭	દાસનારકે રાજા કમલનારસિંહની પૂર્વે અને
	(૩) રુડા રજિલ-નૂરા પૂર્વ મોસાલી	દામોદા પુવા	"	૭-૧	સાથ સાથે કુર્મી રામિયોની
૧૧૫	(૧) નિરવાર કોરવાનકો	"	૨ જી ઈ	૧-૨	સહુસે રાજા-મહારાજાએ વિવરણે રજિલ નિન્ન-ધોલરમલ પુરોહિત ઘાસરવાળા
	(૨) મવારામ રાવોની કાસ	"	"	૧-૨	દસ પુલકમે કાસા ૧૨૭(૩) પર ઘડિયલ કાસાના પોવ માવ સિદ્ધિતા હે
૧૧૬	(૧) રુડા મોસા	"	"	૧-૧	કાસના પુવારા છે. કાવિ કાવુ માંને ભવો છે
	(૨) મોસાલીની શીરમાવતરી	કારણદ ચિરમલ (દાસ)	"	૪ વેગ	મુખ ૧ કુર્મીપાનિવાસી કારણદ મુવારીશાસકો પાસાવલકો પ્રતિષ્ઠે સિદ્ધિતા
૧૧૭	પુલામમલક	દાનક કવિ	"	૧૧૨+૧૨=	મોવરકે કવિરાજા સિદ્ધિતાવતીની કુલક
	જિલ્લાપુલક	"	"	૧૧૪ વેગ	કવર ૨ (૨) કો પ્રતિભિતિ ૧૨૨ વેગ પુલો- વગરે હે
૧૧૮	(૧) અમલમાલક	અવા રાવલમાલક	૧૬૭૪	૨ વેગ	નિન્ન-મોસીયમ દામો અવર

क्रमांक	इच्छयाला	कला	मिथिरामस	पत्रसंख्या	विशेष विवरण यादि
(२३८)	(२) नमिदार	राठोड फलोदीय स्नेस- बासोड	१२८४	२	मि.क-पोपीबाबु शर्मा बायपुर। गुरु बरसु परिवासाक उपरोध भाषा पाग्य है। (सं)
२३९	अमरीप मिना	कवि बसुबुज कुपाराम	१२८६	१	मि.क-पोपीबाबु शर्मा बायपुर।
२४	विजयकाशम (दोसक)	गुरुकाशम प्रोदित (सिखर)	१२८९	१ ७	रचना-१८७८मिथवाक्यें दोबास विवरणकासे मिथित। गुरुकाशमकी प्रतिसे मिथीकृत। मि.क-पोपीबाबु शर्मा, बायपुर।
२४१	रामानंदीय	विजयकाशम प्रोदित	१२९०	२१	"
२४२	(१) गुरुकाशम मिथिबुकी राठोडरा कविता	गुरुकाशम प्रोदित	१२९२	१-३३	"
२४३	(२) लघु कवितादि ३	अमक कवि	१२८२	१-२३	मि.क-गुरोदित लोचमस (कवितामस)
२४४	विजयकाशमका कविता (विजयकीकी सुनिविद्यक पत्र	गुरुकाशम यादि	१२८२	१२	मि.क-पोपीबाबु शर्मा बायपुर।
२४५	राजकाशम (कस्तुर-विजयकाशम) मूल	मूलका सुकाश	१२८४	१९	"
२४६	(१) माताजीकी विजयकाशम	बायपुर विजयकाशमी	२ बी.स	१-२	"
२४७	(२) हार्मा अमरिका कुपारिता	"	"	१-७	"
२४८	मिना-गुरुकाशम	"	"	१२	"
२४९	विजयकाशमी बायपुरका बीजक-कविता	कवितामिथिबी बीजकाशम	"	१-२३	माताकाशम पोपिकाशम रितायें इन्दीमसुप, गुरुकाशमी प्रतिसे मिथीकृत। मि.क-पोपीबाबु शर्मा बायपुर।
२५०	एवं लताकाशी मलका पत्र	"	"	१२	"
२५१	(१) गुरुकाशमी (अमरिकाशम)	"	"	३	"
२५२	(२) (मिथीकाशम)	"	"	७	"
२५३	कायोमिथिबुकी (अमरिका)	गुरुकाशमी	१२९२	७	"
२५४	गोदेरकी बायपुरकी पत्रावली	गुरुकाशमी	२ बी.स.	२	"

क्रमांक	सम्प्रदाय	कर्ता	तिथिप्रमाण	पत्राङ्किका	विशेष विवरण प्रादि
१२१	आचार्यना-आचार्यना एवं आचार्यना	आचार्य कवि ?	१२२२	११२ + ११३	यह प्रति को प्रति द्वारा सम्पादित है ।
१२२	आचार्यना-आचार्यना	"	१ बी. ए.	१२	
१२३	आचार्यना-आचार्यना	"	१२२४	१४	मि. क. वं आचार्यना पुनारी, कलपुर ।
१२४	आचार्यना-आचार्यना	आचार्यना	२ बी. ए.	१२	"
१२५	आचार्यना-आचार्यना	आचार्यना	१२२५	१४	मि. क. गोपीनाथ ठानी, कलपुर ।
१२६	आचार्यना-आचार्यना	आचार्यना	१२२६	१४	"
१२७	आचार्यना-आचार्यना	आचार्यना	१२२७	१४	"
१२८	आचार्यना-आचार्यना	आचार्यना	१२२८	१४	"
१२९	आचार्यना-आचार्यना	आचार्यना	१२२९	१४	"
१३०	आचार्यना-आचार्यना	आचार्यना	१२३०	१४	"
१३१	आचार्यना-आचार्यना	आचार्यना	१२३१	१४	"
१३२	आचार्यना-आचार्यना	आचार्यना	१२३२	१४	"
१३३	आचार्यना-आचार्यना	आचार्यना	१२३३	१४	"
१३४	आचार्यना-आचार्यना	आचार्यना	१२३४	१४	"
१३५	आचार्यना-आचार्यना	आचार्यना	१२३५	१४	"
१३६	आचार्यना-आचार्यना	आचार्यना	१२३६	१४	"
१३७	आचार्यना-आचार्यना	आचार्यना	१२३७	१४	"
१३८	आचार्यना-आचार्यना	आचार्यना	१२३८	१४	"
१३९	आचार्यना-आचार्यना	आचार्यना	१२३९	१४	"
१४०	आचार्यना-आचार्यना	आचार्यना	१२४०	१४	"
१४१	आचार्यना-आचार्यना	आचार्यना	१२४१	१४	"
१४२	आचार्यना-आचार्यना	आचार्यना	१२४२	१४	"
१४३	आचार्यना-आचार्यना	आचार्यना	१२४३	१४	"
१४४	आचार्यना-आचार्यना	आचार्यना	१२४४	१४	"
१४५	आचार्यना-आचार्यना	आचार्यना	१२४५	१४	"
१४६	आचार्यना-आचार्यना	आचार्यना	१२४६	१४	"
१४७	आचार्यना-आचार्यना	आचार्यना	१२४७	१४	"
१४८	आचार्यना-आचार्यना	आचार्यना	१२४८	१४	"
१४९	आचार्यना-आचार्यना	आचार्यना	१२४९	१४	"
१५०	आचार्यना-आचार्यना	आचार्यना	१२५०	१४	"

क्रमांक	प्रवक्तृनाम	कर्ता	नियमित	प्रवर्तिका	विशेष विवरण यादि
२२२	विजयलक्ष्मी	लेखक श्रीर	२ वीं क	२२	स्वर्गाय पुरोहित श्रीहरिकारणजी द्वारा
२३	"	भारतप्रवास	"	७	संगृहीत एक मुसम्यारित प्रति है। (लं.)
२३१	मकरलक्ष्मी (भावापकागुहा एवं भावातद्विज)		"	३	प्रखरेखे ईरिक्कय्यालय द्वारा प्रेषित पत्रद्वारा
२३२	मकरलक्ष्मी		"	३	उद्दिष्टके सत्रों की प्रवक्ता।
२३३	(१) कुलकर्णीजी	कविराजा श्रीविद्या	"	२	कवि प्यारेनामजीकी कविता प्रेषिते लिखित।
२३४	(२) "		"	३	हर्षनाथ (श्रीकर) विद्या भगवान्की प्रति एवं
२३५	कवितागुहा		"	२६	प्रशस्तिपत्र है। (लं.)
२३६	शिवलक्ष्मी (प्रमुख)		"	४	प्रवक्ता-११५। प्रवक्ता देवालयमें देवताभि-
२३७	(१) प्रवक्ता-ईशान्यप्रदेशलक्ष्मी	महेश्वरजी (दीपक- कविगुहा, कविसंसारलक्ष्मी)	१२२५	"	पुत्र पदधित्तो लिखित एवं मातुल लिखी
	(२)	"	२ वीं क	१३	द्वारा लिखीमें उत्कीर्ण। नि. क. श्रीदीपकर
२३८	विद्यालक्ष्मी-प्रतिनिधिगुहा		"	१४	सती कम्प्यूर। कुल ११२ स्तोत्र है। (लं.)
	(१) सुपुत्रवादीके उत्तर करवाये		"	१४	श्रमकी विपत्ति पुरोहितजीकी सुकीर्ति गयी है। (लं.)
	के द्वाराके कोष पर भाषा विद्या-		"	१	लेख १० वें उत्कीर्ण।
	लेख एवं तोरमायका लिखित		"	१	१३ प्रलोकायक लेख उत्कीर्ण है।
	(२) प्रमुख विद्यालक्ष्मी	भाषा (भाषाविद्या)	"	३	१०६ स्तोत्रायक प्रशस्ति प्रवक्ता रघुकरुण
					भाषा (२/३३ उत्कीर्ण)।

[illegible]

[illegible]

राज्यपाल आचारविचारानुसार विद्याभूषण-आचार्य-महोदय

विषय विवरण पारि

पत्रसंख्या

निर्दिष्टकाल

वर्ग

पत्रसंख्या

वर्ग

(२६०) (१) स्वाध्यायसूत्रके अध्याय चतुर्थे

हृत् मंत्र के विषय विभागीय

(२) स्वाध्यायसूत्रके विषयविचारके

बर्गी हुई वर्गीय

(३) १- पात्रके सुव्यवहारको

प्रमाणित

२- सुशोभक केनर्मादिको

प्रमाणित करवाने पर

नगर द्वारा विभागीय

१- कृष्णराज राजा अष्टावक्राका

विभागीय

(४) १- कृष्णराज अष्टावक्राके सुशोभित

पात्रके राजा आचार्य

कृष्णराजका विभागीय

२- पात्रके कृष्णराज राजा

आचार्यकी प्रमाणित

(५) १- कृष्णराज राजा आचार्यका

विभागीय

२- श्रीमन्महि राजाका

विभागीय

१- राजा अष्टावक्र अष्टावक्रकी

प्रमाणित

२ २ २

२

२

२

२

२

२

२

२

२

२

२

२

२

२

२

२

२

२

२

२

२

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	निरूपितकाल	प्रकाशक	विशेष विवरण
(२६७)	४- पुष्करसिंह काव्यालोके निरुक्ति वृत्तव्याख्या विद्याभूषण	दीनानन्द	२ शी. क.	२२५ देव	१७७६ ई. । काव्यरेखे शोधित गौरवाराधनालोकी देवी कोशो सम्पूर्णकाली माता काई कुँरी द्वारा कराई गई मरम्मतविषयक । ई. १९४२में पुष्कर सिंहकृतवृत्त रात्रिक द्वारा उत्प्रेषण । श्लोक सं. ३६ ।
	(५) केशवकृतकालिका कथासूत्र वर्णन टीका के संक्षेप वृत्त द्वारा रत्नचन्द्रके कथित वृत्त द्वारा रत्नचन्द्र विद्याभूषण		"	"	ई. १९७७में कथादी नामद्वारा विषय गौरवविषय द्वारा समाप्तकाल । ठाकुर प्रभु द्वारा रचित वृत्तकाल द्वारा निरूपित । ई. १९४२में ठाकुर द्वारा उत्प्रेषण ।
	(६) गौरवके कथितवृत्तवृत्तकी प्रकाशित	वृत्तवृत्त	"	"	
	(१) वृत्तवृत्तके कथितवृत्तवृत्तकी प्रकाशित	वृत्तवृत्त	"	"	
	(२१) गौरवकृतकालिका कथासूत्र वर्णन टीका के संक्षेप वृत्त द्वारा रत्नचन्द्रके कथित वृत्त द्वारा रत्नचन्द्र विद्याभूषण	वृत्तवृत्त	१६५२	"	वि. क.—गौरवकाल द्वारा उत्प्रेषण ।
२६८	(१) गौरवकृतकालिका कथासूत्र वर्णन टीका के संक्षेप वृत्त द्वारा रत्नचन्द्रके कथित वृत्त द्वारा रत्नचन्द्र विद्याभूषण	वृत्तवृत्त	"	"	१७६२ (१) १७६२ (१) वि. क.—गौरवकाल द्वारा उत्प्रेषण (१)
२६९	विद्याभूषण-कथितवृत्त	वृत्तवृत्त	२ शी. क.	२२५	

क्र.सं.	विवरण	वर्ग	प्रमाण	प्रमाण	प्रमाण
२३०	विद्युत-वातावीर्य				
२३१	विद्युत-वातावीर्य				
२३२	विद्युत-वातावीर्य				
२३३	विद्युत-वातावीर्य				
२३४	विद्युत-वातावीर्य				
२३५	विद्युत-वातावीर्य				
२३६	विद्युत-वातावीर्य				
२३७	विद्युत-वातावीर्य				
२३८	विद्युत-वातावीर्य				
२३९	विद्युत-वातावीर्य				
२४०	विद्युत-वातावीर्य				
२४१	विद्युत-वातावीर्य				
२४२	विद्युत-वातावीर्य				
२४३	विद्युत-वातावीर्य				
२४४	विद्युत-वातावीर्य				
२४५	विद्युत-वातावीर्य				
२४६	विद्युत-वातावीर्य				
२४७	विद्युत-वातावीर्य				
२४८	विद्युत-वातावीर्य				
२४९	विद्युत-वातावीर्य				
२५०	विद्युत-वातावीर्य				

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	मिथिलानाम	पृष्ठसंख्या	विशेष विवरण यादि
२७६	कवितासंग्रह	छातीया बघा	२ बी.अ	२६ पृष्ठ	मि.क.—गोविन्दराज शर्मा, जयपुर (?) इस संग्रहमें जोधपुरके राज सरदारोंके वीरगीत यातिरिक्त दो हस्तियां मिलित हैं। इनमें १ तो 'डावेन' मथाराराज बालासिंह जोधपुरकी हैं जिसमें तत्कालीन महामन्त्रिज जोधपुरका हस्तियां मिलित हैं। दूसरी हस्तियां 'मुर-बाठारी समबादों' नामक हैं। इसमें मुर और बाठारी प्रसंगोत्तर हैं। (सं.) मि.क.—गोविन्दराज शर्मा जयपुर। जयपुर मि.काली जोधे खूंनारायणजीकी प्रसिद्ध लिपीसूत्र। जोधपुरोद्दिष्टी द्वारा सुसम्पादित प्रसिद्ध। (सं.)
२७७	विस्तारक	बालोवर (?)	१६ पृष्ठ	१६ "	
२७८	वीरचरित-आकाशनी खरीज	मृ. बालोवर ही कविता मुरारिवाल	२ बी.अ	३३	
	(१) बौद्ध चरितराज		"	१-६	
	(२) मुरबालमूलक		"	७-११	
	(३) मोहम्मदसंस्कृत		"	१-२	
	(४) बङ्गालसूरी		"	२-४	
	(५) मार्कण्डेयविष्णुवाक्य		"	४-७	
	(६) वेत्तावाता		"	७-८	
	(७) पुनर्मूलकपेठका		"	८-११	
	(८) मुक्तिवाताली		"	११-१२	
	(९) कुरावसंस्कृत		"	१२-१४	

क्र.सं.	विवरण	कर्म	विनिर्णय	व्यय	विवरण
१	१) जयपुर	१) जयपुर	१) जयपुर	१५-१६	१५-१६
२	२) जयपुर	२) जयपुर	२) जयपुर	१६-१७	१६-१७
३	३) जयपुर	३) जयपुर	३) जयपुर	१७-१८	१७-१८
४	४) जयपुर	४) जयपुर	४) जयपुर	१८-१९	१८-१९
५	५) जयपुर	५) जयपुर	५) जयपुर	१९-२०	१९-२०
६	६) जयपुर	६) जयपुर	६) जयपुर	२०-२१	२०-२१
७	७) जयपुर	७) जयपुर	७) जयपुर	२१-२२	२१-२२
८	८) जयपुर	८) जयपुर	८) जयपुर	२२-२३	२२-२३
९	९) जयपुर	९) जयपुर	९) जयपुर	२३-२४	२३-२४
१०	१०) जयपुर	१०) जयपुर	१०) जयपुर	२४-२५	२४-२५
११	११) जयपुर	११) जयपुर	११) जयपुर	२५-२६	२५-२६
१२	१२) जयपुर	१२) जयपुर	१२) जयपुर	२६-२७	२६-२७
१३	१३) जयपुर	१३) जयपुर	१३) जयपुर	२७-२८	२७-२८
१४	१४) जयपुर	१४) जयपुर	१४) जयपुर	२८-२९	२८-२९
१५	१५) जयपुर	१५) जयपुर	१५) जयपुर	२९-३०	२९-३०
१६	१६) जयपुर	१६) जयपुर	१६) जयपुर	३०-३१	३०-३१
१७	१७) जयपुर	१७) जयपुर	१७) जयपुर	३१-३२	३१-३२
१८	१८) जयपुर	१८) जयपुर	१८) जयपुर	३२-३३	३२-३३
१९	१९) जयपुर	१९) जयपुर	१९) जयपुर	३३-३४	३३-३४
२०	२०) जयपुर	२०) जयपुर	२०) जयपुर	३४-३५	३४-३५
२१	२१) जयपुर	२१) जयपुर	२१) जयपुर	३५-३६	३५-३६
२२	२२) जयपुर	२२) जयपुर	२२) जयपुर	३६-३७	३६-३७
२३	२३) जयपुर	२३) जयपुर	२३) जयपुर	३७-३८	३७-३८
२४	२४) जयपुर	२४) जयपुर	२४) जयपुर	३८-३९	३८-३९
२५	२५) जयपुर	२५) जयपुर	२५) जयपुर	३९-४०	३९-४०
२६	२६) जयपुर	२६) जयपुर	२६) जयपुर	४०-४१	४०-४१
२७	२७) जयपुर	२७) जयपुर	२७) जयपुर	४१-४२	४१-४२
२८	२८) जयपुर	२८) जयपुर	२८) जयपुर	४२-४३	४२-४३
२९	२९) जयपुर	२९) जयपुर	२९) जयपुर	४३-४४	४३-४४
३०	३०) जयपुर	३०) जयपुर	३०) जयपुर	४४-४५	४४-४५
३१	३१) जयपुर	३१) जयपुर	३१) जयपुर	४५-४६	४५-४६
३२	३२) जयपुर	३२) जयपुर	३२) जयपुर	४६-४७	४६-४७
३३	३३) जयपुर	३३) जयपुर	३३) जयपुर	४७-४८	४७-४८
३४	३४) जयपुर	३४) जयपुर	३४) जयपुर	४८-४९	४८-४९
३५	३५) जयपुर	३५) जयपुर	३५) जयपुर	४९-५०	४९-५०
३६	३६) जयपुर	३६) जयपुर	३६) जयपुर	५०-५१	५०-५१
३७	३७) जयपुर	३७) जयपुर	३७) जयपुर	५१-५२	५१-५२
३८	३८) जयपुर	३८) जयपुर	३८) जयपुर	५२-५३	५२-५३
३९	३९) जयपुर	३९) जयपुर	३९) जयपुर	५३-५४	५३-५४
४०	४०) जयपुर	४०) जयपुर	४०) जयपुर	५४-५५	५४-५५
४१	४१) जयपुर	४१) जयपुर	४१) जयपुर	५५-५६	५५-५६
४२	४२) जयपुर	४२) जयपुर	४२) जयपुर	५६-५७	५६-५७
४३	४३) जयपुर	४३) जयपुर	४३) जयपुर	५७-५८	५७-५८
४४	४४) जयपुर	४४) जयपुर	४४) जयपुर	५८-५९	५८-५९
४५	४५) जयपुर	४५) जयपुर	४५) जयपुर	५९-६०	५९-६०
४६	४६) जयपुर	४६) जयपुर	४६) जयपुर	६०-६१	६०-६१
४७	४७) जयपुर	४७) जयपुर	४७) जयपुर	६१-६२	६१-६२
४८	४८) जयपुर	४८) जयपुर	४८) जयपुर	६२-६३	६२-६३
४९	४९) जयपुर	४९) जयपुर	४९) जयपुर	६३-६४	६३-६४
५०	५०) जयपुर	५०) जयपुर	५०) जयपुर	६४-६५	६४-६५

[illegible]

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कला	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण यादि
(३६)	(२) राधा आनन्ददेवी जीवनी	कल्लि बे. सी. मूक	१२६२	३	मि. क.—पोलीबंद छर्मा जयपुर ।
	(३) पोलिटिकल थियरी डॉक सम्- ग्रा स्टेट		२ बी. ए.	१२६-४ =	दक्षिण इण्डियामें ।
	(४) व्यास			१३	
	(५) संवेकी देवर १० खुराका की सवाई रिकरोटिबुकी			१४ देव	
	(६) संवेकी देवर २० की सवाई रामसिंहजी		"	१५ "	
	(७) संवेकी देवर १२ की सवाई रामसिंहजी (सबन)		"	१६ "	
	(८) सपकी देवर १४ की सवाई माबोसिह		"	१७ "	
	(९) संवेकी देवर २१ की सवाई रामसिंह (दिलीप)		"	१८	
	(१०) इतिहास जयपुर (इतिहास)			१९	
	(११) वं खडगनाम लोक केतरी (इतिहास)		"	२०	
	(१२) कल्याण देवका समुल्लेख		"	२१	
	(१३) बलराम समुल्लेख पुण्ड्र सिद्धि दिलीप		"	२२	
	(१४) दीवान रामसिंहजीको हार		"	२३	

यह पत्रिकाएँ बन्यो हैं । इसमें भी खबर
पत्रकी पारिके में है । (६)
इतिहासों दक्षिण ।

[illegible]

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कपी	निर्गमिन्मय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण यादि
(३१)	(१४) गौडभोजकस्तोत्र	द्यौकप्रयोग	१८३६	१२५-२१५	मि. क.—सिवाराम कासीराम बोस किराचीपुर
	(१५) भीष्मस्तवराज	महाभारत-काव्यार्णव	"	२१६-२३३	"
	(१६) श्रीरामस्तवराज	समस्तुपारसीष्टोत्र	"	२३४-२४२	"
	(१७) श्रीनृसिंहस्तवराज	बह्मवाक्यस्तव	"	२४३-२४४	"
	(१८) विष्णु (विष्णु) संहितास्तोत्र	(विष्णुस्तोत्र ?)	"	२४५-२४७	"
	(१९) इन्द्रासीस्तोत्र	स्वर्गपुराण इन्द्रासी	१८३७	२४८-२४९	"
	(२०) लवामासिनीमासांश	स्वर्गपुराण इन्द्रासी	"	२५०-२५१	"
	(२१) सुबंकच	स्वर्गपुराण इन्द्रासी	१८३८	२५२-२५३	"
३११	सूक्त— (१) रघुनाथचरणस्तोत्र (महा- स्वरामि चक्रवर्ती)	समस्तुपारसीष्टोत्र	"	१-१	मि. क.—मुवांसिस्तव श्रीराम बरदा ?
	(२) शृंगारचरणस्तोत्र	समस्तुपारसीष्टोत्र	"	१-५	"
	(३) रामचरणस्तवराज	समस्तुपारसीष्टोत्र	"	१-२२	"
	(४) गोपाकचरणस्तोत्र	समस्तुपारसीष्टोत्र	"	१-५४	"
	(५) रामचरणस्तोत्र	रामचरण	"	१-८	"
३१२	सप्तमस्तोत्र	सप्तमस्तोत्र	१८३७	२५	"
३१३	नृसिंहस्तोत्र	नृसिंहस्तोत्र	१८३८	२६	"
३१४	नृसिंहस्तोत्र	नृसिंहस्तोत्र	१८३९	२७	"
३१५	सिद्धिस्तोत्र	सिद्धिस्तोत्र	१८४०	२८	"
३१६	किराचीविष्णुस्तोत्र	किराचीविष्णुस्तोत्र	१८४१	२९	मि. क.—बोस राजाची मिर्चिरी साकभरपुर (साकभर)
			१८४२	३०	मि. क.—बोस राजाची मिर्चिरी साकभरपुर (साकभर)
			१८४३	३१	मि. क.—बोस राजाची मिर्चिरी साकभरपुर (साकभर)
			१८४४	३२	मि. क.—बोस राजाची मिर्चिरी साकभरपुर (साकभर)

क्रमांक	समाचार	कार्य	निमित्त	वर्ग	विशेष विवरण
११३	पुनर्विचार, सुनि	भाषाविशेषीयकककक	१२वीं	३	
११४	नगरपालिका	नगरपालिका	"	४	
११५	मुम्बईमापन (अवस्था)	व्यवस्था	१२वीं	५	वि. क. - राजपुत्रार
११६	"	"	"	६	"
११७	हृदयविशेषीयकककक	व्यवस्था	१२वीं	७	"
११८	हृदयविशेषीयकककक (विशेष)	व्यवस्था	१२वीं	८	"
११९	नगरपालिका	व्यवस्था	"	९	"
१२०	नगरपालिका	व्यवस्था	"	१०	"
१२१	नगरपालिका	व्यवस्था	"	११	"
१२२	नगरपालिका	व्यवस्था	"	१२	"
१२३	नगरपालिका	व्यवस्था	"	१३	"
१२४	नगरपालिका	व्यवस्था	"	१४	"
१२५	नगरपालिका	व्यवस्था	"	१५	"
१२६	नगरपालिका	व्यवस्था	"	१६	"
१२७	नगरपालिका	व्यवस्था	"	१७	"
१२८	नगरपालिका	व्यवस्था	"	१८	"
१२९	नगरपालिका	व्यवस्था	"	१९	"
१३०	नगरपालिका	व्यवस्था	"	२०	"
१३१	नगरपालिका	व्यवस्था	"	२१	"
१३२	नगरपालिका	व्यवस्था	"	२२	"
१३३	नगरपालिका	व्यवस्था	"	२३	"
१३४	नगरपालिका	व्यवस्था	"	२४	"
१३५	नगरपालिका	व्यवस्था	"	२५	"
१३६	नगरपालिका	व्यवस्था	"	२६	"
१३७	नगरपालिका	व्यवस्था	"	२७	"
१३८	नगरपालिका	व्यवस्था	"	२८	"
१३९	नगरपालिका	व्यवस्था	"	२९	"
१४०	नगरपालिका	व्यवस्था	"	३०	"

ये तीनों पत्र एक एक विभिन्न क्रमिक हैं। (ग)

पत्राभिलेख श्रीरामचन्द्र वरत भगवति
वि. क. लक्ष्मण वरतभगवति ।

वि. क. रामचन्द्र वरतभगवति ।

क्रमांक	विवरण	कला	निर्माण	पत्रावली	विशेष विवरण आदि
१२४	अनामोदरी गरीब	पु. धर्मप्रकाशिकाचार्यपुर देवाचार्य की प्रकाश मण्डली	१८वीं श.	६	
१२५	मराठपट्टक		"	७	
१२६	मराठपट्टक		१८७२	१-२	
१२७	(१) मराठपट्टक (२) मराठपट्टक	अध्यापकप्रकाश प्रकाशप्रकाश	१८७२	१-२३	
१२८	मराठपट्टक		१८वीं श.	११	ये चारों पत्र २ एकल एवं विभिन्न कृतियों के हैं। इसमें मराठपट्टकविधि सत्यसोपानोपवास रात्रिभूषण एवं शिवोपवास अनुष्ठान सोत्र मिलित है। (लं) नि. क. -मराठपट्टकविधि एवं मराठपट्टक अनुष्ठान अनुष्ठान।
१२९	मराठपट्टक	दीक्षापत्र	"	२	
१३०	मराठपट्टक	प्रकाशप्रकाश (१)	"	३	प्रकाशप्रकाशकार अनुष्ठानपत्र पत्र।
१३१	मराठपट्टक	दीक्षापत्र	१८१६	३	
१३२	मराठपट्टक		१८७२	१-४	सर्व प्रकाश १२ पत्रों का विष्णुसोत्र है तथा मराठ पट्टकसोत्र।
१३३	मराठपट्टक		"	४	अनुष्ठान।
१३४	मराठपट्टक	दीक्षापत्र	१८७२	२६	
१३५	मराठपट्टक	प्रकाशप्रकाश	"	२	

क्रमांक	ग्रन्थभाषा	कर्ता	निर्गमिद्यय	पत्रपत्रिका	विशेष विवरण आदि
११७	गुरुदेवस्तोत्र	श्रीनिवास वैराग्याचार्य	१८७० स	३	
११८	रायदासस्तोत्र	रायभूषणदासदास	"	१	
११९	गुरुदेवस्तोत्र		१८७०	२३	
१२०	श्रीरत्नस्तोत्र		१८७०	२	सि. क.—रायभूषण दास कायपुर
१२१	श्रीरत्नस्तोत्र		१८७१	२	" "
१२२	गुरुदेवस्तोत्र	भारतपुराणपद	१८७१	२२	" "
१२३	गुरुदेवस्तोत्र	भारतपुराणपद	१८७१	२२	" "
१२४	गुरुदेवस्तोत्र	भारतपुराणपद	१८७१	२२	" "
१२५	गुरुदेवस्तोत्र	भारतपुराणपद	१८७१	२२	" "
१२६	गुरुदेवस्तोत्र	भारतपुराणपद	१८७१	२२	" "
१२७	गुरुदेवस्तोत्र	भारतपुराणपद	१८७१	२२	" "
१२८	गुरुदेवस्तोत्र	भारतपुराणपद	१८७१	२२	" "
१२९	गुरुदेवस्तोत्र	भारतपुराणपद	१८७१	२२	" "
१३०	गुरुदेवस्तोत्र	भारतपुराणपद	१८७१	२२	" "
१३१	गुरुदेवस्तोत्र	भारतपुराणपद	१८७१	२२	" "
१३२	गुरुदेवस्तोत्र	भारतपुराणपद	१८७१	२२	" "
१३३	गुरुदेवस्तोत्र	भारतपुराणपद	१८७१	२२	" "
१३४	गुरुदेवस्तोत्र	भारतपुराणपद	१८७१	२२	" "
१३५	गुरुदेवस्तोत्र	भारतपुराणपद	१८७१	२२	" "
१३६	गुरुदेवस्तोत्र	भारतपुराणपद	१८७१	२२	" "
१३७	गुरुदेवस्तोत्र	भारतपुराणपद	१८७१	२२	" "
१३८	गुरुदेवस्तोत्र	भारतपुराणपद	१८७१	२२	" "
१३९	गुरुदेवस्तोत्र	भारतपुराणपद	१८७१	२२	" "
१४०	गुरुदेवस्तोत्र	भारतपुराणपद	१८७१	२२	" "
१४१	गुरुदेवस्तोत्र	भारतपुराणपद	१८७१	२२	" "
१४२	गुरुदेवस्तोत्र	भारतपुराणपद	१८७१	२२	" "
१४३	गुरुदेवस्तोत्र	भारतपुराणपद	१८७१	२२	" "
१४४	गुरुदेवस्तोत्र	भारतपुराणपद	१८७१	२२	" "
१४५	गुरुदेवस्तोत्र	भारतपुराणपद	१८७१	२२	" "
१४६	गुरुदेवस्तोत्र	भारतपुराणपद	१८७१	२२	" "
१४७	गुरुदेवस्तोत्र	भारतपुराणपद	१८७१	२२	" "
१४८	गुरुदेवस्तोत्र	भारतपुराणपद	१८७१	२२	" "
१४९	गुरुदेवस्तोत्र	भारतपुराणपद	१८७१	२२	" "
१५०	गुरुदेवस्तोत्र	भारतपुराणपद	१८७१	२२	" "

एतत्तु वामं शास्त्रविद्यानिष्ठानाम्—(विद्यामन्त्रं प्रत्यक्षं प्रकृतम्)]

[illegible]

क्रमांक	प्रश्ननाम	कार्य	निश्चितमय	पत्रसंख्या	समूर्ण
(१२७)	(२) जलोद्यायक	पत्रेकपुत्रपत्र	१२वीं स.	४	मार्च/अप्रै/मय/जून/जुल/अगस्त/सितम्बर/अक्तूबर/नवम्बर/दिसम्बर
१२८	(६) प्रहलदचरितम्	अष्टपत्रार्थ		४	
१२९	भृगुविजय	भृगुविजयपत्र		१-३	
	(१) जालकीकेशदेवसौकुण्डलच	जालकीकेशदेवपत्र		१-३	
	(२) सीतास्तोत्र	सीतास्तोत्र		१-३	
	(३) रामस्तोत्र	रामस्तोत्र		१-३	
	(४) सीताएवम्बुजस्निग्धामागि	सीताएवम्बुजस्तोत्र		१-३	
	(५) सुपतस्तोत्र	सुपतस्तोत्र		१-३	
	(६) बह्मपुत्रोत्पत्त्य	बह्मपुत्रोत्पत्त्य		१-३	
	(७) सीतास्तुति	सीतास्तुति		१-३	
	(८) " "	" "		१-३	
	(९) " "	" "		१-३	
	(१०) " "	" "		१-३	
	(११) " "	" "		१-३	
	(१२) " "	" "		१-३	
४	(१) पंचरत्ना	पंचरत्ना	१७वीं स.	४	मार्च/अप्रै/मय/जून/जुल/अगस्त/सितम्बर/अक्तूबर/नवम्बर/दिसम्बर
४ १	(२) सुवर्णस्तोत्र	सुवर्णस्तोत्र		४	
	पारिवर्त्यपत्रिपत्रपत्रिपत्रिपत्र	पारिवर्त्यपत्र		४	
४ २	कोटिपत्र/अस्तोत्र	कोटिपत्र	१८वीं स.	४	मार्च/अप्रै/मय/जून/जुल/अगस्त/सितम्बर/अक्तूबर/नवम्बर/दिसम्बर
४ ३	पौराणिक/तर्क/विधि	पौराणिक	१८वीं स.	४	

गणनायक शास्त्रिणां निष्ठायाः -- विद्याभूषण-बाबू-गणेश-शुक्ली]

क्रमांक	वर्णनाम	वर्ग	निर्णय	पञ्चम्या	विशेष विवरण
४४	बीणाचोमनसुवरासरोमोदिरव्यागंधद्वय गान	स-दिव्यमधुराव कानोदिव्यमवत गिद्वेवरासवत	१६६	१२	
४५	बागोमनसुवरासरोमोदिरव्यागंधद्वय		१७वीं पृ.	१३	
४६	बागोमनसुवरासरोमोदिरव्यागंधद्वय		१८वीं पृ.	२	
४७	गुणितानावाक्य	बीराभाषुय	१८वीं पृ.	३	
४८	(१) हुनुवरासरोमोदिरव्यागंधद्वय	बीराभाषुय	"	१-६	
४९	(२) हुनुवरासरोमोदिरव्यागंधद्वय	बीराभाषुय	"	१-६	
५०	(३) हुनुवरासरोमोदिरव्यागंधद्वय	बीराभाषुय	"	१-६	
५१	(४) हुनुवरासरोमोदिरव्यागंधद्वय	बीराभाषुय	"	१-६	
५२	(५) हुनुवरासरोमोदिरव्यागंधद्वय	बीराभाषुय	"	१-६	
५३	(६) हुनुवरासरोमोदिरव्यागंधद्वय	बीराभाषुय	"	१-६	
५४	गणनायक शास्त्रिणां निष्ठायाः	गणनायक शास्त्रिणां निष्ठायाः	१६६	४	सि. क. - बलराय ।
५५	बीराभाषुय गान	बीराभाषुय गान	१६६	५	सि. क. - राधाशुभराज गान ५५ ।
५६	(१) गुणितानावाक्य	गुणितानावाक्य	१६६	६	
५७	(२) गुणितानावाक्य	गुणितानावाक्य	१६६	७	
५८	(३) गुणितानावाक्य	गुणितानावाक्य	१६६	८	
५९	(४) गुणितानावाक्य	गुणितानावाक्य	१६६	९	
६०	(५) गुणितानावाक्य	गुणितानावाक्य	१६६	१०	
६१	(६) गुणितानावाक्य	गुणितानावाक्य	१६६	११	
६२	(७) गुणितानावाक्य	गुणितानावाक्य	१६६	१२	
६३	(८) गुणितानावाक्य	गुणितानावाक्य	१६६	१३	
६४	(९) गुणितानावाक्य	गुणितानावाक्य	१६६	१४	
६५	(१०) गुणितानावाक्य	गुणितानावाक्य	१६६	१५	
६६	(११) गुणितानावाक्य	गुणितानावाक्य	१६६	१६	
६७	(१२) गुणितानावाक्य	गुणितानावाक्य	१६६	१७	
६८	(१३) गुणितानावाक्य	गुणितानावाक्य	१६६	१८	
६९	(१४) गुणितानावाक्य	गुणितानावाक्य	१६६	१९	
७०	(१५) गुणितानावाक्य	गुणितानावाक्य	१६६	२०	
७१	(१६) गुणितानावाक्य	गुणितानावाक्य	१६६	२१	
७२	(१७) गुणितानावाक्य	गुणितानावाक्य	१६६	२२	
७३	(१८) गुणितानावाक्य	गुणितानावाक्य	१६६	२३	
७४	(१९) गुणितानावाक्य	गुणितानावाक्य	१६६	२४	
७५	(२०) गुणितानावाक्य	गुणितानावाक्य	१६६	२५	
७६	(२१) गुणितानावाक्य	गुणितानावाक्य	१६६	२६	
७७	(२२) गुणितानावाक्य	गुणितानावाक्य	१६६	२७	
७८	(२३) गुणितानावाक्य	गुणितानावाक्य	१६६	२८	
७९	(२४) गुणितानावाक्य	गुणितानावाक्य	१६६	२९	
८०	(२५) गुणितानावाक्य	गुणितानावाक्य	१६६	३०	

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्तार	निमित्तसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण यादि
४१६	हनुमन्तपुत्रनामस्तोत्र	बालमीकिरासात्मने	१८२६	६	मि. क.-उपोदीराम साकपुरात्मने ।
४१७	सौरामृतना	रामप्रोक्त	१८४०	१	
४१८	बालमीर्षिपुत्रहस्तामस्तोत्र	अवस्थासंक्षिप्तान्त		४	मि. क. संभवतः बालमृतमुन्ववाप्त ।
४१९		भूमिपुत्रात्मने	१८६७	१७	
४२०	राजास्तोत्र	"	१८६७	२	अनुभूत राधात्मनुरास ।
४२१	(१) पद्मास्तोत्र (२) महामुक्तास्तोत्र	ब्रह्मवैवर्तपुराणकठ (अष्टावक्रा- व्यास व्यासने)	१८६७	१-२ २-६	
४२२	मयोक्त विष्णुसहस्रनामकण्ठ	महामातरात्मने	१८६७	१६	वम २ से १३ तक अज्ञात । अस्तिम पत्रमें बहुभक्तबकी पत्रस्तुति अनुभूति लिखित है (सं)
४२३	सविष्कारतर्कस्तोत्र शब्दात्म्य	यू. बन्धुव्याय वेराला- बार्थ ही अज्ञात	१८६७	३२	
४२४	सुरसेनाटकस्तोत्र		"	२	मि. क.-अवस्थासं ।
४२५	वीरराजपुत्रारकस्तोत्र		१८६९	६	विश्विदपुत्र ।
४२६	गोपालसहस्रनामस्तोत्र राजाव्य	कठिणम् मित्राकण्ठबार्थीय	१८६७	३३	
४२७	(१) शम्भामयोपसर्गविधि (२) "		"	१	
	(३) "		"	१	
४२८	मुक्तारामात्म्य (पारिवर्त्युर्ध्व भाग हनु मस्तोत्र)	बालमीकिमणि	"	२	अनुभूति ।

राज्यपाल शासक विभाग — (विभागपाल-पदा-अधीनस्थ-पदा)

क्र.सं.	पदा-सं.	वर्ग	मिथिलास	पदासंख्या	विशेष विवरण यदि
५१२	आचार्यद्वय प्रमुखता	आचार्यद्वय	१२वीं स	३	उत्पत्ति
५१३	आचार्यद्वयता	अध्यक्षता प्रमुखता	१२वीं स	७-१५	
५१४	आचार्यद्वयता (प्रमुख)		१२वीं स	२	
५१५	आचार्यद्वयता	आचार्यद्वयता	"	१५	
५१६	आचार्यद्वयता	आचार्यद्वयता	"	५	
५१७	(१) प्रमुखद्वयता	प्रमुखद्वयता	१२वीं स	१-३	
५१८	(२) प्रमुखद्वयता	प्रमुखद्वयता	१२वीं स	११	
५१९	(३) प्रमुखद्वयता	प्रमुखद्वयता	१०-१२	१३वां	उत्पत्ति : राजस्थानी भाषा में निवृत्त
५२०	(४) प्रमुखद्वयता	प्रमुखद्वयता	"	१	"
५२१	(५) प्रमुखद्वयता	प्रमुखद्वयता	"	५	"
५२२	(६) प्रमुखद्वयता	प्रमुखद्वयता	"	५	"
५२३	(७) प्रमुखद्वयता	प्रमुखद्वयता	"	५	"
५२४	(८) प्रमुखद्वयता	प्रमुखद्वयता	"	५	"
५२५	(९) प्रमुखद्वयता	प्रमुखद्वयता	"	५	"
५२६	(१०) प्रमुखद्वयता	प्रमुखद्वयता	"	५	"
५२७	(११) प्रमुखद्वयता	प्रमुखद्वयता	"	५	"
५२८	(१२) प्रमुखद्वयता	प्रमुखद्वयता	"	५	"
५२९	(१३) प्रमुखद्वयता	प्रमुखद्वयता	"	५	"
५३०	(१४) प्रमुखद्वयता	प्रमुखद्वयता	"	५	"
५३१	(१५) प्रमुखद्वयता	प्रमुखद्वयता	"	५	"
५३२	(१६) प्रमुखद्वयता	प्रमुखद्वयता	"	५	"
५३३	(१७) प्रमुखद्वयता	प्रमुखद्वयता	"	५	"
५३४	(१८) प्रमुखद्वयता	प्रमुखद्वयता	"	५	"
५३५	(१९) प्रमुखद्वयता	प्रमुखद्वयता	"	५	"
५३६	(२०) प्रमुखद्वयता	प्रमुखद्वयता	"	५	"
५३७	(२१) प्रमुखद्वयता	प्रमुखद्वयता	"	५	"
५३८	(२२) प्रमुखद्वयता	प्रमुखद्वयता	"	५	"
५३९	(२३) प्रमुखद्वयता	प्रमुखद्वयता	"	५	"
५४०	(२४) प्रमुखद्वयता	प्रमुखद्वयता	"	५	"
५४१	(२५) प्रमुखद्वयता	प्रमुखद्वयता	"	५	"
५४२	(२६) प्रमुखद्वयता	प्रमुखद्वयता	"	५	"
५४३	(२७) प्रमुखद्वयता	प्रमुखद्वयता	"	५	"
५४४	(२८) प्रमुखद्वयता	प्रमुखद्वयता	"	५	"

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कला	प्रतिष्ठामय	वस्तुतया	विशेष विवरण यादि
४१२	मिथ्याविस्तोत्राणां प्रसूतवर्णनं	लक्ष्मणपुराणोक्त	१२वीं श.	२	अनुपम ।
४१३	वन्दोत्तम		"	२	
४१४	दीक्षान्तस्तोत्र		"	२	
४१५	ब्रह्मेन्द्रीस्तुति		"	२	
४१६	सवित्रास्तुति		"	२	
४१७	राजदिव्यं स्तिनीस्तोत्र	ब्रह्मपुराणोक्त	१२	२	अनुपम
४१८	"		"	२	
४१९	(१) ब्रह्मसूक्तस्तोत्र		१२वीं श.	१२	
४२०	(२) तारकस्तोत्र		१२वीं श.	१२	
४२१	ब्रह्मसूक्तस्तोत्र		१२	१२	
४२२	समारक्तसूक्तस्तोत्र	ब्रह्मपुराणोक्त	"	१२	अनुपम
४२३	सप्तशतस्तोत्र (ब्रह्मात्मनः)		"	१२	
४२४	सोमस्तोत्र		"	१२	
४२५	सोमस्तोत्र		"	१२	
४२६	सोमस्तोत्र		"	१२	
४२७	विष्णुस्तोत्र	ब्रह्मपुराणोक्त	१२	१२	अनुपम
४२८	(१) ब्रह्मस्तोत्र		१२-१२	१२-१२	
४२९	(२) ब्रह्मस्तोत्र		१२-१२	१२-१२	
४३०	(३) ब्रह्मस्तोत्र		१२-१२	१२-१२	
४३१	(४) ब्रह्मस्तोत्र		१२-१२	१२-१२	
४३२	(५) ब्रह्मस्तोत्र	ब्रह्मपुराणोक्त	१२	१२	अनुपम
४३३	(६) ब्रह्मस्तोत्र		१२	१२	
४३४	(७) ब्रह्मस्तोत्र		१२	१२	
४३५	(८) ब्रह्मस्तोत्र		१२	१२	
४३६	(९) ब्रह्मस्तोत्र		१२	१२	

क्र.सं.	विवरण	वर्ग	विवरण	वर्ग	विवरण
१२२	(१) लक्ष्मणिका				
२६	" "				
२७	भूगण्डिका				
२८	" "				
२९	" "				
३०	भूगण्डिका				
३१	भूगण्डिका				
३२	भूगण्डिका				
३३	भूगण्डिका				
३४	भूगण्डिका				
३५	भूगण्डिका				
३६	भूगण्डिका				
३७	भूगण्डिका				
३८	भूगण्डिका				
३९	भूगण्डिका				
४०	भूगण्डिका				
४१	भूगण्डिका				
४२	भूगण्डिका				
४३	भूगण्डिका				
४४	भूगण्डिका				
४५	भूगण्डिका				
४६	भूगण्डिका				
४७	भूगण्डिका				
४८	भूगण्डिका				
४९	भूगण्डिका				
५०	भूगण्डिका				

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कला	निर्गमसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण यादि
४७७	छायाव्याख्याके स्तुतपत्र		१९वीं श.	३	अपूर्व
४७८	छायाव्याख्या		"	४-४४	"
४७९	पार्थिवचिन्तामणि (मिथवादिबहुवचन)		१८वीं श.	१४	"
४८०	कुमावधिप्रका		१९वीं श.	४-४	"
४८१	विष्णुसुजायमोक्ष		१९वीं श.	३	"
४८२	देवीनामसंग्रहा		१९वीं श.	११	अपूर्व
४८३	विष्णुसुजाय		"	३	"
४८४	विष्णुसुजायके स्तुतपत्र		१९वीं श.	१३	"
४८५	शिवमातृसंग्रहा		२०-२१	३	अपूर्व
४८६	सुन्दरीयातृनादिक		२०वीं श.	३	मि. क - रोपुप्राप्त काष्ठम ।
४८७	"		२०वीं श.	३-१	अपूर्व । मि. क - पुरोहित इतिहासप्रबन्ध
४८८	पद्म मिथुनपत्र		१९वीं श.	७	
४८९	मिथुनपत्रके स्तुतपत्र		१९वीं श.	३	
४९०	आत्मपञ्चांगके स्तुतपत्र		१९वीं श.	३	
४९१	नवरात्रस्वायम्भुविक्रि		१९वीं श.	३	
४९२	रत्नचक्रसंग्रह		१९वीं श.	३	
४९३	प्रायश्चित्तपत्रम्		१९वीं श.	३	
४९४	स्वप्नोपाख्यात		१९वीं श.	३	

राजस्वामि काशी

क्रमांक	व्यवस्थापक	वर्ग	निर्माणवर्ष	पञ्चम्या	विशेष विवरण यादि
४१६	मुद्रावाणी मद्रक		१६वीं स		राजवाणी भाषाये
४१७	आयुर्वेदको कले प्रकीर्ण		"		
४१८	व्याकरणे "		"		
४१९	गुरुशारदासिंहवाराक		१		प्रकीर्ण
४२०	मुद्रकनम्		२		
४२१	वाराणासिकासिंहके प्रकीर्ण	भारतवर्ष	२		
४२२	सीतारोचके प्रकीर्ण		२		
४२३	मुद्रासिंहवारासिंहके प्रकीर्ण		२		
४२४	आनवीय	मुद्रासिंहव	२		प्रकीर्ण
४२५	आनवपुलि	केसव	३		"
४२६	अपराजक		४		"
४२७	मुद्रावाणी		५		"
४२८	वाराणासिके प्रकीर्ण		६		
४२९	गारिकीके "		"		
४३०	स्वोन्मिके मद्रक		१६वीं स		
४३१	मोरीवा	देवपाल (आनवपुलि)	—		
४३२	अपराजक	"	१६		
४३३	गारिकीवा	"	१६		
४३४	देवपाल	"	१६		
४३५		"	१७		

क्रमांक	विवरण	प्रमाण	विवरण	प्रमाण	विवरण
२१६	चतुर्थीवर्षक	२१६	१६वीं अ	२१६	१६वीं अ
२१७	राधाचरणवर्षक	२१७	"	२१७	"
२१८	चतुर्थीवर्षक	२१८	"	२१८	"
२१९	चतुर्थीवर्षक	२१९	"	२१९	"
२२०	चतुर्थीवर्षक	२२०	"	२२०	"
२२१	चतुर्थीवर्षक	२२१	"	२२१	"
२२२	चतुर्थीवर्षक	२२२	"	२२२	"
२२३	चतुर्थीवर्षक	२२३	"	२२३	"
२२४	चतुर्थीवर्षक	२२४	"	२२४	"
२२५	चतुर्थीवर्षक	२२५	"	२२५	"
२२६	चतुर्थीवर्षक	२२६	"	२२६	"
२२७	चतुर्थीवर्षक	२२७	"	२२७	"
२२८	चतुर्थीवर्षक	२२८	"	२२८	"
२२९	चतुर्थीवर्षक	२२९	"	२२९	"
२३०	चतुर्थीवर्षक	२३०	"	२३०	"
२३१	चतुर्थीवर्षक	२३१	"	२३१	"
२३२	चतुर्थीवर्षक	२३२	"	२३२	"
२३३	चतुर्थीवर्षक	२३३	"	२३३	"
२३४	चतुर्थीवर्षक	२३४	"	२३४	"

[illegible]

क्रमांक	इच्छायाला	कक्षा	मिथिपत्रम	पत्रसंख्या	विशेष विवरण यादि
२२२	भावनर-ब्रह्मचर्यप्रमाणपत्राबाबत		१२५/२५	१	रुपय
२२३	भरत पूर्ण पुर्ण पुर्ण कांती			३	"
२२४	बाबोकार (हिन्दी)		"	२	"
२२५	ब्रह्मचर्यप्रमाणपत्र			१२	गस्तापस्त वगैरे वगैरे
२२६	हिन्दीभाषात पुस्तकें रुपय				
२२७	भावनर	भावनर	१२५२		गस्ताप १७५२ । रुपे ।
२२८	पुस्तकें ब्रह्मचर्यप्रमाणपत्र				
२२९	हिन्दीकी पाठ्यपुस्तिका बरोर				
२३०	ब्रह्मचर्यप्रमाणपत्र वगैरे वगैरे				
२३१	होमेट्रीकी पुस्तिका				
२३२	हिन्दीकी बरोर भाषा				
२३३	ब्रह्मचर्यप्रमाणपत्र वगैरे				
२३४	वे विवेक				

पुस्तके म्हापत्राबाबत भाषा वगैरे
१ १ (२५)

क्र.सं.	विवरण	वस्तु	मिति	वस्तु	विवरण
(२१६)	(१) मिठाभाई इका (बराण)	राधाभाईकाय	१२१६	११	पुर्बर्द्धि । मि.क.-गोपीनाथ भ्यास कयभाट ।
२१७			१२१६	११+१७+	मि.क.-राधाभाई भ्यास ।
२१८	गारावन	धनुपुनिरककावा	१२१७	१२००	स्वरास पुनिरककावा ।
२१९	बटिभाईपुनिर		"	१२	पुनिर
२२०	झांगलिका		"	२	
२२१	बटाकरनपुनिर	गारावनकरन	१२१७	१२	देवल करनकरन । मि.क.-गिरिकारनो मिथ
२२२	मिठाभाईपुनिर	भाईकरन	१२१७	१-१	गुण
२२३	बटिभाईपुनिर	भाईकरन	१२१७	१०	पुनिर
२२४	गारावन		"	१२	११०० गारावन । पुनिर
२२५	गारावन		"	११	पुनिर
२२६	गारावन		"	१२	"
२२७	गारावन		"	१३	"
२२८	गारावन		"	१४	"
२२९	गारावन		"	१५	"
२३०	गारावन		"	१६	"
२३१	गारावन		"	१७	"
२३२	गारावन		"	१८	"
२३३	गारावन		"	१९	"
२३४	गारावन		"	२०	"
२३५	गारावन		"	२१	"
२३६	गारावन		"	२२	"
२३७	गारावन		"	२३	"
२३८	गारावन		"	२४	"
२३९	गारावन		"	२५	"
२४०	गारावन		"	२६	"
२४१	गारावन		"	२७	"
२४२	गारावन		"	२८	"
२४३	गारावन		"	२९	"
२४४	गारावन		"	३०	"
२४५	गारावन		"	३१	"
२४६	गारावन		"	३२	"
२४७	गारावन		"	३३	"
२४८	गारावन		"	३४	"
२४९	गारावन		"	३५	"
२५०	गारावन		"	३६	"
२५१	गारावन		"	३७	"
२५२	गारावन		"	३८	"
२५३	गारावन		"	३९	"
२५४	गारावन		"	४०	"
२५५	गारावन		"	४१	"
२५६	गारावन		"	४२	"
२५७	गारावन		"	४३	"
२५८	गारावन		"	४४	"
२५९	गारावन		"	४५	"
२६०	गारावन		"	४६	"
२६१	गारावन		"	४७	"
२६२	गारावन		"	४८	"
२६३	गारावन		"	४९	"
२६४	गारावन		"	५०	"
२६५	गारावन		"	५१	"
२६६	गारावन		"	५२	"
२६७	गारावन		"	५३	"
२६८	गारावन		"	५४	"
२६९	गारावन		"	५५	"
२७०	गारावन		"	५६	"
२७१	गारावन		"	५७	"
२७२	गारावन		"	५८	"
२७३	गारावन		"	५९	"
२७४	गारावन		"	६०	"
२७५	गारावन		"	६१	"
२७६	गारावन		"	६२	"
२७७	गारावन		"	६३	"
२७८	गारावन		"	६४	"
२७९	गारावन		"	६५	"
२८०	गारावन		"	६६	"
२८१	गारावन		"	६७	"
२८२	गारावन		"	६८	"
२८३	गारावन		"	६९	"
२८४	गारावन		"	७०	"
२८५	गारावन		"	७१	"
२८६	गारावन		"	७२	"
२८७	गारावन		"	७३	"
२८८	गारावन		"	७४	"
२८९	गारावन		"	७५	"
२९०	गारावन		"	७६	"
२९१	गारावन		"	७७	"
२९२	गारावन		"	७८	"
२९३	गारावन		"	७९	"
२९४	गारावन		"	८०	"
२९५	ग				

क्रमांक	प्रत्येकाला	कक्षा	विषयसमूह	पत्रसंख्या	विशेष विवरण यादि
२४२	भाषातः-इयमाकपमावाप्यमिवाह		१२वीं क	५	सुप्रसन्न
२४३	धैर्य युवां एवं युवां धारती		३	३	"
२४४	साकोरवार (विष्णु)		२	२	पाठ्यपुस्तक एवं एवं एवं
२४५	साधुसाधनमोक्षाव		५४	५४	रचनाकाल १०१६ ।
२४६	विष्णुसाधनमोक्षाव		"		बही ।
२४७	अपमान	भाषातः	१२वीं क	१२	१२११ कर्ण कर्ण कर्ण उत सत्य में
२४८	कुरित्त कर्ण कर्ण कर्ण कर्ण		२ वीं क	१२	भी बही । युक्ति (विष्णु) कर्ण कर्ण
२४९	विष्णुकी वासुकीका कर्ण			१	युक्ति । वेदुत्तर समाचार का उपहार ।
२५०	अर्जुनरत्न वासुकीका कर्ण				युक्ति
२५१	होमोड की लीक				
२५२	विष्णुकी कर्ण कर्ण कर्ण	वीरविष्णु कर्ण (विष्णु)			
२५३	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण	विष्णुका विष्णु कर्ण			
२५४	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण	अपमान			
२५५	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२५६	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२५७	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२५८	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२५९	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२६०	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२६१	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२६२	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२६३	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२६४	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२६५	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२६६	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२६७	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२६८	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२६९	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२७०	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२७१	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२७२	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२७३	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२७४	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२७५	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२७६	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२७७	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२७८	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२७९	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२८०	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२८१	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२८२	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२८३	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२८४	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२८५	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२८६	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२८७	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२८८	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२८९	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२९०	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२९१	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२९२	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२९३	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२९४	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२९५	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२९६	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२९७	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२९८	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
२९९	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				
३००	अपमान कर्ण कर्ण कर्ण				

क्रमांक	वर्णन	कर्म	सिद्धिप्राप्त	पक्षधन	विधान विवरण
(२११)	(३) विद्यालय-विधान (प्रकरण)	राजप्राशन	१८१६	३३	पुस्तकें । सि.क.-श्रीश्रीमान् व्यास कथनपर ।
२१२	"		१८१७	३१+३७+ १२८८	सि.क.-राजप्राशन व्यास ।
२१३	नारायण	पञ्चमस्तोत्रकथावर्ण	१८१८	२१	स्वयंभूवृत्तिक-प्राशन ।
२१४	वदित्यस्तोत्रोत्तर		"	१२	स्वयंभूवृत्तिक
२१५	वदित्यस्तोत्र		"	६	"
२१६	वदित्यस्तोत्र		"	२	"
२१७	विद्यालय-विधान (प्रकरण)	आनेगमनपरकर्म	१८२२	३२	देवता कृतसप्तमस्तोत्र । सि.क.-श्रीश्रीमान् व्यास ।
२१८	वदित्यस्तोत्र	आनेगमनपरकर्म	१८२३	१-५	पञ्चम
२१९	वदित्यस्तोत्र		"	७	स्वयंभूवृत्तिक
२२०	वदित्यस्तोत्र		"	८-१५	२१वां पक्ष व्यास । श्रुति
२२१	वदित्यस्तोत्र		"	११	स्वयंभूवृत्तिक
२२२	वदित्यस्तोत्र		"	२२	"
२२३	वदित्यस्तोत्र		"	२	"
२२४	वदित्यस्तोत्र		"	११५	"
२२५	वदित्यस्तोत्र		"	२	पञ्चम
२२६	वदित्यस्तोत्र		"	४२	"
२२७	वदित्यस्तोत्र		"	१८१६-	सि.क.-श्रीश्रीमान् व्यास कथनपर व्यास
२२८	वदित्यस्तोत्र		१८२३	१७	पञ्चम

[illegible]

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	निवृत्तिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण यादि
(११७)	(१) ईसाब्दकम् (२) इस्लामकम् (३) विद्याभूषण	जगन्नाथ	१८७० ई.	२-२ २-३ ३२२	
११८	राजपारम (ग्रन्थसंग्रह)	"	१८७२	२३	मि. क - रोड्गस संग्रह ।
११९	वेदमयुक्त (म्यान्सिफिक)	जोगन्नाथ-भरतेश्वरनाथ	१८७० ई.	७४	सकल पत्रकारिता ग्रन्थ ।
१२०	पौरोहित्यसंग्रह (ग्रन्थसंग्रह)	लाल		७	ग्रन्थ ।
१२१	पौरोहित्यसंग्रह (ग्रन्थसंग्रह)	राजगुरुजीव - कल्पित		१३	ग्रन्थसंग्रहे ग्रन्थसंग्रहे निवृत्ति १८८३ ई ।
१२२	पौरोहित्यसंग्रह (ग्रन्थसंग्रह)	मुक्तिदासनाथ			ग्रन्थ ।
१२३	पौरोहित्यसंग्रह (ग्रन्थसंग्रह)	पद्मेश	२००० ई.	४	ग्रन्थसंग्रहे निवृत्ति ।
१२४	पौरोहित्यसंग्रह (ग्रन्थसंग्रह)	जगन्नाथसुन्दर	१८७० ई.	२	ग्रन्थसंग्रहे निवृत्ति ।
१२५	पौरोहित्यसंग्रह (ग्रन्थसंग्रह)	जगन्नाथ	१८७० ई.	३	मि. क - ग्रन्थसंग्रहे निवृत्ति ।
१२६	पौरोहित्यसंग्रह (ग्रन्थसंग्रह)	सुधाकरनाथ-गोवर्धनाथ	१८७० ई.	२	मि. क - ग्रन्थसंग्रहे निवृत्ति ।
१२७	पौरोहित्यसंग्रह (ग्रन्थसंग्रह)	धीरेश्वर	१८७० ई.	२४	मि. क - ग्रन्थसंग्रहे निवृत्ति ।
१२८	पौरोहित्यसंग्रह (ग्रन्थसंग्रह)	जगन्नाथसंग्रह	१८७० ई.	१७	मि. क - ग्रन्थसंग्रहे निवृत्ति ।
१२९	पौरोहित्यसंग्रह (ग्रन्थसंग्रह)	पद्मेश		३२	मि. क - ग्रन्थसंग्रहे निवृत्ति ।
१३०	पौरोहित्यसंग्रह (ग्रन्थसंग्रह)	जगन्नाथसंग्रह		२३	मि. क - ग्रन्थसंग्रहे निवृत्ति ।
१३१	पौरोहित्यसंग्रह (ग्रन्थसंग्रह)	जगन्नाथ	१८७० ई.	२४	मि. क - ग्रन्थसंग्रहे निवृत्ति ।

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	निर्माणसम	पत्रसंख्या	विषय विवरण आदि
(११७)	(१) इलायकम् (२) इलायतकम् (३) विजालोका	अङ्कुराचार्य	१८३५	२-२	
११८	पञ्चाङ्गवैजयन्त (याज्ञवल्क्य)	"	१८४६	३-३	मि.क-गोहूरस्य वर । अथवा अष्टकादिप्रसन्नम् ।
११९	अष्टांगसूत्रम् (अष्टांगसूत्रिका)	साम्प्रदायिक-अष्टांगसूत्र- सम्प्रदाय	१८४७	७४	
१२०	अष्टांगसूत्रम् (अष्टांगसूत्रिका)	साम्प्रदायिक-अष्टांगसूत्र- सम्प्रदाय	१८४७	७४	
१२१	अष्टांगसूत्रम् (अष्टांगसूत्रिका)	साम्प्रदायिक-अष्टांगसूत्र- सम्प्रदाय	१८४७	७४	
१२२	अष्टांगसूत्रम् (अष्टांगसूत्रिका)	साम्प्रदायिक-अष्टांगसूत्र- सम्प्रदाय	१८४७	७४	
१२३	अष्टांगसूत्रम् (अष्टांगसूत्रिका)	साम्प्रदायिक-अष्टांगसूत्र- सम्प्रदाय	१८४७	७४	
१२४	अष्टांगसूत्रम् (अष्टांगसूत्रिका)	साम्प्रदायिक-अष्टांगसूत्र- सम्प्रदाय	१८४७	७४	
१२५	अष्टांगसूत्रम् (अष्टांगसूत्रिका)	साम्प्रदायिक-अष्टांगसूत्र- सम्प्रदाय	१८४७	७४	
१२६	अष्टांगसूत्रम् (अष्टांगसूत्रिका)	साम्प्रदायिक-अष्टांगसूत्र- सम्प्रदाय	१८४७	७४	
१२७	अष्टांगसूत्रम् (अष्टांगसूत्रिका)	साम्प्रदायिक-अष्टांगसूत्र- सम्प्रदाय	१८४७	७४	
१२८	अष्टांगसूत्रम् (अष्टांगसूत्रिका)	साम्प्रदायिक-अष्टांगसूत्र- सम्प्रदाय	१८४७	७४	
१२९	अष्टांगसूत्रम् (अष्टांगसूत्रिका)	साम्प्रदायिक-अष्टांगसूत्र- सम्प्रदाय	१८४७	७४	
१३०	अष्टांगसूत्रम् (अष्टांगसूत्रिका)	साम्प्रदायिक-अष्टांगसूत्र- सम्प्रदाय	१८४७	७४	
१३१	अष्टांगसूत्रम् (अष्टांगसूत्रिका)	साम्प्रदायिक-अष्टांगसूत्र- सम्प्रदाय	१८४७	७४	
१३२	अष्टांगसूत्रम् (अष्टांगसूत्रिका)	साम्प्रदायिक-अष्टांगसूत्र- सम्प्रदाय	१८४७	७४	
१३३	अष्टांगसूत्रम् (अष्टांगसूत्रिका)	साम्प्रदायिक-अष्टांगसूत्र- सम्प्रदाय	१८४७	७४	
१३४	अष्टांगसूत्रम् (अष्टांगसूत्रिका)	साम्प्रदायिक-अष्टांगसूत्र- सम्प्रदाय	१८४७	७४	
१३५	अष्टांगसूत्रम् (अष्टांगसूत्रिका)	साम्प्रदायिक-अष्टांगसूत्र- सम्प्रदाय	१८४७	७४	

क्रमांक	प्रत्यभाषा	कर्ता	निविदासमय	पत्रपत्रिका	निवेदन विवरण आदि
१४८	कर्मकारपदके प्रकीर्ण पत्र	मधोराय	१२वीं अ	२	अपूर्व ।
१४९	पद्यबोधभाषा	मुकुन्दराय	१२२२	२	अपूर्व ।
१५०	मिथुनाक्ष		१२वीं अ	१	अपूर्व ।
१५१	आचार्यपरम्परा	हरिरामदास निरंजनी	१२वीं अ	१	राजामुखाचार्यसम्बन्धी प्रकीर्ण पत्र ।
१५२	अन्वयभाषको	दीर्घबाणिया	"	१	रचना-१७२२ दीर्घबाणा मे ।
१५३	भक्तनाम छंदीक	भाषाभाषा विद्यादास	१२२२	१५२	मि.क.-अन्वयभाषा आचार्य अमोक्त्यार ।
१५४	वेदमन्त्रा		१२ २	२२	मि.क.-आचार्य राममन्त्रा ।
१५५	ईश्वरस्वरूप (विष्णु)	हरिरामदास	१२२२	४	रचनाभाषा १२२२ सप्तम्ये पुन ।
१५६	प्रबोधपुष्पाकर	अन्वयभाषा	१२२२	१५	मि.क.-अन्वयभाषा अमोक्त्यार ।
१५७	मनु हरिदास वैराग्यपुष्प	अन्वयभाषा	१२वीं अ	११	
१५८	रामचन्द्रसिद्धिचिन्ताको भाषाप्रभाष	हरिरामदास निरंजनी	२ २वीं अ	१	
१५९	अष्टविष्णुपत्र	दीर्घबाणिया	२ २वीं अ	३	
१६०	अन्वयभाषको	मधोराय	१२वीं अ	११	
१६१	भक्तनामिचार्यपत्र	मधोराय	१२वीं अ	१५	
१६२	दीर्घबाणिया छंदीक	मधोराय	१२२२	१५	अपूर्व । मि.क.-राममन्त्रा अमोक्त्यार ।
१६३	अन्वयभाषको	मधोराय	१२वीं अ	२	अपूर्व ।
१६४	रामचन्द्रसिद्धिचिन्ताको	मधोराय	१२वीं अ	२५	"
१६५	अन्वयभाषको	मधोराय	१२२२	१२	मि.क.-मधोराय ।
१६६	दीर्घबाणिया	मधोराय	१२वीं अ	१२२	अपूर्व ।

[illegible]

क्रमांक	वर्णनाम	कर्ता	प्रतिष्ठामय	पञ्चसंख्या	विशेष विवरण यादि
१८३	मोदीयस मयुक्तम् (मुक्त)	सारोदोपाधकर्म	१८३३	२१	अन्वयव्याप्यम् । कि.क.—यामात्राव कोटी ।
१८६	" "	"	१८३८	२३	विद्यमानव्याप्य अन्वय अन्वयम् ।
१८७		अन्वयव्याप्यम्	१८३८	११	अन्वयव्याप्यम् ।
१८८	"	"	२ बी.क	१२	"
१८९	"	"	१८३६	१	" लि.क.—विद्यमानव्याप्य अन्वयम् ।
१९०	"	अन्वयव्याप्यम्	१८३८	२	अन्वयव्याप्यम् ।
१९१	"	अन्वयव्याप्यम्	२ बी.क	२	"
१९२	"	अन्वयव्याप्यम्	"	१३	अन्वयव्याप्यम् । अन्वयव्याप्यम् ।
१९३	"	अन्वयव्याप्यम्	"	२	"
१९४	अन्वयव्याप्यम्	अन्वयव्याप्यम्	"	३	"
१९५	अन्वयव्याप्यम्	अन्वयव्याप्यम्	१८३८	२३	अन्वयव्याप्यम् । अन्वयव्याप्यम् ।
१९६	अन्वयव्याप्यम्	अन्वयव्याप्यम्	२ बी.क	१४	अन्वयव्याप्यम् । अन्वयव्याप्यम् ।
१९७	अन्वयव्याप्यम्	अन्वयव्याप्यम्	"	१	अन्वयव्याप्यम् । अन्वयव्याप्यम् ।
१९८	अन्वयव्याप्यम्	अन्वयव्याप्यम्	"	१८	अन्वयव्याप्यम् । अन्वयव्याप्यम् ।
१९९	अन्वयव्याप्यम्	अन्वयव्याप्यम्	"	२	अन्वयव्याप्यम् । अन्वयव्याप्यम् ।

विद्युत् विवरण्य धारि

निर्दिष्टपत्र

कला

वचना

कपाट

७१	आचमनपत्र (१) शुद्धरात्रको (२) प्रबोधदायनी	शुद्धरात्र जिन्नरपत्रि	२ को घ १६६	२	प्रपुष्प विष्णु सुसम्पादित प्रति (स) रचना-१७३१ : नि क -जीवनरामप्रभा कायपुट
७२	भोवदाबो	भीवदाव	२ को घ १६७	२८ वेज	१७३२ पत्र : इसमें सोम वष सो विद्यारोसतसर् दे है । (स)
७३	समानको गुप्तक (महाईजर्जान्दुहि प्रजाकारक कवितापद)		२ को घ १६८	३	नि क -सातपरात्मसिध योगबदाम्ये । कोषपीकं प्रति ।
७४	भजनसदृ		२ को घ १६९	४	
७५	अवध आचमनपत्रो काव		२ को घ १७०	५	वेष्टसोई मुद्रित १४ वेज काव्य । इस मुद्रकेमें कवित काव भोवपि द्विसाव धारि समो सिद्धि है । अवररासकी बाधिया धायक है । (स)
७६	दिगीक प्राचीन पुराकविताक चर्चोका अपट		२२९६	६	
७७	मिश्रमन्त्रोला (विद्या)		२३००	७	काव्य । १० ११वीं वष काव्य । नि क -लोभकार भयभानवास ।
७८	कायोलपट		२३००	८	काविते काव्य ।
७९	विद्यारोसतसर्दक मृदुवष लटीक		२३००	९	लोवाबासलप्ये निरोद्धत य योग्य ।
८०	(१) दानिद्वि (२) निपटुकार		"	१०-११	
८१	प्राचीनकवावपट		"	१२-१३	
८२	(१) दुरल (२) रम्येद्वद्वाना निचरो विपत (३) अमयात्रो कीरोलोरो काव	विमरकाव	२३००	१३-१४	

क्रमांक	व्यवसाय	कर्ता	सिद्धिदिनांक	पत्राङ्किका	विशेष विवरण आदि
(५११)	(५) श्रीमती राजलक्ष्मी देव मालदेवकी- री ब्याज		१८१३	८१-८२	भोवण्डाकायस्य निश्चित ।
	(५) श्रीमती आदि भाविकासि मल्ल तथा पुण्ड कसिनादि		"	८२-८३	
	(६) पवार कुमारी राजकी बहालकी			८७-८८	
	(७) बालमल्ल (बालमल्ल)		१८१३	८१-८२	मि स्वा - बालमल्ल ।
	(८) श्रीमतीकाजी ~	मुकुन्दराज	"	८३-८४	
	(९) श्रीमतीकाजीमल्लमल्ल			८५-८६	
	(१०) बालमल्ल			८७-८८	
	(११) मल्लमल्लमल्लमल्ल	भोरमल्लमल्ल	"	८९-९०	
	(१२) मल्लमल्लमल्लमल्लमल्ल		"	९१-९२	
	(१३) राजमल्ल		"	९३-९४	
	(१४) श्रीमतीकाजी (राजमल्लमल्ल)		"	९५-९६	
	(१५) श्रीमतीकाजीमल्ल		"	९७-९८	
	(१६) श्रीमतीकाजीमल्लमल्ल		"	९९-१००	
	(१७) श्रीमतीकाजीमल्लमल्लमल्ल	आदिमल्लमल्ल	"	१०१-१०२	राजमल्लमल्लमल्ल
	(१८) श्रीमतीकाजीमल्लमल्ल		"	१०३-१०४	
	(१९) श्रीमतीकाजीमल्लमल्लमल्ल		"	१०५-१०६	
	(२०) श्रीमतीकाजीमल्लमल्लमल्लमल्ल		"	१०७-१०८	
	(२१) श्रीमतीकाजीमल्लमल्लमल्लमल्लमल्ल	विष्णुमल्लमल्ल	१८१३	१०९-११०	मि क - भोरमल्ल । राजमल्लमल्लमल्लमल्ल
	(२२) श्रीमतीकाजीमल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्ल		१८१३	१११-११२	

[illegible]

क्रमांक	प्रस्तावना	कर्ता	विधिवत	पत्रादेश	विशेष विवरण धारि
७२२	स्तोत्रादिपुस्तिका (संस्कारार्थके)	सहाय्यपुरमहोदय	१ बी.ए.	१	
७२३	शुभमकर	सहाय्यपुरमहोदय	१ बी.ए.	११	
७२४	दीपप्रदीपदानादि	सहाय्यपुरमहोदय	१ बी.ए.	२	
७२५	आवकवसावकली	सहाय्यपुरमहोदय	१ बी.ए.	३	
७२६	(१) " "	"	"	१-१	
७२७	(२) शुद्ध कवित	"	"	१-१	
७२८	(३) रामलीला (कवितारित)	"	"	१-१-१२	
७२९	(४) कवित	"	"	१-१-१२	
७३०	महाभारत व महाभारत	"	"	१-१-१२	
७३१	महाभारत व महाभारत	"	"	१-१-१२	
७३२	महाभारत व महाभारत	"	"	१-१-१२	
७३३	महाभारत व महाभारत	"	"	१-१-१२	
७३४	महाभारत व महाभारत	"	"	१-१-१२	
७३५	महाभारत व महाभारत	"	"	१-१-१२	
७३६	महाभारत व महाभारत	"	"	१-१-१२	
७३७	महाभारत व महाभारत	"	"	१-१-१२	
७३८	महाभारत व महाभारत	"	"	१-१-१२	
७३९	महाभारत व महाभारत	"	"	१-१-१२	
७४०	महाभारत व महाभारत	"	"	१-१-१२	
७४१	महाभारत व महाभारत	"	"	१-१-१२	
७४२	महाभारत व महाभारत	"	"	१-१-१२	
७४३	महाभारत व महाभारत	"	"	१-१-१२	
७४४	महाभारत व महाभारत	"	"	१-१-१२	
७४५	महाभारत व महाभारत	"	"	१-१-१२	
७४६	महाभारत व महाभारत	"	"	१-१-१२	
७४७	महाभारत व महाभारत	"	"	१-१-१२	
७४८	महाभारत व महाभारत	"	"	१-१-१२	
७४९	महाभारत व महाभारत	"	"	१-१-१२	
७५०	महाभारत व महाभारत	"	"	१-१-१२	

क्रमांक	व्यवस्था	कक्षा	निर्दिष्ट समय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण धारि
७१२	(२) आचारवर्धन (३) पञ्चमूलीयप्रवचन (४) श्रीगुरुदेवप्रवचन (५) आचारवर्धनप्रवचन (६) आचारवर्धन (द्वितीय कक्षा) (७) प्रवचन सोमवार को (८) कक्षा प्रवचन विद्यार्थी-कक्षा-प्रत्येक (सब)	आचारवर्धनप्रवचन कक्षा-प्रत्येक	१२-१७ १-१ १-१ २-१११ १११-१४ १११-१२८ १२८-१११ १२१ देव	१२-१७ १-१ १-१ २-१११ १११-१४ १११-१२८ १२८-१११ १२१ देव	नि.क-मोटाखाना । प्रवचन पत्र प्रवचन । छपुन । छपुन । ४ नि.क-भयलाल शर्मा श्रीमन्निवासी गोपीचंद शर्मा कपूरनिवासी । नि.ल-भयलाल । यह पत्र श्री हरिनारायणजी पुरोहितको भरोना- निवासी महामोहनसमने भिजा था । (स) आचारवर्धन को लावनी है । नि.क-काहिलाल । रही-मुख्य को दरबार वकालतप्रवचनी (स) नि.क-रायप्रकाश रामचन्द्रप्रकाश ।
७१४	विद्यार्थी-कक्षा-प्रत्येक (सब)	आचारवर्धन	१२२३	१२१ देव	
७१५	भारत (भारत) विद्यार्थी-कक्षा-प्रत्येक (सब)	आचारवर्धन	१२२३	१२१ देव	
७१६	भारत (भारत) विद्यार्थी-कक्षा-प्रत्येक (सब)	आचारवर्धन	१२२३	१२१ देव	
७१७	भारत (भारत) विद्यार्थी-कक्षा-प्रत्येक (सब)	आचारवर्धन	१२२३	१२१ देव	
७१८	भारत (भारत) विद्यार्थी-कक्षा-प्रत्येक (सब)	आचारवर्धन	१२२३	१२१ देव	
७१९	भारत (भारत) विद्यार्थी-कक्षा-प्रत्येक (सब)	आचारवर्धन	१२२३	१२१ देव	
७२०	भारत (भारत) विद्यार्थी-कक्षा-प्रत्येक (सब)	आचारवर्धन	१२२३	१२१ देव	

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	तिथिसमय	पृथक्पृष्ठा	विशेष विवरण यादि
७४	सुधीपत्र बोधिसूचका		२ बी.अ		यस्य पुस्तकौका विनये भोटिहोत्र कायमि मरे बाकर का नाम समानो कस्य येने वये । केवल राजावर भाग है । इससे एक ककडा बाबर भरा हुआ है और लड्डुस मकखोरे २ पत्र है । (सं)
७४१	कव्योपनिषद्भाष्य		"	२+१	कव्योपनिषद्भाष्य १ पत्र है । ऐसा प्रतीत होता है कि सम्पादनार्थ इस प्रसिका सेकन पुत्र हुआ था । (सं)
७४२	वीरानन्दप्रकरण	विष्णुधर्मोत्तरकथ	१८९७	२	मि क -वैष्णव पुस्तोत्तरकथ पात्रावृत्तये ।
७४३	मकरद्वीपा	शैलनाथ	१८९८	१५	" रामकथ प्रसवर ।
७४४	मत्स्यवेद्यात्मकमन्त्राष्टांगपुराण	प्रविश्वोत्तरपुराणकथ	१८२९	९७	हीरानन्द मपर कस्यास्तीत्यये ।
७४५	वायव्यसारसंघ	कवि कानिनाथ	१८२९	८	मि क -वैष्णव विद्याधी मुनेस्वामीत्यये ।
७४६	वायव्यनीतिसार		१८९८	११-१६	यस्य ११ से १६ तक अज्ञान्य । मि क -बुद्धाभो राम विषय आभासेरीनाम ।
७४७	वीरसम्पद्भिन्नास्तोत्र	विश्वरामनाथ	१८७४	३	मि क -बनोराम कथ्यन् मुमुक्षुसत्यये ।
७४८	वीरजातके स्तुत पत्र		१८९८	११	स्तुत पत्र ।
७४९	गुणवित्तसंघ			७	स्तुत पत्र कुमानेय साधकके ये किन्तु पत्र जाने है यह उत्तर-पुत्र लव आनेसे पाठ की अस्मय हो गया है । (सं)
७५	द्वितीयके बोधे			११	यस्य । इससे माये की छठिवां रत्न पुरोहितकी के सुधीपत्रमें लिखित मयी है । ये स्तुत बास्तो से पाई गई है । (सं)
७५१	पुस्तोत्तरभाष्य	स्वप्नपुराणकथ		१-११	

क्रमाङ्कः	व पद्याम्	वर्ता	निरुपितसमयः	पञ्चसंख्या	निरुपित दिनांशु मासि
७२२	प्रशोचननरदा	रघुनाथपुराणपदा	१२वर्षीया	१-१	अशुभ बुधितः । वर्ष १ ३ समाप्तः ।
७२३	नारदचरितचरणम्	धीश्वरसंहितामर्षित	"	१२-२६	वर्ष १६ १६ तक समाप्तः ।
७२४	समाचार छन्दोपल	सप्तर्षिसङ्घ	१२वर्षीया	२८-४८	"
७२५	राजकर्णालकल्प	मुनिनीलमणोत्पासी	१२वर्षीया	१-७१	वर्ष २-७७ तक समाप्तः ।
७२६	बृहत्सारासारीपञ्चमस्तोत्रम्	सुखचक्रोक्त	१२११	१-१२२	वर्ष ४१-७७ तक समाप्तः ।
७२७	देवीपूजायुक्त	रघुनाथमर्षित	१२वर्षीया	२	विष्णु-बोष्ट बाबोच निरुपितो सोमरत्नम् ।
७२८	सामान्यज्ञानसङ्ग्रहम्	कामिनीकृत	१२वर्षीया	२२	अशुभ । २वर्ष वर्ष समाप्तः ।
७२९	अक्षयपञ्चमीनुरो	नारदीय रघुनाथमर्षित	१२वर्षीया	२६	अशुभ ।
७३०	धीश्वरपञ्चक	नारदचरितचक्रोत्पासी	१२वर्षीया	१	
७३१	नारदचरितचक्र	"	"	३	
७३२	नारदचरितचक्र	"	"	४७	
७३३	नारदचरितचक्र	"	"	३	
७३४	धीश्वरपञ्चक	"	"	१	बुधितः ।
७३५	नारदचरितचक्र	"	"	२८-७	
७३६	नारदचरितचक्र	"	"	१	अशुभ बुधितः ।
७३७	नारदचरितचक्र	"	"	२८-७	३८ वर्ष समाप्तः ।
७३८	नारदचरितचक्र	सोमनाथपुराणो	१२२२	१	
७३९	नारदचरितचक्र	नारदचरितचक्र	१२२३	२	
७४०	नारदचरितचक्र	नारदचरितचक्र	१२वर्षीया	१	

क्रमांक	व्यवधान	कला	निमित्तकाल	पत्रकसंख्या	विशेष विवरण आदि
७३१	वाताकेचरी	धीरासमोस्त	१२वीं छ	१४-२८	छन्दसु भूति ।
७३२	मधुमोस्तोत्र		"	३	वर्णिक ।
७३३	नववृषभचरित्रिणि		१७७४	३	सि क - राजसुखाल वैष्णव कन्याजी प्राप्त ।
७३४	लालिचरिद्वयवचनसिखादकस्तोत्र		१२वीं छ	४-६	हिन्दी-संस्कृतपरिचित ।
७३५	गारमस्तोत्र		"	७-८	छन्दसु ।
७३६	(१) रामायदकस्तोत्र	विरामपुराणोक्त	१२४४	२-४	पत्र ३२२ प्राप्त । सि क - दूरकावलि ।
७३७	(२) मदनमन्त्रकस्तोत्र		"	४-७	"
७३८	(३) ब्रह्मस्तोत्र		१२वीं छ	७-१७	"
७३९	वैतथपञ्च रत्निका		"	६	"
७४०	(१) दक्षिणमोस्तोत्र		१२४४	१५	भूति । पत्र-१७-१४ एक प्राप्त ।
७४१	(२) दक्षिणमोस्तोत्र	रत्नमनुवाचनं	१७८२	३-३८	सि क - रामकृतविवरण ।
७४२	वर्णित्रकावच		१२वीं छ	१	कन्यावाले विहित, अन्यपुत्रे प्राप्त ।
७	रत्नमनुवाचन		"	१	"
७४३	मोपममनुवाचनिक		१२वीं छ	२३	"
७४४	मोपममनुवाचनिक		"	२३	"
७४५	मोपममनुवाचनिक	मङ्गलपत्र	१२वीं छ	१	"
७४६	मोपममनुवाचनिक		"	१	"
७४७	मोपममनुवाचनिक		१२वीं छ	१	"
७४८	मोपममनुवाचनिक		"	१	"
७४९	मोपममनुवाचनिक		१२वीं छ	१	"

क्रमांक	परचनाव	कला	निरूपितमय	पत्रसंख्या	निरूपित दिनांक यादि
७६	द्वाल	आचार्यन	२ बी.ए.	२	
७८७	सुब्रह्मचारी आदि	कवयलिक ? यमभाजन	२	२	
७८८	अकाराचका इतिहास		२	२	
७८९	आत्मशास्त्र द्विज होय		२१	२१	
७९०	ऐतिहासिक सामाजिक सुदृष्टक		२	२	
७९१	सुदृष्टो मुद्रित मर्ति		२१२२	२१	इन्द्रियवर्णनम् व्योम १८१९से इतिहासमें उद्धृत ।
७९२	एव विद्यानिपाठः	धीवत्सनाचार्य	२	(१-२)	लिक -योपीयाच व्यास ।
	(१) अर्वात्मशास्त्र	(अभिपुष्पार)	२	२-७	
	(२) वरसभायक स्तोत्र	वीरकुमार	२	७-९	
	(३) लपारलोको		२-१२	२-१२	
	(४) भाष्य(आत्मशास्त्र)	धीरपुत्राच	२	१३-१४	
	(५) सुब्रह्मचारी	धीवत्सनाचार्य	२	१४-१७	
	(६) आत्मशास्त्र	२	२	१७-१८	
	(७) विद्यात्मशास्त्र	२	२	१८-२२	
	(८) सुब्रह्मचारी	२	२	२२-२३	
	(९) विद्यानिपाठः	२	२	२३-२४	
	(१०) अकाराच	२	२	२४-२५	
	(११) आत्मशास्त्र	२	२	२५-२७	
	(१२) विद्यानिपाठः	२	२	२७-२८	
	(१३) आत्मशास्त्र	२	२	२८-२९	
	(१४) सुब्रह्मचारी	२	२	२९-३०	

क्रमांक	व्यवसाय	ऊर्जा	निगमिष्टमय	पत्राङ्कीकृत	विशेष विवरण आदि
(७१२)	(१२) सविनयविहीनी	बीजकलाबाबाई	१९२२	२६-३	
	(१६) बालदेव	"	"	३१-३३	
	(१७) पञ्चवरी	"	"	३३वां	
	(१८) सत्यासतिथय	"	"	३४-३६	
	(१९) निरीपलक्षण	"	"	३६-३८	
	(२०) सेवाश्रम	"	"	३८-४०	
	(२१) अनुसन्धकसोड	"	"	४०	
७१३	सिवाचरोरय	सिवाचरोरय	१९वीं अ	१	
७१४	प्राप्त्योर्विवरण (डा. कल्याणलाल- विवरणम्)	डा. कल्याणलाल	१७२६	१६	
७१५	आत्मसात्कृतमय		१९वीं अ	१	
७१६	समुदायनिरुद्धिर सत्यपुत्रावर्दीपिका			३ + १ = ४	अन्युप । सुख पत्र । १ वष किसी सुखरे सत्यका प्रतीत होता है । (सं) सुख पत्र ।
७१७	संस्कृतिका				
७१८	देवतासंस्कृतिकापिम्पुलि ?	अश्वरीक	"	२	
७१९	देवतासंग	राधापुत्राकाव्य	१९२४	२७	
८	संस्कृतपत्रावर्दीपिका	भारतीपति श्रीजीवपति- विषय	१९वीं अ	२३	
९	संस्कृतपत्रावर्दीपिका	सोमनाथपुत्रादि	"	२	अन्युप ।
१०	संस्कृतपत्रावर्दीपिका	सुखपत्र	"	२	"
११	संस्कृतपत्रावर्दीपिका	समुदायपत्रावर्दीपिका	"	१७-२१	मुद्रित ।

क्रमांक	राजावाज	कथा	निर्दिष्टपत्र	पत्रसंख्या	विशेष विवरण यात्रा
८४	शेरावाजोपकाय		१६बी.अ	१२	अष्टपुत्र ।
८५	मल्लिकार्जुन (म्यामसार)		"	५	अष्टपुत्र ।
८६	चोचका (म्यामसार)		"	६	
८७	बलाभुवनमोचनमृदुलि (राजावाजोपकाय)	पारोपर (कोचनपति)		८	
८८	मिचला		१६बी.अ	७	अष्टपुत्र ।
८९	दीपिरोचनिकत (?)		१६बी.अ	८	अष्टपुत्र ।
९०	मल्लिकार्जुन	कुल्य मृदु एवमाचष्टीर पुत्र, बारायलापुत्र	१६बी.अ	१९	अष्टपुत्र ।
९१	पौराणिकबाण्यमल्लिकार्जुन (?)			१७	अष्टपुत्र ।
९२	शेरावाजोपकाय	म्यामसार मृदु	"	७	अष्टपुत्र ।
९३	राजावाजोपकाय		१६बी.अ	१७-१८	अष्टपुत्र ।
९४	बलाभुवनमोचनमृदुलि (राजावाजोपकाय)		१७बी.अ	१७-१८	अष्टपुत्र ।
९५	मल्लिकार्जुन (मल्लिकार्जुन)		१६बी.अ	७	अष्टपुत्र ।
९६	म्यामसारमल्लिकार्जुन		"	१५	अष्टपुत्र ।
९७	मल्लिकार्जुनमृदुलि	मल्लिकार्जुनमृदुलि		१६	अष्टपुत्र ।
९८	मल्लिकार्जुनमृदुलि	मल्लिकार्जुन (१)	१६बी.अ	१९	अष्टपुत्र ।
९९	मल्लिकार्जुनमृदुलि	मल्लिकार्जुन	१६बी.अ	१९	अष्टपुत्र ।
१००	मल्लिकार्जुनमृदुलि	मल्लिकार्जुन	१६बी.अ	१९	अष्टपुत्र ।
१०१	मल्लिकार्जुनमृदुलि	मल्लिकार्जुन	१६बी.अ	१९	अष्टपुत्र ।
१०२	मल्लिकार्जुनमृदुलि	मल्लिकार्जुन	१६बी.अ	१९	अष्टपुत्र ।
१०३	मल्लिकार्जुनमृदुलि	मल्लिकार्जुन	१६बी.अ	१९	अष्टपुत्र ।
१०४	मल्लिकार्जुनमृदुलि	मल्लिकार्जुन	१६बी.अ	१९	अष्टपुत्र ।
१०५	मल्लिकार्जुनमृदुलि	मल्लिकार्जुन	१६बी.अ	१९	अष्टपुत्र ।
१०६	मल्लिकार्जुनमृदुलि	मल्लिकार्जुन	१६बी.अ	१९	अष्टपुत्र ।
१०७	मल्लिकार्जुनमृदुलि	मल्लिकार्जुन	१६बी.अ	१९	अष्टपुत्र ।
१०८	मल्लिकार्जुनमृदुलि	मल्लिकार्जुन	१६बी.अ	१९	अष्टपुत्र ।
१०९	मल्लिकार्जुनमृदुलि	मल्लिकार्जुन	१६बी.अ	१९	अष्टपुत्र ।
११०	मल्लिकार्जुनमृदुलि	मल्लिकार्जुन	१६बी.अ	१९	अष्टपुत्र ।

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	सिद्धिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण
८२१	कोमलसमय	कुम्हारनाथजी अंबादास वसुधासिंहिय	१८२३	२६	बाराबती संस्कृत ब्राह्मणसमर्थे मुद्रित ।
८२२	अपराधसमय (मालासमय)	सुधादास (मालासमय)	१८३८	२८	रचना—१८३४ । आरंभ काला प्रोस रीमेंसे मुद्रित ।
८२३	बाल-कालिदास (मुद्रासिद्ध संस्कृत)	(रीमां नरेश)	१८२२	१७	इन्द्रियम प्रोस सिद्धिसमय अथवा (बाराबतीसमय) से मुद्रित ।
८२४	सुधावीरचरितम् (आरंभम्)	सुधाकवि बलभूति	१८२६	२१४ + अनेक	विश्वनाथवर प्रोस अन्वर्तिसे मुद्रित ।
८२५	(१) अन्तपुराणिका (काला) (२) मुद्रासमयसमर्थी (३) आरंभसमय (समयसमर्थीकालासमय)	दीप जीकुम्हारनाथकवि "	१८२७ "	२८ ३६ "	
८२६	संस्कृत-पत्रमाला	परमनाथदेव	१८२६	१८	
८२७	"		१८२६	२	
८२८	संस्कृत-समर्थी		१८२८	३	
८२९	अन्वर्तिमाला		१८२९	७	दीपजी (बालनाथ कुम्हारनाथसमर्थी । अन्वर्तिमालासमर्थी जीवेने समर्थी ।) १ इस स्मोचकी काल अन्वर्ति की व्याख्या की गई १ । सिद्ध-अन्वर्ति परमनाथ अन्वर्तिमालासमर्थी ।

अमृतवारा ५
 अमृतगङ्गमुक्ताब्जनी ६२
 अर्जुन भीता १२९
 अर्जुनबाबी (अर्जुनराज) ६३
 अर्जुनस्य रथ मातामि १४
 अन्नपञ्चक विवेक १४३
 अर्चनदुष्टमनुमतिपत्र १४१
 अरिस्त (संवादास) १४
 अन्नबदास्तोत्र लक्ष्मी १२५
 अन्नपुत्रीपात्रम् (नामक) ७
 अश्विनीजीवा (रक्तक) ३०
 अष्टाध्याय (देवकवि) ३३
 अष्टादश कलशका शेष १२९
 अष्टापदी (कबीर) २७, ३ ३५, ४१
 अष्टापदी (अष्टादश कवि) ४१
 अष्टापदी बड़ी (कबीर) ३५
 अष्टापदी बंदाड़ी रत्नी (कबीर) ३५
 अष्टापदीका (बीरक) ९
 अष्टास्तोत्री अष्टाध्याय १२६
 अष्टाङ्गपीठ ३२ लक्षण ३१
 अष्टावक्त्रीताम्रीका १४३
 अष्टावक्त्री कविता (कवि बीरक) ५६
 अष्टावक्त्रीबार्च १४
 अष्टमरात्रिका मङ्गल १२३
 अष्टोत्तम वसुधका करमा आदि १२३
 अष्टोत्थिनी प्रनाम कविता ३

आ

आक्षर उद्धार बाबनी (रक्तक) ३१
 आष मीतको जोड़ी (परछाया) १६
 आचार्यपरम्परा १४५
 आठ नाम आर्चन शेष ३
 आत्मबोध (बीरक) २१ ४४
 " (बेलाभीष्टाष्ट) ५३
 आत्मबोधग्रन्थ (बीरक) ७४
 आत्मबोधविवरण १६
 (आदि मङ्गलकविद्वय)

आत्मबोधरीकी भावार्थिका १३
 आत्मविचार ग्रन्थ १४५
 आत्मा अक्षय अक्षय (सुखरसा) ३३
 आद्या मङ्गलकवीहृदयस्तोत्र १२६
 आदिपञ्चमस्तोत्र १२३ १३१ १३३
 आदिपञ्चम हनुमन्स्तोत्र १३३
 आदिपुद्गल वसुधामैत्रस्तोत्र १२३
 आदिपुद्गल चाराया लबाई
 अष्टादशक ग्रन्थ और वेदधामार्ग १२३
 आर्यापीठ (सुखरसा) ६६
 आरती मन्त्रावली १३३
 आर्यापीठ ७७ ११ १४२
 आर्यवर्चस्व (पु. हरिनाथप्रसाद) १२९
 आर्यलक्षणको पत्र ४३
 आर्युरीप्रयोग १२७
 आर्यलक्षण १३५

इ

इक्षार शेष (अन्तर्गत) १७
 इक्षित अष्टपुर १२४
 इक्षित भावार्थिका १२४
 (इक्षितारसरसमुच्चय) ७
 इक्षितारसरसी १४२
 इक्षितारसरसमुच्चय (पत्र) १३३
 इक्षितारसर १४१
 इक्षितारसर रावली
 गुण अष्टाध्याय (अष्टादश लक्षण) १४७
 इक्षितारसर १२६ १३१
 इक्षितारसरविषयग्रन्थ (बीरक) २

ई

ईश्वरलिलासङ्गम (बीरकग्रन्थ) १ ३
 ईश्वरलिलासङ्गम (मिनी) १४५
 ईश्वरीष्ट, महाराजा लबाई १२४
 ईश्वरदासका पत्र ४३
 ईश्वरदासकी वारुणका बीरकविचार ११४

कलाम्बु १४१
 कवित ४२ १२४
 " (सेवादास) १३
 " (हरिदास) १४
 कवित रामायणसारमाला १ ५
 कवितमय (रघुरामि) ५२
 कवितसंग्रह १४ १११ ११२ ११६
 कवितसंग्रह (सुग) ११६, १२
 कविप्रिया (केसवदास) ५६, ८२
 कहुमुकरीके कव ५६
 कादम काशीकी छाती ४३
 कादमबी काशीका घर २३
 कामहोका घर ४३
 कामप्रिया राखलका घर ४
 काकरबोय (गोरख) ४४ ६१
 कादिरके लक्षण ४
 कादिरबोय (गोरख) ७४
 कादिरबोयका (गोरख) २१
 काममर्मरसुख्यार्थ १४
 काममर्मरस राखलके घर १४२
 कामरदासबी (बांकीदास) ११५, १२१
 कायामाखंडदास (कलपोवाल) ७६
 कायावेदि (बाहु) ४१
 कांतबीरपंतहुलनामस्तोत्र १४
 कांतबीरपंतु मन्त्रोपनामविधि १४१
 कामविन्दासबी (गुम्बरदास) २६
 कालिकामन्त्रोपनामोपनाम १२५
 कालिदास द्विज होम १५६
 किकका (छ. रामनिह) १२१
 कीमिया प्रह्लाद ७
 कीमहजीका घर ४३
 ककवितलीसी (कदिराजा बांकीदास)
 ११५ १२
 ककवितिया (सेवादास) १३
 " (हरिदास) १४
 कुंदरदासजीका घर १११
 कुमारसम्भव १४४

कुलपतिमिश्रकी वधपरम्परा ६२
 कुलशेखरचुलम् १ ७
 कुलकम्बिका १३५
 कुलवधपत्र (कदिराजा बांकीदास) ११५
 १२

कुलपचीसी () ११६
 कुलपचरित्रकोटी (वरतराम) १६
 कुलपचरित्रशारदाजी (मीनिदास) ३३
 कुलप टीरी प्राचाच री सुन कर भाषी
 (पोत) १२
 कुलपदासका घर ४३
 कुलपदामनिकपचम् (भाबल) १ ६
 कुलपदमिनीपीरी बेल ६२
 कुलपद्वारी १३१
 कुलपविद्याल (मुवाकदम) १११
 कुलपसुति ६
 कुलपान्नका घर ४
 कुलपान्नमिष्यास्तिस्यायुति १६
 कुलपका घर ४१
 कुलपदास ४४
 कुलपिद्वीका वर्णन व हुबला १२३
 कुलिकावर्णनम् १५
 कुलपान्नामि २५ १३३
 कुलपवर्मन १६२

स

स्याल १३६
 सङ्गदय कवित (गुम्बरदास) ८५
 सङ्गदेलवाल केनेके १४ मोम १ ८
 सङ्गदेलवालकी परतल १ ५
 साधो-साधो प्रभ (गोरख) २
 साधो प्रचलदास ने लालमोबादीरी बात
 १२२

य

य्यालमाला (गोरख) १५
 य्यालली () १
 यद्गाजीकी प्रभाव ५५

पुद्गलजोपग्रन्थ (सवाहास) ११
 पुद्गलहिमा (रामचरण) १८
 पुद्गलहिमा १३
 पुद्गलहिमाजोपग्रन्थ (सेवाहास) १३
 पुद्गलहिमाष्टक (गुह्यरहास) ८८
 गूढा एवं कवितादि ८४
 गूढासागर (भक्तोद्धारहास) ३७
 गूढचरण्यबोध (गुह्यरहास) ३१
 गोगरसावना १३९
 गोना बोधाय १ ८
 गोमा घोर १ ८
 गोपालचक्राङ्ग १३६
 गोपालपुत्रादिभि १३८
 गोपालसहस्रनाम १३६
 गोपालसहस्रनामस्तोत्र १२९
 गोपालसहस्रनाम कथा १३४
 गोपालसहस्रनामावलि १३७
 गोपीजीय १३२
 गोपीकन्दका बोध पद (रामचरण) १७
 गोपीकन्दका महिमापद (कालू वा घोरछ) १२

गोपीकन्दकी छात्री १५, ४३
 गोपीकन्दकी छात्री ६१
 गोपीकावचरित (सेवाहास) ३२
 गोपीकन्दजीका वर ४३
 गोपीकावजी छात्री २३
 गोपीकाव बोध ग्रन्थ (रामचरण) १७
 गोरक्ष-नन्दप्रोथी (गोरक्ष) ७४
 गोरक्ष-नन्दप्रोथी ९१
 गोरक्ष-नन्दप्रोथी बोध ग्रन्थ १४
 गोरक्ष-नन्दप्रोथी (गोरक्ष) ४४
 गोरक्षनाथकी छात्री ६१
 गोरक्षनाथजीका ग्रन्थ ४४
 गोरक्षनाथजीका ग्रन्थ श्रुति, कथन
 धादि ६१
 गोरक्षनाथजीका वर ३९ ४४

गोरक्षनाथजीकी कृतिपा १४
 गोरक्षनाथजीकी तिथि ४४
 गोरक्षनाथजीकी छात्री ९
 गोरक्षपत्रिका १३७
 गोरक्षबोध २
 गोरक्षचन्द्रोपग्रन्थ (गोरक्ष) ४४
 (गोरक्ष-नन्दप्रोथीसंग्रह)
 गोरक्षछात्री ४४
 गोमोहनहिन्दः स्तोत्र ११७
 गोमयवहासका वर ६३
 गोविन्दलीलापद (वरधराम) १२
 गोविन्दाष्टकस्तोत्र ११२
 गोविन्दराजस्तोत्रका १४
 ४
 गच्छाकचकी पत्नी ४
 घटिगान्धारी (वाकिर) ३०
 घटनवाहका वर ४३
 घोडाबोलीकी छात्री ४३

५

घ्यार ब्यार राजकी वतावनी १३९
 चन्द्रोपग्रन्थ १३६
 चण्डीरक्षास्तोत्र (राजनाथजी) १३२
 चतरभुजका वर ४
 चतुर्वेदिकथा १४
 चतुर्वेदिकोपग्रन्थका वर ११३
 चतुर्वेदीकी १३२
 चतुर्वेदीका पद्यका ४ ८३ ८३
 चतुर्वेदीकी ब्रह्मभारत ८३
 चतुर्वेदिकोपग्रन्थका १३३
 चन्द्रबोलीका वर १ ६
 चन्द्रावली (चतुर्वेद) १३
 " (सेवाहास) १४
 " (इतिहास) १४
 चन्द्रबोलीका वर १४
 चन्द्रबोलीका वर १३२
 चन्द्रबोलीकी छात्री ३३ ४३

चपंडनायामु नम्रंवाह ६१
 चक्रका पद ४१
 चक्रनायका पद ४६
 चाक्षस्मितीतिभाषा (उन्मेषराम) १३
 चाक्षस्मितीतिहार १४८, १४९
 चाक्षरपसारसप्त १३६
 चार छन्द (तरुवेला) ४
 चार रिछा २
 चार वेदयें पद चारन ३
 चारों सम्प्रदाय श्रीर दाम्पत्य ४
 चाक्षुषोपनिषत्प्रारम्भ १२८
 चिन्मिताहार (पंथापर) ३३
 चिन्तामणि विद्वान् (चिन्तामणि कवि)

८

चिन्तामणिसोमप्रग (पुरतराम) ६८
 चिन्तामणिप्रग (रामचरण) ६८
 चिन्तामणिश्रीगणेश १३
 " = (सोमनाथ) १३
 " = (जयजीवन) १३
 चिन्तामणी (रामचरणवाह) १७
 " = (मालवान) १९
 " = (हरिमयि) ६४
 चित्रकाम्य (मुन्दरहाल मोहनहाल) ४६
 चित्रमुकुटकी बात ३०
 चित्रामनी (नारायणवाह) ११६
 चित्रामनी (पताकनी ?) (ऐल करीह) ११६
 चूचनचुरचण्डका (कविदाजा वांकीराम) ११३ १२
 चुचकावकी क्षीरी ४६
 चुचकाकी छायी ६३
 चण्डालकाळे पद ६६
 चोरपनाथकी छायी २
 चोरहू चिछाक छान्धाविक छय ८
 चौपरी (कवी) १ १३
 चौपरी रम्यो (कवीर) ६६
 चौबीस लवहार (चण्डाल) ८३

चौबीस घुरछोला (जननीपाल) ११ ६२
 चौबीस घुराकी लीला ४६
 चौबीस तिय ४ ४२
 चौबीस तियनाम ६१
 चौरीपोपावकी छायी ४३

छ

छन्द पावुजीरो १५२
 छम्बरलाबनी (हुरीरामवाह निरंजनी)
 " = १८ १४८
 छम्ब-कवित्त (सेवावाह) १८
 छायापुष्पकक्षकम् १३८
 छीतमळे पद ४९ ३२

ज

ज्योतिष (रकुट) ११
 ज्युजपत्र १३६
 ज्वालापारिणी मातामण्य १२६
 जाहरी कम्पाप्राचर्षवाह ४६
 जयजीवनका पद ४२
 जयजीवनकी कवित्त ३
 जयजीवनकी की कृष्णगुलाफनी २
 जयजीवनवाहजीकी काशी १५ ६७
 " = छात्री ६३
 जयप्राचराक लवया ३
 जयप्राच पण्डितराज १ ४
 जयप्राचपतक (भावापछवट) १६२
 जयस्यंयलसुता (जय) लक्ष्मिप १४६
 जयनाथकी मोहोभेरी गज १३१
 जहभरतकरिज (जननीपाल) १६ ७६
 जनी हुचवतम्ये छायी २२
 ज-ज-कर्मलोता (वाचोदाम) ३३
 जगज्जुहारी १३
 जननीपालक पद ४६
 जनरल मन्थन एण्ड लिमिटेड १०४
 जन्मगी टटाईल कुड पायवान ८
 (रामचरण)
 जट्टाका इतिहास (मुंजी देवोदामार) १२१

कम्पुरके आधीरवारमयी कहरिअ १४९
 कम्पुरके ठिकानेदारोके विजेवाधिकार
 पावि १५३
 कम्पुर के राजाधोंका बंधन
 कम्पुरराज्यकोसिख व आधीरवारों से
 विवेक १४९
 कम्पुर राजबंदावली २३
 कम्पुर बिलास (काव्य) १६९
 कम्पुरसम्बन्धी क्यतरी फुडकर बाता
 (बांकीवाल) १९१
 कम्पसाह मुकल्लकास (मन्थन मङ्ग) २६
 कालम्बरीपाककी कम्बी ४३
 कालमेव १६
 कहरनिकपत्र १४०
 काल-इतिहाससे कम्पुरके राजाधोंका ह्रास
 २६
 कालकपडसि १३३
 कालकीबीकी स्तुतिके पत्र १३५
 कालकीमन्त्र १४१
 कालकीमन्त्र १४
 कालकोतहुल्लामस्तोत्र १३३
 कालकीबीकीकमोहूमकवच १३२
 कालराजमीला ३३
 कालम्बरी की कम्बी २३
 कालम्बरीपाककी कम्बी ६१
 'अष्टौ विधि राजे राम' ४
 किंसे से स्तोत्र १३
 कीबदका पत्र ४
 कीबदका १३
 कुपनितरविनी कलमई (कलमसिद्धि)
 १११
 कुनसि मरुपतिडिलमसूतग्रन्थ ४६
 (पृथी मुन))
 कुनसध्याम (मुभनसध्याम) १०
 कुनसमन (रकुटपत्र) ३३
 कुनसमन ६
 कहुलसमजडाव (बांकीवाल) १९

कोहुलसमजडावरा बुझा ११३
 कीतरामकीकी सौरमका धन्य ३
 कीनबंदास (रक्तवज) ३
 कीन सोमसमाधि कोप ग्रन्थ (पृथीनाम) ४०
 कीमलका पत्र ४९ ४३
 कीमलकी लाची ४ ४९
 कोपेवरी कम्बी (बोरख) ७३
 ७३
 कोहरमल पक्षित बाँक धेगडी
 ८
 कीमलका पत्र ४२
 कोहरमल कोप ग्रंथ (हरिदास) १४
 ४
 किङ्कल अभिधान लंघु (मुरारीमल कवि-
 (राजा) ३१
 किङ्कल कविता-लंघु ११०
 किङ्कल कील-लंघु ११३
 किङ्कल पुस्तक ११३
 कुंभवातका पत्र ४१
 ४
 कोला मारवकी बाल (कुछल्लाम) ०४
 ७
 लखकोव प्रकर १४३
 लखनजी (राजानुवात) १ ३
 लखनमन्त्रालय लंघु १४६
 लख लंघाम कोप पत्र (पृथी-मुन) ४६
 लख किन्तायमि (सुन्दर) १० ३१
 लख लंघु (लं) १४३
 लखविमि (लं) १३७
 लखवितावली ६
 लखजी ३
 लारास्तोत्र (लं) १३०
 लोन मुन ९
 लुरसो लली बदावली ३३
 लुरसोस्तोत्र १३३

मृगचरित्र (परमानन्ददास) २६
 मृगदासबाबो १९
 मर्नाका पद ४१
 मर्नाको छात्री ६१
 मगधमन्त्रिनीकमल १९७
 मनमदल्लभन (भयनामदास विरजनी) ६४
 मनुमहिमाह्वालम् १४
 मर्मसंसार (कमलोपाल) ७ १३
 मर्मसंग १७
 मुबलीमनकी मन्त्री १२ ४६
 मुसकेप्रपुष्पीनाकसंसार ६७

न

न्यायदर्शनार्थिके प्रकीर्ण पत्र १६१
 न्यायमार्तिकनाम्न १९
 नमस्कारमन्त्रवाचि रघुसुख ७ न ६ १
 नमोत्तमिष्णुसुहृत्तनाम १३४
 नरदत्तसुलभ ६२
 नरदय्यशेष (नोरख) २१ ४४ ५३
 नरदशोदयचलिका (पोरख) ७४
 नरद्विह्वारसीका पद ४
 नरसी भावि पदसंग्रह ६७
 नरसीजीकी हठी (रतनदास) १६
 नरसी मन्त्राका पद ४
 नरेचा (नारमचा) धामलमन्त्री वेतिहासिक-
 पत्र १३३
 नरघडुर्जनकपमिनि १३७, १३८
 नरघडुल्लोभावि १३७
 नरका भक्ति २
 नर नाथ २
 नरनिमिनाम ६१
 नरनोरताग्रंथ (नोरख) २१
 नररत्न १३६
 नररत्नकवित (केदारदास) ३७, ६४
 नररत्नस्तोत्र १२४
 नररत्नका इतिहास १३६
 नररत्नकाव्य १ न ११६

नरराजसंभाषणां न
 नराय कामधामाका वरने ६७
 नरायलीमंत्र (मयनामदास) १३६
 नसीहुतनामा (हरिदास) ४ ६२
 नकाशकोनर्धन (पुष्पीनाथ) ४८
 नागरपान १९३
 नायसमन्त्री काव्यी २६ ४५
 नायग्रंथ (रामचरण) ६६
 नायाराओ नीछात्री (रामचरण) ३१
 नाडीपरिका १४७
 नाथदशमस्तुति (वीरुरि) १२३
 नाथुराजमन्त्रिकि वृत्तकालिका लुचीपत्र
 १३३

नामकलीका पद ३६, ६२
 नामकलीकी छात्री २६, ३६ ६१
 नामवेचलीका पद १ १६, २६
 नामवेचलीकी परबही ७ २३
 नामवेचलीकी छात्री १ ३६
 नामवेचलीके शिष्यजीपदों पर डीका २
 नामवेचलीके शैलीत पदों पर डीका २
 नामनिकम्पग्रंथ (हरिदास) १४
 नामप्रसाप (रामचरण) ६८ न७
 नामवलीसी (सुरतराम) ६६
 नाममहिमावचन (वेधनाम) १३
 नाममाला (वरतराम) १८
 नाममाला (नामिक) ६
 नाममाला—दीप्त वेमिपो (रतन हुनीर)
 ६१

नाममहिमा (दास) ८६
 नाममाह्वालम् (द्विजकम्पार्थदास) ११
 नामरत्नाकमस्तोत्र १२६
 नामाष्टक (गुम्बरदास) ६३
 नामका पद ४१
 नामिका पद ४१
 नामिकादिके रघुसुख कवित १४६
 न रघुपाककर न १३७

भारवीपपुराण (पूर्व भाग) १४७
 नारायणकथन १२८
 नारायणहृदयस्तोत्र १५७
 नासकतभावा (व्यामनास) १६ १५८
 नासकतध्यान्यामभावा ११
 नारायणधर्म १५३
 नारायणस्तोत्र १३३
 नारायणमुक्तमप्य १२६
 नारायणहृदयस्तोत्र १२६ १३६
 नील(म) व्यामर्षण (हरिदास) १४
 नीलसार (कृतेस्वयं रामोक्त) ११४
 निरयुक्तपक्षा अथ ८६
 निर्यदुत्तर १३१
 निर्यकर्मविधि १४४
 निर्यतपसाविधि १३८ १४६
 निर्यथाद्विविधि १५७
 निम्बान्मुक्तिपत्र (हरिदास) ११८
 निम्बार्कपद्धति १३१
 निम्बार्कमयताप्टक १११
 निर्वाणयोगपद महावेदकोको ३२
 निरोधमञ्ज १६
 निरञ्जननिर्वाणयोगमय (वृषी) ४७
 निरञ्जनपुराणप्रव ३१
 निनामो ठाकुरा श्रीगुरुवादाहजीरो १३२
 नातिक तीन लोक ३
 नीतिनवरत्न (वज्रवहाल) ३२ ३७
 नीतिमञ्जरी ३३
 नात्रिविध १७
 नीतिनारण टक (अथ गुणवि) १ ७
 नायकप्रियको ओङ्गी (वरमराज) १६
 नीलाचोनी श्रीरामायणरी ११३
 नीलाचो अरुणध ललाटा ११
 नीलाचो महाराज प्रतापनिहोको (हुकम
 अथ विहाका) ४६ ११२
 न नीचो रायचह अनोट्टरु तीन रायच
 महाराजगुणारको ११२

नृसिंहस्तुतिपत्र-मञ्ज १३३
 नृसिंहप्रतापस्मरण १३३
 नृसिंहमंत्र १३२
 नृसिंहस्तोत्र १२८
 नृसिंहहस्ताकरमंत्र १३५
 नेतको पद ४३
 नेहतरंग (रावराजा युधिष्ठिर) ३६
 नेहाजीको जतावनी ६२
 नेनके कवित्त ४३
 नवपीठपरितम् १४४
 नैननामी (बाजिब) ४४
 नीयेरना बावदाहके वस ठाज ११४
 प
 प्यागप्रपोषरस्वती ओपत्रं (पू नू) ४७
 प्रचाली ८६
 प्रयत्निराम १४
 प्रतापमीतिमञ्जरी (भारती) ११२
 प्रतापवचोली ११
 प्रतापनिपायुद्धारा ३६
 प्रतापवीरगुहारा ३६
 प्रतिकोपज्ञानकोको ओपत्रं (पू नू)
 ४७
 प्रवीणप्रतकथा १४ १५७
 प्रवामपरिषावम् १२८
 प्रवचनप्या १३७
 प्रवद्यामृतप्रवचनमूची १ ७
 प्रवीणवावनी (अनरप) १ २, १५१
 वापगुणाकर १४८
 प्रुदाहपरिच (अनयोपास) ८६ ९२ ७६
 ३१ ३२ ३३
 बालप्रवीण (अयोनिच) १४७
 प्रवावली (वेदमन्त्र) १८७
 प्रवतिप्रकाशिका १८६
 प्रायशानका ८६ ८१
 प्रायशानको नापी ८१
 प्रायगुहनी कापत्र (पुनोपावमृजपार)
 ४७

प्राचपचीसी (पु०पु०) ४६
 प्राचताकसी (नोरक) ५२ ४४ ७४
 प्राचताकसी (नोरक) ४४
 प्रातःस्मरणम् १३२
 प्रातःस्तव्या १३७
 प्रायश्चायक (सुन्दरदास) ४४
 प्रास्ताविक कवित्तुष्टुवि ४३ १ ७
 प्रीतिस्तता (स प्रस्तावित्तुष्टुवि) ३४
 प्रेमप्रकाश (सकमिनि) ३४ १४१
 प्रेमनामजोगण्य (अपजीवक) १३
 प्रमत्तनाकर (भैया रत्नपात्र) ११३
 पचीस नाम (वेदव्यास) ४३
 पञ्चदशमीकथा (नरपति) ३२
 पञ्चवत्सनामजोगण्य (नोरक) २२
 पञ्चपत्नी १६
 पञ्चमुखी हुनुमत्कवच १२३ १३३
 पञ्चरत्न १३२
 पञ्चलपत्नी १६
 पञ्चाक्षरप्रकीर्णक १३६
 पञ्चाध्यायी (नरदास) १११
 पञ्जाकी छन्दक (सुन्दरदास) ३३
 पट्टीपट्टाका ३७ १३३
 पटाक (पटाक ?) का विषयार्थ ४२
 पण्डितसद्व्यवहार (रामचरण) ६९
 पद्यानाथदेवालयप्रतिष्ठितस्तवकम् (नविकथ
 कवि) ११६
 पद्यावलीस्तोत्र १२६
 पद (नोरक) १६
 पद (नरदास) १४
 पद (हरिदास) १४
 पदअष्टादश (नारिक) ३१
 पद राम साहि (मुलसीदास) ८७
 पदमपुटाचयोगण्य (पुवी पु०) ४७
 पदसप्त ६६
 पदसप्त (अवलीकन) १३
 पदमपट्ट (भोडकी) ६

पदसप्त (पुष्ट) १ ११
 पञ्चमुखीविषय (नोरक) २१ ७४
 पञ्चमपत्नी (नारिक) १३३
 परदेसीप्राचको कोडी (परसराम) १६
 परमानन्ददासका पद ४१
 परसको पद ४३
 परसजीकी धाकी १६, ४ ६१
 परसरामका पद ४ ६३
 परसरामजीकी धाकी १५
 परिभाषा (व्याकरण) १६१
 परिभाषामस्कर १४३
 परिभाषामुद्रोक्त १४३
 परिभाषामुद्रोक्तरीका १४३ १४६
 पञ्चीकृतविचार १४
 पञ्चस्वरौष्य (वरदास) २
 पञ्चपत्नी १३३
 पञ्चाक्षरकवच (अमुद्रोक्त) १४६
 पातली (गुहाप्रतापकी) १३४
 पातञ्जलयोगसूत्रावली (राजवास्तव-
 विद्या) १४६ १६१
 पाणिनिविद्यामणि १३४
 पाणिनियुक्तम् १३७
 पाणिनेयवर्णमणिविद्यामणि १३२
 पार्श्वतोकी छप्पी २२ ४३
 पाञ्चमभुवद्विस्मयस्तोत्र १६१
 पारसभाष ७
 पासाकवली १३५
 पावतोमहादेवस्तोत्र (नोरक) २
 पिङ्गल ३६
 पिङ्गलकवच (दाधोवर) १२
 पिङ्गलपत्रो कोडी (परसराम) १६
 विद्यपतिनाम (देवादास) १७
 पोवाकी पद ४३
 पोवाकोक पद ३६
 पोवाकीकी वरचई (अनन्तदास) ७, १५

बारहमासी १२

(पुत्रीमास) ४८

बारहमासीचंद्र ८ ८१ ८३ ८४

८२ ८६

बारहमासी कामजीकी ११

कुम्भकी (पद्मोदरानाम कामहरास)

७३

बाबकरामजीका कवित ६३

बाबकाभिरासमुनाकितछंद १६२

बाबमुसई लक्ष्मणजीकी छंदी १५ २६

बाबनाथकी छंदी २६ ४५

बाबप्रभोविनीवार्ता (राभाभुवरास) १ ३

बाबसोम १६६, १३६

बाबप्रभोवोरामास्य (चिचरदास) १ ६

बाबनजीला (परतरास) १६

बाबनी (कुम्भदास) १ ६

(कवीर) २७ ३३ ३६, १ ३१

(रत्नदास) ४२

(बाबभिमोक) १ ६

(भीमदास) १ ३

बाबनीमोमदास (हरिदास) १ ६

बिहुरवलीकी (बाजीदास) १२१

बिनुसिद्धांतमोमदास (बुनी) ४८

बिहारोसतछंद ३६

बीबलका पद ३६

बीबिकाका पद ४३

बीबलजीके मन्थिरका किलालेख १२१

बीबाका पद ४१

बुबाबकास (मनेधरगुहाईकास) १ ६

बुहोद्याहकी सेहकी १ ६

बुहउजीकी लाकी ६१

बुहउजातक १६६

बुहपाराभरीम नर्मदास १३७

बेनीका पद ३६

बेनी (हृदय कविमणीकी) ३६

बेसावार्ता (बाजीदास) ११५ १२

१२१

बेसरमोतीके कवित ८५

बोहितदासका पद ४

म

भतरपोत १३६

भैरव (म) रभीतमाया (ममभुक्त) ३६

भयविर्भक्तमोपदास्य (पू सु) ४६

भक्तउपदेखनी (परतराम) २

भक्तमास (नाभाभास) १४२

भक्तमासका १४७

भक्तमासटीका (राधादास) ६

भक्तमास छंदी (शिवदास) १४६, १९१

भक्तमास (परतराम) ७३

भक्तविरदावली (हरिदास) ३ ६३

भक्तिवाचनी (मनेधाम) ३६

भक्तिवर्द्धनी १६

भयलचणीको (मोदास) ६२

भयविर्भक्तप्रभ (पू सु) ४७

भयवर्द्धनचपति (मनेध—भयलचपत)

१ ६

भयलपर्वचंद्र १३७ १

भयलसद १२१ १३४

भयलवृत्ती १३६ १३६

(भाषाजीकासहित) १४३

(परमावन्मप्रबोधिनी

टीकासहित) १३६

॥ (भयलपर्वचंद्रभाषासहित) १३६

(सुबोधिनीटीकासहित) १४४

भयलवृत्तिरत्नमाली छंदी १४३

भयलदाराभन १३७

भयलदामकोपुत्री १३७

भयलहरिचरितमाली छंदी (भयलदास

भिरकास) ६४

भयलहरिचरितमाल १४३

भयलचरित (भयलदास) ३१ ४६, ६२

भयलमाला (भयलदास) १२

भयलरीकी छंदी (गोरक) २१ ४५

भरवरीचरित्र (जीवमहाका) १३
 भरवरीजीका इलोक ३३
 भरवरीजीका ग्रन्थ — राजा राणी संवाद
 (गोरख) ४५
 भरवरीजीमद (काम्पु) १७
 भरवरीमहाका की प्रथी ६१
 भरवरीमहिमावद (काम्पु) १३
 भस्मस्तोत्र (सन्तदास) १७
 भरवचिपंचक ग्रन्थ (सुम्बर) ६३
 भवाभीष्टी चारती (प्रियानन्द) ३३
 भाषवतकल्पवत (अपराध) ६५
 भाषवतचतुष्टयकाव्य सटीक १४७
 भाषवतसुतोयाकाव्य सटीक १४७
 भाषवतहाराष्ट्रकम्पभाषा (वज्रहारी) ११८
 ब्रह्म ब्रह्मनुवाद १४२ १४४
 ब्रह्म भाषा (वज्रहारी)
 ११८
 " (मूल) १४७
 " पञ्चम सटीक १४७
 भाषवत वर कनक कवित ४
 भाषवतसारवचोत्ती १३४
 भाषका वद ४
 भारवचरित्र (महान् भट्ट) १२२
 भाषाभाषक्य (उमहराम वाराह) ११३
 भाषाभूषण (महा जनार्दनसिंह) १ ७
 भाषावराहव (गोरख) १ ४
 भीमकी लाली ४
 भीमजननी काव्य ६ ६३ १२१
 भीष्मगीतम् (भाषवत) १ ६
 भीष्मवचरित्र १२६
 भजान्नपातः-रः स्तोत्र (भवाभ्यास) १३३
 भुरजान्नभूषण (बोकोवाल) १२
 भुवनका वद ३६, ४२
 भुवान्नपातः ४१
 भुतमृदुपातः-रः स्तोत्र १३७
 भवप्रति १३७
 भुवका कवित ३

भेटके सर्वदे (जनमोपाल) ४६
 " (रज्जव) ४२
 भैरवाष्टक (विश्वकर्म) स्तोत्र १२५
 भैक कवि धीर उत्तकी कविता
 (सूर्यकरमपारीक) १२२
 भैक सबड़ाका पद ४३
 म
 मच्छीन्द्र-मोरमहोय ७४
 मत्स्यदेवाम्नासपत्र कम्पावतीपुरकथा १५६
 मत्तिमुन्दरका पद १६
 मदनविनोद (कवि जान) ५६
 मदनमन्दकस्तोत्र १३८
 मत्स्याक्षरी कवित (मुन्दरदास) ६५
 मधुमासतीकथा (चतुर्मु जवाह) ८३ ८४
 ८६
 मधुराष्टकस्तोत्र १६
 मन्त्रयोजना ११६
 मन्त्र वृद्धी आदि ३४
 मन्त्रसारके स्फट पत्र १२६
 मन्त्रसार १४१
 मनमन्त्रमन्त्र (रामचरण) ६८
 मनमन्त्र छरोरा सायनजोग (पुनीनाथ) ४७
 मनविनोद १३
 मनसुप्तप्रणव (कर्मदान) ८१
 मनुष्यकाय सवदा (मुन्दरदास) ८८
 मनोहरचरित्र (हनुमानप्रसाद) १२२
 मयाराज वरजोरी बाल (दासिवा बुपा)
 ६३ ११३
 मरतिना कवित (उपहराम वाराह) ११३
 महम्मतीनामदीपन वद
 महम्मद (काजी) की लाया ४३
 महम्मद काजीका पद २३
 महाकल्पनिम्नोत्र १३३
 महामन्द-उत्तमन्त्राव (गोरख) ४४
 मह-देवकी प्रथी २३
 महामन्द-मोरमन्त्राव २१ ४४ ६२

महाभारतमन्त्ररत्नसूचीविन्यासवि १३
 महापुष्पस्तोत्र १३४
 महामृत्युञ्जय (अ०) विन्यास १३
 महामृत्युञ्जयस्तोत्र १२५
 महाराजा मार्गसिद्ध कल्पवृक्षा १२१
 महाराजा मार्गसिद्ध प्रथमका विन्यास १२३
 महाराजा प्रतापसिद्ध १२१
 महामन्त्रीकवच १३७
 महामन्त्रीपूजा १३७
 महामोक्षरत्नम् (मन्त्रकम्) १३२
 महिषीपीठ १३६
 मोक्ष भागिक मुक्ताम् (रत्नराशि) ७२
 माताजीकी विन्यास (ईश्वरवाच) ११४
 माताजीरो जन्म १३२
 मातृकामन्त्रमाला चौपाई १३३
 मातृकसिद्धार्थस्तोत्रम् (मातृकविन्यास)
 (व्यासकृत्) ६७
 मातृकानामकामन्त्रमाला (माला) ७४ ११३
 मातृकेन्द्रसालिग्रह (मातृकस्तुति) १३
 मातृकेन्द्रविग्रह वधान्ति १४२
 मातृको जपपञ्चाशका पद ४१
 मातृकेन्द्र सवाई महाराजा १२४
 मानप्रसङ्ग शंख (हरिवंश) १४
 मानमन्त्ररीताममाला (मन्त्रवाच) १ ६
 मानविजयमन्त्र (हनुमान जप) १२३
 मार्गसिद्धीके राखलोकका कोरा १२१
 मारुत २
 मारवाड़ी समाप्ता १४१
 मातृकविन्यास (कविराजा वांकीवाच)
 ११३, १२
 मीठकीवाचकी छप्पी ४६
 मोराने पद ६६
 मोरानेके पद १६
 मुक्तकमुक्तावली १६२
 मुक्तिलम्ब १४
 मुकुटका पद ४१

मुकुट भारतीके २ वर्षों पर दीक्षा २
 मुकुटमाला (कुलध्वजारमुपति) १ २ १२८
 मुकुटमुक्तावली (मुकुटध्वजारमुपति) १ ६
 मुरलीविहार (सवाई प्रतापसिद्ध) ३४
 मुस्त-पञ्चित्तर्तवाच ६२
 मुहूर्तविन्यासवि १३६
 मुहूर्तविन्यासविनाया १४६
 मुलक महाज्ञानजोषण्य (पुनीनाम) ४७
 मूलरमायण १२५ १३४
 मूलमूत्र (वृद्धनाम्याय) १३१
 मुरमुक्त्यस्तोत्र १२५
 मृतपुताङ्ग जपमन्त्र १२७
 मोहनी चोलावली ३२
 मोहिके जन्म ४
 मोहवाचकीका पद ४५
 मोहवैद्य (जनपोषास) ७४
 मोहवैद्य (कविराजा वांकीवाच) ११३
 मोहवैद्यनवपत्र १२
 मोहवैद्यराजाकीकथा (जनवाच) ११ १६
 ३३ ३३ ७६
 मोहवैद्य (जनपोषास) ३१ ४६
 मोहवैद्यका ६२
 मोहवैद्यकावाच ७६
 य
 यतीन्मन्त्रवीथिका १४६
 यमुनानामकस्तोत्र (कन्नूराचार्य) २३
 यमुनानामस्तोत्र १२७ १३६
 युक्तिरत्नविन्यास (अतर्क) (कुलपतिविन्यास)
 ३३, ३७ ६
 युक्तस्तोत्र १३२
 युवाविपचना ४
 योयविन्यासवि १४५
 योयवातिष्ठहार भावामुवाचमद्वि
 (पञ्चपति) १ ७
 योयस्त १४४
 योयस्तभावा लकी १४५
 योयवरी छप्पी (योरक) ४

र

- रघुनाथचरित जोड़ी (बलतराय) १६
 रघुनाथपञ्चरत्नम् १२६
 रघुराजविनोद (गुरम्वर) ८२
 रघुवरचंदावली छावि १२६
 रघुनाथ विजयार ४२
 रघुवंश १४३ १४२
 रघुवंशोक्त १४२
 रघुराजस्तोत्र १२
 रघुवज्जोका कवित ६ ३३
 रघुवज्जोका कवित-बाणी ६३
 रघुवज्जोकी छंदी लाठी १
 रघुवज्जोकी बाणी लाठी कवित लक्ष्मी
 वर छावि ३
 रघुवज्जोकी छाती २६ ४२
 रघुवज्जोकी लाठी एवं रघु कवित ७
 रघुवज्जोकी कवित ८६
 ॥ पर २७
 रघुनाथोप (कपडास) ८१
 रघुनाथोके छन्दे छोर राजकिशु (मुग्धी
 देवीप्रसाद) १२२
 रत्नकोष १४४
 रत्नावली (कविज्ञान) ३७
 रत्नावलीकी बाणी (कविज्ञान) ८६
 रत्नकमलचन्द्री (सचाई प्रस्तापति) ३४
 रत्नेश्वरी (कबीर) ३ ३८
 रत्नकीर्तु (राजसभापञ्चम सप्तस्यारवली)
 ४२
 रत्नसिद्धि कवित ८३
 रत्नानुतिष्ठिद्विषयकी नामप्रकाश १४८
 रत्नपीपुषाविधि (सोमनाथ) ३२
 रत्नपञ्चमी सखी १४८
 रत्नरहस्य (कुलपति) ६७
 रत्नसमूह (गणेशभट्ट) ६२
 रत्नसिद्धि की हिन्दीपद १४१

- रत्नकिरीट (कपडास) ८७
 रत्नकिरीट रत्नमोमज्ञान (हरिदेवक)
 १९
 रत्नराजपञ्च (गोरख) १२
 रत्नसिद्धिपञ्च १४
 रत्नकोष ३३
 रत्नपञ्चमी (पुण्डरीक बिट्टल) १०६
 रत्नमाला की छंदी ३३
 रत्नवाचकस्तोत्र १३
 राधोकी लाठी ४
 राधोकीकी कवित ३
 राजनीति (अमेरस्य बारहठ) १११
 राजनीतिकवित (देवीदास) ३२
 राजनीतिका कवित ३३
 राजनीतिभाषा (अमेरस्य) ३२
 राजपूतानकी रिवाजकी छाती १२२
 राजपूतानकी कुल वास्तव्य वृत्तान्त १२२
 राजवत्सल (गणेशभट्ट) ११४
 राजसुखी लेख एवं कविताएँ १२२
 राजा कम्बकी वत्स (सत्यम बाटुल) ५६
 राजा-बाह्यज्ञोकी वंशावली १२४
 राधेदेवकी स्तनरी विमल १२१
 राधेदेवचरित (गणेश भट्ट) १२२
 राधाजीके पिछनसचनकी भूमाल (कवि-
 राजा बाँकीदास) ११५
 राधासमुपाधिपिस्तव १३१
 राधासमुपाधिपिस्तोत्र १३६
 राधास्तोत्र १२७ १३४
 राधकवच (देवीदेवकी स्तनरी) १४६
 रामनाथजीपञ्चम्यास १२६
 रामजीतजीविम्वकाव्य १४३
 रामचन्द्रकी छाती १२
 रामचन्द्रजीकी कवली (दोहरमल) १ ६
 रामचन्द्रस्तवराज १२६
 रामचन्द्रिका (कैलाशदास) ५४
 रामचरणजीके पद भजन ६६
 रामचरित (कामूबासकृत) ११

रामचरितमानस ८७, १३७
रामजी मध्यक (सुन्दरदास) ६३
रामनामिमुपनिष्ठा सत्रीक (मालमन्त्रिणि
नाम्नी कोका) १६१

रामनामजी रतगुणी लखवीर १११
रामनदासजी (गुरती) ३३
रामपुत्रा १३४
रामपुत्रापद्धति ११
रामपुत्राविधि १३८
राममहिम्न स्तोत्र १३३ १३६
रामदानसीमुद्राविधि १३२
रामरक्षाकलास्तोत्र १३७
रामरक्षास्तोत्र १२ १२६ १२७
रामरातो १५३
रामस्मन्मन्त्रावलीस्तोत्र ४
रामस्तवरात्र १३३
रामस्तवरात्र सत्रीक १४२
रायस्तोत्र ३, १२८ १३२
रामसिंह प्रथम लखाई १२४
द्वितीय २ १३४
रामसिंहजी द्वितीय म्हााराजा लखाईका
इतिहास १२२

रामसप्तनामस्तोत्र ८४
रामप्रमन्त्रका पत्र ३६
रामापहुडारकस्तोत्र १३४
रामायन (गुल्लरीदास) ८७
रामायनजीर्तन दोहा (रामराज) ३७
रामायनपाठविधि १४४
रामायनमहाप्रमन्त्र १४
रामायन्योत्तरकालम् १६१
रामायक (अन्तुराधाय) ८३
रामायोत्तरसप्तनामस्तोत्र १३३
रामाइनमेव (प्रियराज भूष दायाल) ११४
रामचन्द्र महाराजकुमार मनोहरदासोदारी
नीताजी (भूषराज) ८६
राजपके कवित ३

रामलचरित (मध्यम बहू) ६६
राक्षसप्रवास ३
रातको रेखता (घनाई प्रताप) ३४
राधपञ्चाध्यायी १२
राधपञ्चाध्यायीभाषा सन्ध १३८
रिनीपस द्विती पादगुी इन राजस्थान
ए मोर मीन १ ६

रामजीजीको व्यापको (सहस्रमन) ३६
रामिनीजीरो व्यापुली १४१
रामिनीपङ्कज १६१
रामिनी व्यापको दावि १३३
रामनामस्तोत्र ३२
रामाध्यायी १३८
रामपि ११
रामपिपङ्कज (अपङ्कज) ८७
रामपिपङ्कज १३४ १४८
भाषा १३६
राममन्त्ररी (मन्त्रदास) ६७
रेखता (लैलादास) १४
" (खेमदास) ३४
" (मुलममान कबीरोंके) ३
" (सह) (घ प्रताप) ३४

रैदास-कबीरयोन्नी २७
रैदासजी परबई ७
रैदासके ३ पत्रों पर टीका २
रैदासजीका पत्र १ ३६
रैदासजीकी बाणी १३
रैदासजीके पत्र २१
रोमावलीग्रन्थ (धोरक) २१ ७४

॥

लखपतजससिधु पिङ्गल (कुंवरदास) ३६
लखमन्त्रावली प्रथी २३
लघुनाटक १३६
लघुनाटकसंग्रह १६
लघुनामाभा (वेमदास) १ ४
लखजीकला पत्र ४१

विष्णुस्मरणाची कथा १४
 विष्णुकृत सिध्दमहिम्नास्तोत्र १२६
 विष्णुको चौबीस सिद्धि ७५
 विष्णुचन्द्रस्तोत्र १२६
 विष्णुचन्द्रप्रयोग १ व १३५
 विष्णुसहस्रनामस्तोत्र १२३
 विष्णुसहस्रनाम सटीक १३६
 विष्णु सुखानकर पुष्प कण्ठीयुग्म वृ
 हस्पतीजी १ व
 विष्णुवैद्यदी १३१
 विष्णोर्विष्णुसहस्रनामस्तोत्र १२६
 विष्णोस्त्वात्वाप्योत्तराष्टशनामस्तोत्र १३१
 विहारीसप्तश्लोके स्फुट वचन लयीक १३१
 विद्यामालीका १४६
 वीरनारायण (हरिहरवर्धन) १२३
 वृत्तमुक्तावली (वीरकवच) ११४
 वृत्तरत्नकर १४४
 वृक्षविनोदस्तवया १४६
 वृक्षान्नसप्तक १३
 (विष्णुकवच वा पद्य) ११३
 वेङ्कटनाथार्पणस्तुति १३
 वेङ्कटेश्वरस्तीकवच १२६
 वेङ्कटेश्वरस्तोत्र १२७ १३
 वज्रपीठ १३६
 वेदप्रधानस्वरविन्यासविधिज्ञान १६१
 वेदमहिमा ४
 वेदस्वायम् संक्षेप १३७
 वेदास्तसप्तह १६१
 वेदास्तसन्ता १४६
 वेदास्तार १६
 वेदास्तार्पणकाण्ड १६१
 वेङ्कटवचनका वच ४१
 पञ्चसारासंजीवनचण्ड (गुप्तरविष) ११
 वंशधोरचारमहर्षि (महाराजा नरसिंह)
 १ व
 वसुधोप भाषा १४५
 वंशविनोद भाषा (धनन्तराय) १

वैद्यकमीमा १३
 वैदिक वचनवचनवार (हरेकृष्ण) ६७
 वैद्यकरचमूयचसार १४६
 वराम्यमन्त्ररी (स प्रतापसिंह) ३३
 वैष्णवमहिमा वाणी (चतुर्भुज) ७२
 वचनवचनदोह (महामोषीधनमहात्म्य) १५५
 वसुधवारता (कविराजा वंशीदास) ११३
 व
 व्यामचरित (लघाध्यायी) १४३
 व्यामचरीश्री (व्याम) ५४
 " (सरणी कवि) ६२
 व्यासपुत्राणि १३५
 श्रीकृष्णविकास (योगाचरित) ६
 श्रीकृष्णव्यासस्तोत्र १३६
 श्रीकृष्णव्यास १३७
 श्रीगणेश्वरमाहत्म्य (वाल्मीकिधनमहात्म्य)
 १५
 श्रीगुप्तरस्तोत्र १४५
 श्रीगणपार्थसह पुष्पवचनका व १४
 श्रीरत्न-श्रीरत्नस्तोत्र १
 श्रीरत्न वा गुप्तरस्तोत्राची कथा १
 श्रीनारायणी (परमेश्वर) १५
 श्रीनारायणचमनसारसप्तह १४४
 १ निवासकवच १३
 श्रीबालमुकुटवचन १४६
 श्रीभुवनामा (वाग्मि) ३
 श्रीरत्नका पद्य ४
 श्रीरत्नप्रपत्ति १३
 श्रीरत्नमन्त्रम १३
 श्रीरामश्रावणनामस्तोत्र १२७
 श्रीरामश्रावणनामानि १२४
 श्रीराममहिम्नास्तोत्र १३३ १३६
 श्रीरामभुजाध्यायचरितोपदेश १६१
 श्रीवाणीजी (वसुधवारतिका) ३५
 श्रीवामनाश्रितवचन १३
 श्रीविष्णुविष १४६
 श्रीसहजार (गुप्तरवचन) पद्य १४६

भोहरिमोला (बरलराज) १८
 भृङ्गारमञ्जरी (म प्रतापसिंह) ३५
 भेनपदाङ्गुरविधि: १३८
 भक्तिवाद १४३ १४६
 भक्तिवाद (व्याप्यवादा) १६१
 भक्तिकारविवरण १६१
 भक्तिवादापरीक्षा १६
 भक्तिवादी आदि नायिकायुक्ति मूलक तथा
 स्पष्ट कवितादि १३२

भक्तप्रभाव ६
 भोचरमोको कथा ५६
 भनारचरमोको कथा (रामानन्द) ६२
 " (जैतसिंह) ६२
 भवप्रकाशवाच (रावचरण) ६८
 भवरेवता (सप्तदास) १७
 भवेन्मुद्रारतिका १४३
 भवेन्मुद्रारतिका १४३
 भरीकट २
 भृङ्गमञ्जरीमुद्रस्तोत्र १३३
 भृङ्गविष्वसिनीस्तोत्र १३६ १४
 भाषीन्धार ८७ १४२
 भास्वरतकविल ६४
 भासिक छन्द ४ ४
 भासपामस्तोत्र १३६
 भासिहोत्र १३१
 भासिहोत्रभाषा १४७
 भिन्न बंधोत्पत्तिपीठो कालिक (मोपाल-
 दान) ३३
 भिलालेप्रप्रतिनिधितकप्रह ११६, ११७
 ११८

भिलपीरीमञ्जलाचार ३३
 भिलमोकोप्रभो ४५
 भिलनारायणका कविल (गुलपीदास) ८७
 भिलनारायणका कविल ११४
 भिलपदाप्रदान (हरकदास) ११४
 भिलपञ्चरात्र १४१

भिलमहिम्नस्तोत्र १३५
 भिलमानतपूजा १३८
 भिलमानमोपूजा १३५
 भिलपद्योदासकाव ७६
 भिलरामस्तोत्रम् १२८
 भिलभयका पद ३६
 भिलप्रत्यक ११६
 भिलवरोदय १६
 भिजनिहोत्रो रमोदका कविल (सहितवाच)
 ११४

भिलविरतोत्र (स्पष्ट पत्र) ११६
 भिलभक्तस्तोत्र १४२
 भिललोचनकाकरण (काशीनाथ) १०८
 भिलपुराण (गोरख) १४
 भिलप्रादयन (देवम ?) छन्द (गोरख) ४४
 भिलप्रादयनयोगवचनिका (गोरख) ७४
 भीममोच १३६
 भीमलास्तोत्र १३६
 भुक्तदेवता स्तुति १२८
 भुक्तदेवतीको सीता (मोहनदास) ५२
 भुक्तोत्तस्तोत्र (भाषस्त) १ ६
 भर मुक्तिपेठ ३

प

पदचक्रकोच २
 पदप्रस्तावार्थनाम ६१
 पदमुद्राचन (पदाकर) ३६
 पदवीस्तोत्र १३६

स

सुत्पद्यक (गुम्बरदास) ८८
 स्तुति स्तोत्रहाराकी (हरिप्रसाद) ३४
 स्तोत्रादिपुस्तिका (सलोकार्थतद्वह) १३४
 स्मृतपाम १४१
 स्फुट कविल (भूपर) ८७
 " " ३३ ३४ ३५, ३६ १५४
 स्फुट कविल-मुद्रा १११

सुवर्धनसूतकस्तोत्र १४४

सुवर्धनाष्टकस्तोत्र १४४ १४५

सुवर्धनाष्टक (मन्त्रवाच) १४५

सुवर्धनाष्टकको ओङ्कार (परस्पर) १४५

सुवर्धनाष्टकेकविल्लादि ५३

सुवर्धनाष्टकीको ओङ्कारो १ ५

सुवर्धनाष्टकीको साक्षी ६३

सुवर्धनाष्टकीके ध्यान ५३

सुवर्धनाष्टकीके पद ३२

सर्वेया ११

सुवर्धनाष्टकीकोपान्न (आनसमुद्र) ५३

सुवर्धनाष्ट-मोक्षनाष्टका पञ्चमय वाच-व्याख्या ५३

सुवर्धनाष्टकी १३१

सुवर्धनाष्टस्तोत्र १३

सुवर्धनाष्टक (सुवर्धनाष्ट) १३

सुवर्धनाष्टमार (सुवर्धनाष्टमारामिकासी) १३

सुवर्धनाष्टसंस्कृत १३३

सुवर्धनाष्टसंस्कृत १४३

सुवर्धनाष्ट (संस्कृत) १४

सुवर्धनाष्ट १५

मोक्षिसेवका १३३

सुवर्धनाष्ट १३३

सुवर्धनाष्ट १३३

सुवर्धनाष्ट १३३

सुवर्धनाष्ट १३३

सुवर्धनाष्टकीके पद ६३

सुवर्धनाष्टकीके पद ६३

सुवर्धनाष्टकीके पद ६३

सुवर्धनाष्ट १३

सुवर्धनाष्टकी ४१

सुवर्धनाष्टकी-कवित्तोपपन्न (पुत्रीनाथ)

४५

सेवकावली परकी (मङ्गल वा रघुनाथ)

१५

सेवकावली वारि (कुलवति विद्य)

१५

सेवकावलीकी वाचो १३

सेवकावली १५

सेवकावली ४

सेवकावली ४५

सेवकावली ४

सेवकावली ओपपन्न (पुत्रीनाथ) ४५

सेवकावलीविद्योपपन्न ४५

सेवकावलीहारा (अङ्कुरावली) १२५

सेवकावली १४१

सेवकावली १५५

सेवकावलीमाता १५५

हु

हकीकत १

हकीकतपरीक्षा १४५

हकीकतकी धारणी ४३

हकीकतकी पद ४ ५ ५ ५

हकीकतकी रायका कल्प ११२

हकीकतकी १३३, १३४

हकीकतकीमातामाता १३३

हकीकतकीपरस्परस्तोत्र १२५

हकीकतकीपरस्पर १३३

हकीकतकी १२५

हकीकतकीमातामाता १२५

हकीकतकीमातामाता १३४

हकीकतकीमातामाता १३

हकीकतकीमातामाता १३३

हकीकतकीपरस्पर १२ १३३

हकीकतकी (धारणी) १३३

हकीकतकीमातामाता १२

.. मातामाता १२

हकीकतकी ५३, १४१ १३४

.. (महेश कवि) ५२ ६५

हकीकतकी ६५

.. (सेव ?) ६७

हकीकतकीपरस्परमातामाता १२५

हकीकतकी सिद्धकी धारणी २३ ४५

हकीकत ११ १३१

हरिमुदम्बरच (पोषि-नरेवन्मायी) १८

हरिचरनत (ध्यानदास) १७ ३३

" चोपई ११

हरिजननामा (बाजिब) ३

हरिदासजीका पद १ ३६

हरिदासजीकी भाषी १४

" भाषी ३६, ६

हरिदासजीक १६८ पदों पर होका २

हरिध्यानम् (कुसुपविधि) ६२ ६७

हरिनाममाला (छात्रराधार्य) ४४ १५७

हरिनामचोदनी १७६

हरिपञ्चविंशतिनामानि १३२

हरिकोमलदासकी ६

हरिकोमलदासजी (गुम्बरदास) ५१

हरिरस (ईशरदास) ११ १३१

हरिरामदासजीकी भाषी ३७

हरिरत्नकी ओड़ी (परसराम) १६

हरिरत्नकी चेतावनी २२

हरितारिणी १ ८

हरिहरात्मस्तोत्र १३१

हस्तात्मनक १४६

हस्ता भ्रमलीकी कुसुमलया (ईशरदास) ११४

हाथीपावक पद ४३

हाथीपावकी दायी २२ ४३

हासिच मार ई बायलदासकी स्वीक

१४२

द्विज्ञानात्मस्तोत्र १६५

द्वितीयद्वैपञ्चकाकाल भाषा १५३

द्वितीयद्वैच भाषा ४६

द्विन्नीके दोहे १५६

द्विन्नीके प्राचीन महाकवियोंके चर्चोंका संग्रह

१५१

हीमालीकविता ८६

हीराबाबजी १ ३

होरावधी कवित ८३

हुदयप्रकाशकी ओड़ी (परसराम) १६

हुचोदयका पद ४१

हीनहारक कविता (मानसजी) ३४

होमोह्वारा (पु हरिमारापञ्चमी) ४३

हुलसति-अकमतिओवद्वय (पुचीमास) ४४

हुनायकम् १४६

६

धयाचोदनी १२६

धमकुनुदस (महामसविधि) १४६

७

जिमोचमका पद ३६

जिमोचमकी परचई (मनन्तदास) ६ १४

५३

जिमोचमोहुन नाम विष्णुकवचम् १५७

जिमोचमोहुन रामकवच १२६

८

ज्ञानचोरीता (शोरच) २२ ४४ ७४

ज्ञानभूलना अष्टक (गुम्बरदास) ६४

ज्ञानमिलक (संस्कृत) १५२

ज्ञानपचीली (पुचीमान सुख) ४६

ज्ञानबाबजी १ ३

ज्ञानमाला ३८

ज्ञानसीमा १२

ज्ञानसीमाबलीली (परसराम) २

ज्ञानलोचनस्तोत्र १४६

ज्ञानलज्ज (गुम्बरदास) ६ ५१ ६३ ४६

८७ ४६

ज्ञानलज्जका संघ २६

ज्ञानलज्जर ५७

ज्ञानमिलोका पद ४२

ज्ञानी-अज्ञानीओवद्वय (हरिदास) १४

परिशिष्ट २

कतु नामानुक्रमणिका

अ

अकबर १४
अक्षराम १४८
अप्रकवि ६३
अप्रदास ११ २१ ६८ १ ३
अप्रदास (नाभादास) ८३
अवर १
अङ्ग १६
अङ्गराजी ७३
अङ्गवज्री मक २५
अजयपाल ४६
अजित १ ३
अजयपाल ७५
अजय सेनापती ७
अम्बार ४ ४३
अम्बर १४६
अनन्त ६४
अनन्तदास १ ९ ७ १७ १८ १९ २० २१
अनन्तराम ६
अनन्तानन्द कवि ६७
अनाददास ३ १६ ६९
अनुभूतिस्वरूपाम्ने १४३
अनेककवि १६ १७ १८ ७७ ८३, ८६
म ११३ ११४
अ १ ४
अमरसिंह १४४ १५७
अमरिया १ ९
अमृत ६४
अमृतारामजी राय ६२
अमृतदास ६३

अलमवल् ६३
अलूची ५२
अल्ल १ १
अल्ल ४ ६३
अल्ल ८१ ६३ ६४ ६५, ६६ ११५

आ

आमिया कवि पुरा ११
आदा पहाड़दास ११६
आकबरदास २६
आकबरदास (आकबर) १२३
आनन्दवन १६१
आनन्द ८४ १११
आनन्दकवि ११५
आनन्दसेन ११९
आद्यानन्द ४६
आनन्ददास २१
आताकन्द ७१
आतानन्दजी २३
आसिया मुका ६२ ११३ १२
आसिया मोहन १२२
आसीया आदि अनेक ११३
आसीया कोषा ११६
आसीया बला ११६
आसीया बीरजी ११६
आसीया भाला ११६

ई

ईश्वरदास १४८

ईश्वरदास बारहूट ११
 ईश्वरदास बारहूट ४२
 ईश्वरदासजी बारहूट ११४
 ईसर १३३
 ईसरदास १२, १२१
 ईश्वरदास बारहूट ११६
 ईसरा ६८

उ

उदल १ २
 उदयराज ११८
 उदराज १ २
 उदराज कवि बापूट ६१
 उदराज कविवर ६१
 उध १ १
 उम्मेदराज ३५
 उमेदजी तापू ११६
 उमेदराज बारहूट ११३

ऊ

ऊतिपा १ ३

ए

एचिकेसजी भल्ल ३५

ए

एच एम कलरे एच. ए. पी एच जी

क

कभेरी ४५
 कभेरी बाब ७५
 कपिलमुनि १५५
 कस्तुरदास १
 कबीर १ ३ १ १५ २ २६ २७
 ३ ३६ ३८ ४ ६ ६४ ६६
 कब ७६, कब ६७ १ ३, १४१
 १५

कमल १ १

कमाल ३६, ७१ १ ३

कमागजी २४
 करनोदान कविता ११६
 करमागम्ब १
 कस्यामि १ ३
 कस्यामि ११५
 कादन २३ ४३ ७१
 कालु ३२ १ ४
 कागहा ४३ ७
 कानकदास ७६
 कानदास ४
 कानिदास ३६, १४४ १४५ १५७
 कर्णदास कवि १३६
 कानू ८ १७ १
 कानूराम धाधाव ६४
 कानू का मोरल (१) १५
 काम जे लो लक १२४
 काशीनाथ १ ८ १४७
 काशीराम ७१
 काशीराम कवि ६६
 कासिम १
 कासी १ ४
 काशीराम ११२
 कामा १ ७
 किशोरदास १ ९
 किशोरमधु ६४
 किशोर ६६
 किशोर दासी ३४
 कीताजी २४
 कोल्हवाड ४३
 कीरहा १ ३
 कीलजी ७३
 कुलज ६६
 कुलजसिन्धु कवि ३३, ६ ६२ ६७
 १११
 कुलदेवर गुपति १ ६
 कुलदेवराचार्य १२८

जनमोहन १२
 जमना १ ४
 जमाल ६६
 जयकुण्डल कवि ८७
 जयकुण्डल (कवि) कुपाराम ११४
 जयदेव कवि ४१ १४३
 जयदेवजी २४
 जयशङ्कर (विद्याधर शास्त्री ?) १२२
 जयानन्दपुरि १४३
 जलन्धरी पाव ४३ ७३
 जलकलतिह मन्थाराका (जोषपुरीय) १ ७
 जलवन्त ६६
 जहलझाड़ ६४
 ज्ञान कवि ३६ ३७ ८६
 ज्ञानराइ ६६
 ज्ञानराय ४
 ज्ञापनी मलिक महुम्मद १ ६
 ज्ञानमी ११६
 जहूरमल बुन्दावनमिवासी ६३
 जिनरङ्गपुरि १ ३ १३१
 जीवदजी भक्त २४ ४
 जीवन्वात १३
 जीवकन (मिस्टर) वार एड-का १२३
 ज्योतिषि कवि ६२
 ज्योतिराम ३
 ज्योत ४ ८ २७ ४६ ७७ ६८
 ज्योत आदि १४
 ज्योत बाबुछिष्य ४२
 जोहराव बारहू ११६
 जोषा १

ट

टीला ४२
 टीलाजी ७७
 ठुडर ११२
 ठोडर ६६
 ठोडरमल १ ६

ठ

ठाकुर ३३

ड

डूबर १ २
 डूबरवास ४१
 डूबरमल २३

ड

दलबहेला ४
 दरङ्ग १ १
 दुङ्गली १ २
 दुराही ६ ३३ ६८
 दुलसीदास २ ६ ६७, ८७ ६३
 ६७ ६८
 दुलसीदास बोस्वामी १ ३ १३७
 दुलसीदास आदि ११४
 दुलसीराम १ १
 दुलाराम ६४

ड

डारकानाबजहू दिवसि (बाजी कवि) ८२
 दल ४३ ७३
 दमनदास ११ १६
 दामोदर १२
 दास ६७ १ १ १ ४
 दासजी ८६
 दासु १ ३ ६ ७ १ २ ३ ३१
 ३६, ३८ ३७ ३९ ४४ ४६, ४७
 ४८, ७६, ८ ६७

दीपजी ७३
 दीपजी भक्त २३
 दीपा ४६
 दुरता चारन ३२
 दुमल ७७ ६८
 दुलधजी ७७
 दुलाराइ १११
 देईदास चारन ४२

देव ३५

देव कवि ३५

देवति १ १

देवनाथ ३५

देवनाथी २४

देवलनाथ ७६

देवादास ४

देवीदास ३२

देवीप्रतापजी मुंजी मुलिक १२२

देवीप्रसाद १२१

देवीविह ३३

घ

घमानदास ११ १७ ५३

घुसवान १२ १३

घमा ७१

घमा भक्त ३१

घनदेव १४६

घना भक्त ४१

घनाजी भक्त २४

घनी १ ३

घारीवर (भोजनगुणि) १६१

" १४६

घग्गलीमल ४६ ७६

न

नकुल १७७

नन्द १ १

नन्ददास १ १२ ३३, ५३, ५६ ६७,

१ ६ १११ १३४

नरपति कवि ३२ १ ७

नरपति नाथ ६६

नरवर ७७

नरसा जोषी १ २

नरसिंहजी २५, ४

नरसिंहदास ७२

नरसीजी २४ २७ २८ ४ ६७ ६८,

७२

नरहरि १०३

नयस १

नायर ६८

नायरा १

नामरीदास ६७

नाया घग्गन ४५

नायामुंन ७५

नामस १४६

नाथ १ ३

नाथकजी ६ २६ ३६, ६१ ६५, ७

७८ ६८

नाथ कवि ६३

नाथ नापाजी नापादाम नापामक्ष २

२५ ४२ ७३

नाजादास १४२ १४८

नामदेव नाथदेवजी नामदेव भक्त १

११ १५ २६ ३६, ३८, ७ ८

नाथकजी ४१ ७३

नाथिक ४१

नारायण १ ३

नारायण ७ १६६

निरवनाथ १४१

निम्बार्कताम्रदायिक काव्य १६४

निहाम १ २

नितजी ७३

नितदास ४६

नहा ६२

प

प्रतापतिह सवाई १३ ३३ १४ ३५

प्रतिह ११२

प्रायदास (सीतबाबा) ४१

प्रायमुखाय कानूनगो १ ६

प्रियादास १४८

पटाण ४२

पयदेव १४६

पयाकर ३३ ३६ १५४

परमसुख १ ३
 परमानन्द ११ २ २३, ३ २४ ३५
 ७३ ८४
 परमानन्ददास ४१ ३६
 परमानन्ददेव १९९
 परशुराम ४ ३२
 परस ४३
 प तजो २४ ७१
 परसराम ५ १८, १९ २ ३१ ३३
 ७४ ८४
 परसराम (निम्बादित्यसम्प्रदायी) १५
 बहुकर १
 पासा ६८
 पिराम १
 पिरोड १ २
 पीपल कवि ५६
 पीपा ४३
 पीपा पीपाजी पीपाजी भक्त ६, १३
 २१ २३ २४ २५ ३६ ३१ ७१
 १
 पीक ४
 पुष्परीक विठ्ठल १ ६
 पुरन्दर ३२
 पुष्पलताधर्म १२३
 पुरव ४३
 पुरव कवि ६९
 पुरवजी ७७
 पुष्पीनाथजी ६६
 पुष्पीनाथ घोषो २३
 पुष्पीराज महाराज २३
 राठोड (कल्याणमल्लोड) ३३ ६०
 पुषोदास १
 पुषीनाथ ४६ ६२ ७४ १ ३
 मुनघार ४६ ४७ ४८
 पुषीराज (राजा जोधपुरके) ४३
 पुषु ६६

फ

फणु ६६
 फतेखंय राठोड म्हेसदासोड ११४
 फरीद १ १
 फरीद घोष ७२
 फरीदा ५
 फरीदुद्दीन घोष ४४
 ५
 फहा कवि (बीरबल) ११२
 फहा १ १
 फहमा फहमाजी ६ २१ २३ २८ ३६
 ४२ ६१ ६७ ७ ७७ ७८, ७९,
 ८५ १ ४
 फहीदास ११६
 फहरीमसाद आचार्य १२२
 फनारसी आदि कवि १११
 फनारसीदास २७
 फणु १
 फहम्बल ७१
 फहावरी घोष फहापुद्दीन घोष २३ ४४
 फाकीदास फाकीदास कविराजा ११३,
 ११६, १२ १२१
 फाकीदासजी आदि प्रमेक ११३
 फालकराम ६३ ६४
 फाल्गनाथ ४३ ७३
 फाल्गुण ६४
 फाल्गुणी ६७
 फाल्गुणकजी हर्षुत्पा १२१
 फिसम ६६
 फिसलर १ २
 फिहारीदास ६
 फोजल ३६
 फीला १ ३
 फीजियोदास ४३
 फोभरा १ १
 फोभल २३ ७३

बीडला ६६
 बीमा ४१
 बपप्रकाश १६
 बुधसिंह रायराऊ भुंको ५६
 बुधदास ६६
 बरहृदास १ ६, १४०
 बूढन ६१
 बबो ६६
 बबन्नी २३
 बेनामीनाहुय बाबा ८३
 बैन १ ४
 बीजी ६५
 बीहितदास ४

भ

भववर्त्तिप्रसाद बाबका बापु ६३
 भगवानबाता निरञ्जनो ३ २४ ६८
 १६८
 भट्टारक स्वामी १४०
 भमा रतनपालजू ११३
 भलु हरि ६
 भरपरी ७८ ७९ १ ३
 भरमो कवि ८४
 भरमो कवि घाबि ६२
 भबभूति महाकवि १६२
 भबामी ६३
 भबानीदास ८१
 भबानीराम ३३
 भामोरप ६०
 भानजी २४ ४
 भानु^१ (बासाक्षिप) १ ६
 भानुवत्स १४८
 भारती ११२
 भारती मङ्ग ६७
 भारती मति (बीबोकर्मतिप्रिय) १६
 भारवि भोजाबी १ २
 भावनाबाब १२३

भाकर १४४

भानिहोत्री १८३

भापजन ६ ३६ ६१ ८६, १ ५ १५१

भीष १ २

भीम भीमजी ४ ७२

भुरबागूर (भी लप्रहाबामपुरतमोपाय

वृषपट्टिकाप्रापय कसिष्ठमोत्र सना
 सनामन्त्र) १४३

भुवन भजनजी भुवनजी भक्त २५, ३६

४२ ७३

भूपर भूपरदास भूपरदास बाबहू ८६

८७ ११२

भडा १ १

भट्ट तावडा ४३

भ

भवन्नी ८१

भगमजी ६६

भगवतीराम विद्यावादिवासी ६८

भग्नस १८

भग्नम्बर २०

भद्रीश ७२

भग्नस कवि बैबलि भट्ट ६ ६६ १२२

भग्नस लूणपार ११८

भविकृष्णकवि (मोदिम्वकविसुनु कपोल
 रामपोल) ११६

भट्टिमुम्बर ३६

भवत २२

भचुरा १

भदसुवन ६६

भनभावनजी घाबि १२५

भनगुवा १ २

भनोहरदास २७

भनोहर घर्मा १२२

भक्त ६५

भक्त १ ३

महम्मदकाशी, महम्मद महुमूदजी २३

४३ ६८ ७२ १

महादेव बम्प २३

महामन्द ६३

महामुवपन महु १६१

महेन्द्र कवि ८२ २६ ११४

मावीमाल (कवसरस १) १ ३

मावयो १ ४

मावक १४८

मावकवास २८

मावकमहु १४६

मावो ३२

मावो कपसाव २३ ४१

मावोवास मावोवासजी १ २८ ३३

७८ १११

मावोवास ३३

मावोवासि ३२

मावतजी ३४

मावत १ ४

मावतजी २४

मावदीजी ७२

मिया १ ४

मीरजी ६८

मीरजीवास मीरजीवास माव ४६ ७३

मीर ६७

मीरा मीराबाई १६, ३६ ३६ ६६, ६६

मुस्तान्म ६६

मुकन्द मुकन्द मुकन्द भारती मुकन्द

भारतीजी ११ २३, ४१ ७२, १

मुन्नाविषय १३६

मुनिन्द्र १ १ २

मरमोवास ४१ २६

मुरलीधर व्यास (जाताजी) १२२

मुरारीदास कविया १२

मुरारीदास कविराजा (मिथान लुबेयसला

त्यस मुंशीमिवाली) ६१

मुरारीदास बारहूठ २३

मुरारीदास बारहूठ ११३

मुसल २६

मोहाबास माहोरी २२

मोतीराम २३

मोतीराम पिरमूदास ११२

मोहम २७ २८ ११६

मोहमदास ३२ ३३, ७८ ८६

य

यकोवालास यकोवालास ७६, ६३

यमुनाचार्य १२४

युपमकिशोर ६३

र

रङ्गाजी २४

रङ्गाजी ७३

रघु २६

रघु कवि ८१

रघुदेव १६

रघुनाथ १८ १३६

रघुराम ३७

रघुरामसिन्धुदेव म्हााराजा (रीवानदेव) १६२

रघुरामकवि नागरा महु २ १ ७, १११

रघुबा ४२

रावि ६४

रघु १ २

रत्नव रत्नवकी, रत्नव (दाशुमिन्ध)

६, ७, १ ११ २१ २६ २७

२८, ३ ३१ ३६ ३८ ४१ ४२,

३३ ३४ ७७ ७८ ८६ ८७

रविदा १ २

रत्नकोट ६७

रत्नसार (बी रायरत्न) १ ६

रत्नवास १६

रतमू बीरभाष (यावो यावारव) ६१

रतमू हूपीर ३६

रम्भ ११६
 रमातया १ १
 रमिता १ १
 रस १ ४
 रसराशि ३६ ८२
 रसवान ८५ ११२
 रसिक सन्तो ६७
 रसोमीमान योवान ८७
 रसोवाजी ७१
 राहुमान ६८
 राका ६८
 राय १ १
 रायबहाल रायबहालजी ६ १६१
 रायो रायोजी रायोबहाल ३ ४ ६ ६६
 ६३
 रामकण्ठ १४४
 रामचरण रामचरणजी रामचरणबहाल
 १७ ३३ ६ ६६ ६८
 रामजीबहाल १४८
 रामबास ३७ ३७ ६८
 रामबीन डकतानी १३३
 रामनिरास हारीत भावि १२२
 रामबकल ६३
 रामसाल (रामलक्ष्मी) ६३
 रामदन्त ६७
 रामलक्ष्मी ३७
 रमातिह रमा रमा १२२
 रामलक्ष्मी १२ ३६ ७१ ६३ १२६
 १२७
 रामानन्दजी ३३
 रामानन्द सरस्वती १२८
 रामानुज १३३
 रामानुजबहाल १ ३
 रामानुजयामुनाचार्य १३
 रामानुजप्रियम् कश्चित् १४
 रामानुजाचार्य १३८ १६

रामानुजाचार्य १६२ १४१
 रमण १३४
 रमण (चरणबहालप्रिय) ६७ ८१
 रमणारायण पाण्डव १६२
 रमणसिंह मनभावन १३६
 रमण १ ४
 रवान १ ११ १३, २८ ३६, ७ ८
 ६८
 रोक विग्रह ६४
 ८
 लघुविदुष भक्त लघुविदुष २४ ४१
 लघुमन बालक ३६
 ललितप्रियोरी ६३ १ ६
 ललित सखी ६४
 लक्ष्मीधर लक्ष्मीधरपुत्राचार्यपुत्र
 जीवी १३७
 लाल ४३
 लाल ३३ १ ३
 लालपत्रमलिक ३२
 लाल ६३
 लालबास १६ ३२ ८१ ६३ ६६ १ ६
 १३६ १३३
 लाल १
 लाया १ १
 लिलीन लिलीनराय ३६ ६८
 लोकाचार्य १३८

९

व्यास ४१ ७३ १ १२३
 व्यास ६८
 व्यासजी ११८
 व्यासिधि १४१
 व्यासबाह ७७ ६६
 व्यासबाह ७७
 व्यासबाह बाबा ७
 व्यासकुण्डजी २४

बरहराज १३१
 बरहनि ११५
 बल्लभाचार्य १२७ १२८ १३६, १६
 बल्लभ ६७
 बाहिर बाहिरको भिमी बाहिर बाजिवा
 बाबोव ६ १६ २७ ३ ४
 ३१ ३२ ६८ ८४ ८८
 बास्नीक बास्नीकि बास्नीकिको
 बास्नीकि मुनि ४३ ७३ १२८,
 १३१ १३३ १३४ १३५
 बिजयमरामाचार्य (बभ्रुमु आचार्यशिष्य) १३७
 १५६
 बिभुसेनवर १३६
 बिज्जाबास २८ ३६ ७२
 बिज्जापति २८
 बिज्जनावसिष्ठ ३६ १४३
 बिम्बेश्वर १४३
 बिज्जलबास ६८
 बिज्जुबास ३३ ३६
 बिज्जुपुरी १४३
 बिज्जु शर्मा ८९, १३२
 बिज्जालीषी २४
 बिहारी ३६
 बिहारीबास महुड ६२
 बीडू ११६
 बीडू मेहताजी ११६
 बीरसिद्ध तवर (हाकिम इतिहास विभाग
 राज्य शासक) १४६
 बीसाजी ७२
 बुध बुध कवि ३३ १४६
 बुद्धबाध वैद्यभाचार्य १३४
 बेभोबास ७२
 बेभीमाधक १
 बेध्यास ४, १३६ १४७ १४८ १४९
 १५६
 बेराचार्य (भुतप्रकाशिकाध्यातुल) १२६

वैद्यभाचार्य (कविताधिक) १२८
 (बरवनाभापरनाम) १४६

बेम ६
 बेभुष्ट ४१
 बैकल १
 बैकादित्य ११८
 बैन २१
 बैधमबास १२६
 बैधी छापी ७४

छ

छयाम ८४
 छयाम कहु ६७
 छयामसुम्बरबास बी ए १३३
 छयोधमबास २३
 छोड्गम्बरबास १६
 छोड्गम्बर कविकानानिधि १ ६ ११४
 छोड्गम्बर कवि बैस १६२
 छोड्गम्बर १४३
 छीवरस्वामी १४७ १५४
 छीनिबास ३३ १ ६
 छीनिबालबास (योनिबाधार्थद्विप्य बाबुल
 कुमोदुमय) १४६
 छीनिबास वेद्यभाचार्य १३
 छीबालगुदाई १ ३
 छीरङ्ग छीरङ्गजी ४ ७३
 छीरस्तान् १२६
 छीरस्तभरति ५८
 छीहर्ष १४४
 छीहुरिछास्त्री प्राधुक्वि १२३
 छम्बुराचार्य ३२ ३३, ७४ ८४ ८५
 १२६ १२६ १३१ १३२ १३३
 १३३ १४४ १४३ १४६, १४८
 १४६ १६
 छडकोपबास १४३
 छम्बुनाथ लुक्वि १४६
 छम्बी १

सिद्धराम बर्मा चौधरी ६५
 सिद्धबस (बस) बारहद १३३
 सिद्धराजभुव दीपावत ११४
 सिद्धराम घादि ८७
 सिद्धम ३६, ७२
 सिद्धसिंह (राज) दीपावत १११
 सिद्धात्मन् ३३
 सिद्धात्मन्भट्ट १६१
 सिद्धात्मन् घनि (धीरामचन्द्रप्रिय) १६०
 सिद्धाचार्य १५२

प

पम ६७
 पमदान १ ४
 पोत्री १ ३

म

म्याम म्याम म्यामदान १ १ २ १ ३
 म्योजी ३६
 म्वकपदास निरञ्जनी ५४
 म्वाम्भाराम पोवीण्ड १६६
 म्जूर ६८
 म्जन्ता १
 म्जो कवरी ७५
 म्जना २३ ४ ७१
 म्जदास मलताजी १७ ३३ ४ ६५,
 ७२ १ ६

म्जदास घादि १४४
 म्जना १ ४
 म्जनाप ६८
 म्जन्तुमार मारव म्जना १३१
 म्जम्भ ६६
 म्जम्भ ॥
 म्जरदार ६३
 म्जर ६६
 म्जरम १ ४
 म्जरत ४३

म्जतर ६५
 म्जुज्जान ६८
 म्जुमभस (कोटपुतमानिजातो) ५६
 म्जुईबि ८५
 म्जु म्जुमसिह ८७ ११३
 म्जुमो ७७
 म्जु म्जुमतरामजी ११६
 म्जुमलिपाजी ६
 म्जुमरी २४ ४१ ७३
 म्जुम ६६
 म्जुम्या भ्याना १५३
 म्जुम ६६
 म्जुमनिपा म्जुमनिपो ४ १ ६
 म्जुमहुरतानी ४६
 म्जुम म्जुमजी २४ ४२ ७३
 म्जुमराम ६६
 म्जुमान्म २४ ३६ ७१
 म्जुमममदासजी (म्यामममदी) ६६
 म्जुमामा म्जुमामास १ ५ १ ६
 म्जुमर ८, १ ३६ १ २
 .. कवि म्जुमरे ३५
 म्जुमरदास ५, ६ ११ १७, १८ २१
 २६, ३५ ५१ ३२ ५७ ६३ ६४
 ६५ ७८ ७९ ८३ ८७ ८८ ८९,
 १५१
 म्जुमरदास (कम्पुदास प्रिय) ११
 .. घादि ८६
 म्जुमरदास म्जुमर २६
 म्जुमरमि ११
 म्जुमरदासमामो १ ५
 म्जुमममदी (कम्पुममरीप्रिय) १८
 म्जुमममिपा म्जुमममम ११४
 म्जुममम कवि १
 म्जुममिराज म्जुममममम १४६
 म्जुमममम म्जुममम १२२
 म्जुम २७ ११६

सुरजमुनि ६३
 सुरतकवि ६
 सुरतमित्र ११२
 सुरतराम ६६ ६७ ६८
 सुरततिह १ ६
 सुरदास सुरदास महाकवि सुरस्याम ११
 १६, १७ २ २१ २४ २६, २७
 ४१ ६८, ६९ ७३ ७४ ८४

सुरिया १ १
 सुबा १ ३
 सैरु १
 सेककरीव ११६
 सेन २७
 सेनजी ७१
 सेवामति ११२
 सेवदास १३ १४ १७ १८ १२४
 सेवर्ग ८८
 सेवमकत ४
 सेकडि १ १
 सोम ७१ १ १
 सोम (शत्रुघ्निय) ४३
 सोमजी २३
 सोम ४
 सोमजी २४ ७२
 सोमदास १२
 सोम्यजामय मुनि १२८, १३ १२७
 १९

हु

हुबलत हुबलतजी ४५, ७५
 हुनुमान घर्ग (चौमु जिवाली) १२२ १२३
 हुबीव ६६
 हुतालो ७५
 हुदस २६, २७
 हुदेव स्वामी १५७
 हुदकनराज प्रोहित (सिवाङ्ग) ११४
 हरिचरनहि चोदाम १२३

हरिदास १ ४ ५ १ १४ ३ ३८,
 ६ ६५, ६७ ७ १ ६
 हरिदास निरञ्जनी ७ ८
 हरिनारायणजी पुरोहित बी ए विद्या
 सुवर्ण ८६ ८२ १ ८ १२१ १२२,
 १५

हरिचंस ८८
 हरिरामदास ५७
 निरञ्जनी (वीरबाभिया)

१ ८ १४८

हरिप्यासनेव ललित १३१
 हरिचम्पल ५४
 हरिचिदास ६३
 हरिचण्ड ६३
 हरिस्यङ्ग हरिसिङ्ग ५२ ६४
 हरिसेवकविप भुङ्गारोपनामक ८६
 हरेकम्पमित्र (अपतिहोपनामविपनाम) ८७
 हरोव १ ६
 हन्दीपाव ४५, ७५
 हितकारो ६४
 हिमय १ ६
 हीरा १ ५
 हीराचन्द कातजी १ ७
 हुकमचन्द पिडिया हुकमीचन्द पिडिया
 ११२ ११६
 हुसेन हुसनदास ६७ ६८
 हुदयराम ५७
 हुपीकल ४१
 हुतल १ १ १

ह

होमदास अरवदासमचन्द्रमज १४६

ह

हिलोचन २३ ३६ ७२

ह

हामिलोक २५, ४२ ७१ १ ६

हामदास १५६

हामचलोदेवी यागदय ६६

हामाचली १५८

हामाग्र अरवती १४५

राजस्थान पुरातन ग्रन्थ-माला

प्रधान सम्पादक—पद्मधो मुनि त्रिनयित्रय पुरातत्त्वाचार्य

प्रकाशित ग्रन्थ

१ सस्कृत

- १ प्रभाषर्षद्वरी साहित्यचूडामणि सर्वदेशचार्यकृत सम्पादक—मोनासाय्यायकसी पं
पद्माक्षिरामधारात्री रिवाकावर । मूल्य—१ ०
- २ महराजराजन, महाराजा तवाईजयसिंह-कारित । सम्पादक—स्व पं कशरनाथ
ज्योतिषिद्वि, जयपुर । मूल्य—१ ७५
- ३ महविष्णुसर्वभक्तम् इव पं यमुमुक्त घोषप्रणीत सम्पादक—म न पं भिरिपरधर्मा
चनुवरी । मूल्य—१ ७५
- ४ लक्ष्मणसहस्रनामसंस्कृत सम्पादक—डॉ जितेन्द्र जेटली एम ए पी-एच डी., मूल्य—१ ०
- ५ कारकल्लंभाचले पं रघुसुन्दरीकृत सम्पादक—डॉ हरिप्रसाद धारत्री एम ए
पी-एच डी । मूल्य—१ ७५
- ६ कृतिरीतिका मोनिरूपणसंस्कृत सम्पादक—स्व पं पुष्पलालमधर्मा चनुवरी साहित्याचार्य ।
मूल्य—२
- ७ लक्ष्मणसहस्रनामसंस्कृत सम्पादक—डॉ हरिप्रसाद धारत्री एम ए, पी-एच. डी ।
मूल्य—२ ०
- ८ कुम्भसोवि कवि लालनाथविरचित सम्पादिका—डॉ प्रियवाना धाह एम ए.,
पी-एच डी., डी मिट् । मूल्य—१ ७५
- ९ मूलसंस्कृत लक्ष्मणसंस्कृत सम्पादिका—डॉ प्रियवाना धाह एम ए., पी-एच डी
डी मिट् । मूल्य—१ ७५
- १० मृत्प्राप्तायवली श्रीहर्षकविरचित सम्पादिका—डॉ प्रियवाना धाह एम ए.,
पी-एच डी., मिट् । मूल्य—२ ७५
- ११ राजविमोद महाकाव्य महाकवि जयराजप्रणीत सम्पादक—पं श्रीवीरपालनारायण
बहुरा एम ए उपसम्पादक राजस्थान प्राध्यापिका प्रतिष्ठान जोधपुर । मूल्य—२ २५
- १२ लक्ष्मणसहस्रनामसंस्कृत महाकाव्य मद्रुलसमीकरविरचित सम्पादक—केसवराय कादीराम धारत्री
मूल्य—३ ५
- १३ मूलसंस्कृत (प्रथम भाग) महाराणा कुम्भकर्णकृत सम्पादक—प्रो रसिकलाल धोट-
लाल वारिक तथा डॉ प्रियवाना धाह एम ए पी-एच डी., डी मिट् । मूल्य—३ ७५
- १४ लक्ष्मणसहस्रनामसंस्कृत महाकाव्य महाराणा कुम्भकर्णकृत सम्पादक—पुनरुत्पादक श्रीत्रिनयित्रयमुनि
सम्पादक संचालक राजस्थान प्राध्यापिका प्रतिष्ठान जोधपुर । मूल्य—४ ७५
- १५ दुर्गापूजास्तोत्र म न पं दुर्गाप्रसादद्विवेकिकृत सम्पादक—पं श्रीपद्मावर द्विवेदी
साहित्याचार्य । मूल्य—४ ५५
- १६ लक्ष्मणसहस्रनामसंस्कृत महाकाव्य लालनाथविरचित सम्पादक—पं श्रीवीरपालनारायण बहुरा
एम ए उप-संचालक राजस्थान प्राध्यापिका प्रतिष्ठान जोधपुर । इन्हीं कविवर की
ध्वर कृति श्रीकृष्णजीलामृतकवित् । मूल्य—१ ५
- १७ ईश्वरविनायकसंस्कृत महाकाव्य कविकलाविधि श्रीकृष्णसहस्रकविरचित सम्पादक—मद्रु श्रीमन्मूला
नाथ धारत्री साहित्याचार्य जयपुर । मूल्य—११ ५

- २ त्रिवुराधारसोमप्रसन्न वर्षाधार्यप्रणीत सम्पादन-मुनि धीविनविजय ।
 ३ कदम्बामृतपत्रा भद्रु सामरस्यरविनिमित्त सप्ता -मुनि धीविनविजय ।
 ४ बालमिन्द्राध्याकरण ठक्कुर सुशामनिहरचित सप्ता-मुनि धीविनविजय ।
 ५ पराधरसनमनुषा १० हृष्टनिभविचित सप्ता-मुनि धीविनविजय ।
 ६ वसन्तविमल चामु, प्रजातकृत सप्ता-भी एम सी मोरी ।
 ७ समोपायान प्रजातकृत सप्ता -भी बी जे साहेकर ।
 ८ जगद्व्याकरण आचार्य चन्द्रबामिनिचित सप्ता -भी बी डी. रोणी ।
 ९ कृतज्ञानिसमुच्चय कविबिरहानुचित, सप्ता -भी एच डी. बेनणकर ।
 १० कविचपल प्रजातकृत " "
 ११ स्वर्णमुद्रक कविस्वर्णरचित " "
 १२ प्राहृतानन्द रघुनाथकविचित सप्ता -मुनि धी विनविजय ।
 १३ कविकोस्तुत्र प रघुनाथरचित " भी एम एम मोरी ।
 १४ कृतज्ञानिकोश भाग २, महाराष्ट्र कृष्णप्रणीत सप्ता-डॉ. प्रियवाना पाह ।
 १५ इन्द्रप्रसन्नसप्ता सप्ता-डॉ भीरवर चर्मा ।
 १६ हृमोरमहाकाव्यम् नवपद्यनुरिक्त सप्ता -मुनि धीविनविजयकी ।
 १७ रत्नचरीकावि ठक्कुर चैकरचित " "
 १८ स्तुतिभद्रकावि सप्ता -डॉ पारमायम जाजोदिया ।
 १९ वातवदता, मुकामुक्त सप्ता-डॉ जयराम मोहनलाल सुवप ।
 २० पदसचरादिपञ्चकपुष्पाव्यासि " १० प्रमत्तलाल मोहनलाल
 २१ भुवनदीपक भावनाधार्यकृत सप्ता-१० श्रीपुष्पोत्तमभट्ट ।

राजस्थानी और हिन्दी

- २२ मुद्रा नैचलोरी कपल, भाग २ मुद्रा नैचलोरी सप्ता-भीबरीप्रसाद साकरिया ।
 २३ पोष बाबल कविणी चन्द्रनई, कवि हैमरत्नकृत भीरवरचित घटनागर ।
 २४ राजस्थानमें उत्कृत साहित्यकी शोध एस आर. माण्डारकर, हिन्दीपनुबावक-
 भीरवरचित विनयी ।
 २५ राजोदारी संसाधनी सप्ता -मुनि धीविनविजय ।
 २६ कवि राजस्थानी भाषासाहित्यप्रणाली सप्ता-मुनिधीविनविजय ।
 २७ मीरा-मुद्रु-पराकली एवं नुरोहित इन्द्रियमण्डली विद्याभूषण द्वार संकलित
 सप्ता -मुनि धीविनविजय ।
 २८ राजस्थानी साहित्यसंग्रह भाग ३ संपादक-भीमस्मीनाथमल मोस्वामी ।
 २९ सूरजप्रकाश कविया करलीचालकृत सप्ता-भीबीवायम मल्लय ।
 ३० विद्याभूषणप्रणाली सप्ता-भीमोस्वामीनाथमल बहुप घोर भीमस्मीनाथमल
 मोस्वामी ।
 ३१ महारम बूबीनरेण राजराजा बुचसिंह हाहाकृत सप्ता -भीरामप्रसाद राणी ।

विशेष-पुस्तक-विक्रयार्थों को २५% कमीशन दिया जाता है ।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

(Rajasthan Oriental Research Institute)

जोधपुर

उद्देश्य

- १ राजस्थान में और अन्यत्र भारतीय संस्कृति के आधारभूत संस्कृत प्राकृत मगध सह राजस्थानी हिन्दी व अन्य भाषाओं में लिखित प्राचीन ग्रन्थों की खोज करना तथा उन्हें प्रकाश में लाना ।
- २ प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों का संग्रह कर उनके संरक्षण की व्यवस्था करना और उपयोगी ग्रन्थों को सम्बन्धित विद्वानों से सम्पादित करा कर उनके प्रकाशन की व्यवस्था करना ।
- ३ साधारणतः भारतीय एवं मुख्यतः संस्कृत व प्राचीन राजस्थानी के अध्ययन अन्वेषण संशोधन हेतु अत्यावश्यक उत्तम प्रकार का सन्दर्भ पुस्तक भण्डार (मुद्रित ग्रन्थामय) स्थापित करना और उसमें देश विदेश में मुद्रित विविध विषयक अमूल्य-दुर्लभ सभी ग्रन्थों का यथासम्भव संग्रह करना ।
- ४ संगृहीत सामग्री से शोधकर्ता अभ्येता विद्वानों को उनके अध्ययन और अनुसन्धान में सहायता पहुँचाना ।
- ५ राजस्थान के लोक जीवन पर प्रकाश डालने वाले विविध विषयक लोक-गीत सांप्रदायिक मन्त्र पौराणिक भक्ति साहित्य एवं सामाजिक संस्कार धार्मिक व्यवहार तथा लौकिक व्यापार-विपार आदि से सम्बन्धित सभी प्रकार की सामग्री की खोज संग्रह संरक्षण एवं प्रकाशन करने की व्यवस्था करना ।



